॥ श्रीजिनेश्वरदेवाय नमः ॥

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी कृत

जिनज्ञान दर्पण।

प्रथम भाग।

लेखक—

लाडनूं निवासी श्रावक

महालचन्द बयेद।

प्रकाशक—

भैरुंदान चोपड़ा।

गंगाशहर (बीकानेर)।

कलकत्ता,

२, पोर्च्युगीज चार्च ष्ट्रीटके 'ओसवाल प्रेस' में

बाबू महालचन्द बयेद

द्वारा मुद्रित।

द्वितीयावृत्ति २५००] [विना मूल्य।

पुस्तक मिलनेका पता—

भैरूंदान चोपड़ा।

मु० गङ्गाशहर।

जिला बीकानेर।

विषय-सूची।

निवेदन

प्रिय वाचक वृन्दो ! यह जिनज्ञान दर्पण प्रथम वार १९७० सालमें २००० प्रतियां छपी थी वह कुछ ही महीनों में सब चट चुकी । जिस के वाद लोगों की बहुत माग रहनेके कारण इसकी द्वितीयावृत्ति छपाने की वावू भैरुदान जी चोपड़े की कई वर्षोसे पूर्ण इच्छा थी और इसके लिये वावू ईशर चन्दजी कई दफे इसका भार मुझे लेनेको कहा किन्तु उस समय मेरा एक जगह पांच च्यार महीना रहना निश्चित न होने के कारण इसका भार न ले सका । इस वर्ष जव मैंने खुद छापेखाने का कार्य शुरु किया तव वावू ईशरचन्दजी के कहनेसे यह कार्य मैंने सहर्ष स्वीकार किया । परन्तु नया काम होने के कारण अन्यान्य प्रेस सम्बन्धी सर्व कार्योंका वन्दोवस्त और निरीक्षण करना इत्यादि झंझटों के कारण प्रूफ संशोधन करनेका अवकाश कम मिलने के कारण पूर्ण रूपसे प्रूफ न देख सका । इस पुस्तकके तय्यार करने में भरसक सावधानीसे काम लिया गया है तथापि भूल करना मनुष्यका स्वभाव

भूल होना क्या आश्चर्य है ? यदि प्रमाद वश या मेरी अल्पज्ञताके कारण कुछ भूल चूक या कमी रह गई हों तो उदार हृदय पाठक मुझे क्षमा करें। मैंने यथावकाश इस पुस्तक को छपने बाद पढ लिया है। मेरी नजरमें जहां २ भूल दिखाई पडी वहीं वहींसे उनको चुन चुन कर शुद्धाशुद्ध पत्र छपा दिया है। विज्ञ पाठक शुद्धाशुद्ध पत्रसे मिला कर अपनी अपनी पुस्तकोंको शुद्ध करले और इस कष्टके लिये मुझे क्षमा प्रदान करें। भूलें रहने का प्रधान कारण तो यह है कि छापेखानेका काम नया होनेके सबब कई तरहके झंझटोंके कारण प्रूफ देखने का समय कम मिला। सभव है कि छपते समय भी कुछ अक्षर और मात्रायें टूट गई हो। जो भूलें पाठको की नजर तले आवें वह मुझे सूचित कर दें। इस कृपाके लिये मैं उनका चिर-कृतज्ञ रहूंगा। और तृतीयावृत्तिमें हठ त्याग कर उन भूलोंको सुधार दूंगा। यदि जिनेश्वर देवके वचनोंके विरुद्ध कुछ छप गया हो तो मुझे मिच्छामि दुक्कड।

आपका हितेच्छु—

महालचन्द बयेद।

॥ गजल ॥

जिनेश्वर धर्म सारा है ।
मेरे प्राणों से प्यारा है ॥
जिसका ध्यान धर भाई ।
श्री जिनराज फरमाई ॥
जिससे होत सुखदाई ।
इसीसे दिल हमारा है ॥ जिने ॥१॥
जिनेश्वर नाम जो गावे ।
कि भव से पार हो जावे ॥
जनम को फेर ना पावे ।
होय भवसिन्धु पारा है ॥ जिने ॥२॥
ऐसे जिनराज प्यारे हैं ।
जिन्हों ने भक्त तारे हैं ॥
जिन्होंने कर्म मारे हैं ।
उन्हीं का मो आधारा है ॥ जिने ॥३॥
विमुख जो धर्म से होवे ।
पकड़ शिर अन्त में रोवे ॥
जिनेश्वर धर्म को खोवे ।
जिन्होंको नर्क प्यारा है ॥ जिने ॥४॥

नहीं नर भव जनम हारे ।
जिनेश्वर धर्म जो धारे ॥
वोही यम फांशको टारे ।
महालचंद दास थारा है ॥ जिने ॥५॥

दोहा । चौबीस जिन प्रणमो करी । बलि भिच्चू गणिराज ॥ प्रणम्यांथी शिव सुख लहै । पामै भवोदधि पाज ॥ १ ॥ पंचम आरे अवतरया । दान दया दीपाय । शासण नन्दण बन समो । दिन २ तेज सवाय ॥ २ ॥ बसुपट स्वाम कालुगणि । साहस जेम जिणन्द ॥ षटमत षट खण्ड माझवा । नवलज नाह नरिन्द ॥ ३ ॥ तेरो शरण लई प्रभु । "जिनज्ञानदर्पण" ताज ॥ करी प्रगट पढ़वा भणी । भव्य जीवों हित काज ॥ ४ ॥ पामे गुरु पसायथी । समकित रत्न सुजोय ॥ महालु कहै नित्य सेवियां । मन वांछित फल होय ॥

श्रीजिनायनमः।

अथ

॥ श्रीचोवीसजिनस्तुतिप्रारम्भः ॥

दोहा ॐ नमः अरिहंत अतनु। आचार्य उव झाय ॥ मुनि पंच परमेष्टिए ॐकारै मांहि ॥ १ ॥ वलि प्रणमुं गुणवंत गुरु। भिक्षु भरत मझार ॥ दान दया न्याय छाणनें। सीधो मारग सार ॥ २ ॥ भारी मालपट भलकता। तीजै पट ऋषिराय ॥ प्रणमु मन वच कायकरी पांचुं अंग नमाय ॥ ३ ॥ इम सिद्ध साधु प्रणमी करी। ऋषभादिक चौवीस ॥ स्तवन करुं प्रमोद करी। जय जश कर जगदीश ॥४॥ मल्लिनेमए दोय जिन। पाणीग्रहण न कीध ॥ शेष वावीसजिनेश्वरु रमण छांड़ व्रत लीध ॥५॥ वासुपूज्य मल्लिनेम जिन। पारस अनें वर्द्धमान ॥ कुमर पदे अरु प्रथम वय। धार्‍यो चरण निधान ॥ ६ ॥ छत्रपति उगणीस जिन। व्रत तीजी वय सार ॥ उत्कृष्ट आयु जिण समय तसु त्रिण भाग विचार ॥ ७ ॥ वीर समय उत्कृष्ट स्थिति। वर्ष सवा सय होय। भाग तीन कीजें तसु। एतानुं वय जोय ॥ ८ ॥ इमसगलें उत्कृष्ट स्थिति। त्रिणभाग वय तीन ॥ अंतिम

वय उगणीस जिन । धुर वय पंच सुचीन ॥ ९ ॥ श्वेत
वरण चंद सुबिधि जिन । पदम बासु पूज्य लाल ॥ मुनि
सुव्रत रिठनेम प्रभु । कृष्ण बरण सुविशाल ॥ १० ॥
मल्लिनाथ फुन पार्श्व प्रभु । नील बरण वर अंग ॥
षोड़स शेष जिनेश तनु । सोवन बरण सुचंग ॥ ११ ॥
श्रेयांस मल्लि मुनिसुव्रत जिन । नेम पार्श्व जगदीश ॥
प्रथम पहर दीक्षाग्रही पिछले पोहर उन्नीस ॥ १२ ॥
सुमति जीम दीक्षाग्रही । अठम भक्त मल्लि पास ॥ छठ
भक्त जिन बीस वर । बासुपूज्य उपवास ॥ १३ ॥ ऋषभ
अष्टापद शिवगमन । बीर पावापुरी दीस ॥ नेम गिरना
रे बासु चंपा । शिखर समेत सुबीस ॥ १४ ॥ ऋषभ
संथारे शिव गमन । चउदश भक्त उदार ॥ चरम छठ
अणसण पवर बावीस मास संथार ॥ १५ ॥ ऋषभ
बीर अरु नेम जिन । पल्यंक आसण शिव पेख ॥ शेष
इकवीश जिनेश्वरू काउसग मुद्रा देख ॥ १६ ॥ ज़िन
चोवीस तणा सुगुण । रचियै बचन रसाल ॥ ध्यान
सुधा वर सार रस जय जश करण बिशाल ॥ १७ ॥

प्रथम ऋषभजिनस्तवन ।

(एसौ गुरु किम पावियै एदेशी)

वन्दु बेकर जोड़ने । जुग आदि जिनन्दा ॥ कर्म
रिपु गज उपरै । मृगराज मुनिन्दा ॥ प्रणमूं प्रथम

जिनन्दनं जय जय जिन चन्दा ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
अनुकूल प्रतिकूल सम सही । तप विविध तपिन्दा ॥
चेतन तनु भिन्न लेखवी । ध्यान शुक्ल ध्यावंदा ॥ २ ॥
पुद्गल सुख अरि पेखिया । दुःख हेतु भयाला ॥ विरक्त
चित विरम्यो इसो । जाण्या प्रत्यक्ष जाला ॥ ३ ॥
संवेग सरवर झूलतां । उपशम रस लीना ॥ निन्दा
स्तुति सुख दुःखे । सम भाव सुचीना ॥ ४ ॥ वांसी
चंदन सम पणे । थिर चित जिन ध्याया ॥ इम तन
सार तजी करी । प्रभु केवल पाया ॥ ५ ॥ हुं वलिहारी
तांहरी वाह वाह जिन राया ॥ ३ ॥ उवा दशा किण दिन
आवसी । मुझ मन उमाया ॥ ६ ॥ उगणीसै सुदि भाद्रवे
दशमी दीतवारं ॥ ऋषभदेव स्तवेकरी । हुओ हर्ष
अपारं ॥ ७ ॥

श्री अजितजिन स्तवन

(म्हारो प्रिय तुन पट पाडी पछेवी)

म्हो प्रभु अजित जिनेश्वर आपरो । ध्याउं ध्यान
हमेश हो ॥ म्हो प्रभु शरण शरण तुंही सही ।
मेटण सकल कलेश हो ॥ म्हो प्रभु तुम ही दायक शिव
पंथना ॥ १ ॥ म्हो प्रभु उपशम रस भरी आपरी ।
वाणी सरस विशाल हो ॥ म्हो प्रभु सुगत निसरणी

महा मनोहरू। सुण्यां मिटै भ्रमजाल हो ॥ २ ॥ अहोप्रभु उभय बंधण आप आखिया रागद्वेष विकरालहो ॥ अहो प्रभु हेतुए नरक निगोदना । राच्या मूरख बाल हो ॥ ३ ॥ अहो प्रभु रमणी राखसणी समी कही । विष बेलि मोह जाल हो ॥ अहो प्रभु काम नें भोग किम्पाक सा । दाख्या दीन दयाल हो ॥ ४ ॥ अहो प्रभु विविध उपदेश देई करी । तें तास्या नर नार हो ॥ अहो प्रभु भव सिंधु पोत तुंही मही । तुंही जगत् आधार हो ॥ ५ ॥ अहो प्रभु शरण आयो तुज साहिबा । बस रह्या हीया मांहि हो ॥ अहो प्रभु आगम वयण अंगी करी । रह्यो ध्यान तुज ध्याय हो ॥ ६ ॥ अहो प्रभु सम्वत उगणीसै नें भाद्रवै । दशमी आदित्यवार हो । अहो प्रभु आप तणा गुण गाविया बर्त्याजय जयकार हो ॥ ७ ॥

श्री संभव जिनस्तवन ।

(हुं बलिहारी हो जादवां एदेशी)

संभव साहिब समरीये । धास्यो हो जिण निरमल कै ॥ इक पुग्द्ल दृष्टि थापनें ॥ कीधो है मन मरु समान कै ॥ संभव साहिब समरिये ॥ १ ॥ ए आंकणी । तन चंचलता मेटनें हुआहे जगथी उदासीन

के ॥ धर्म शुक्ल थिर चित्त धरै । उपशम रस में
होय रह्या लीन के । सं० ॥ २ ॥ सुखइन्द्रादिकनां
मह। जाणया हे प्रभु अनित्य असार के ॥ भोग भयंकर
कटुक फल । देख्या हे दुर्गति दातार के ॥ सं० ॥
॥ ३ ॥ सुधा संवेग रसे भर्या । पेख्याहे पुद्गल मोह
पाशके ॥ अरुचि अनादर आण नें आत्मध्यानें करता
विलास कै । सं० ॥ ४ ॥ संग छांड मन वशकरी ।
इन्द्रिय दमन करी दुर्दंत के ॥ विविध तपे करी
स्वामजी । घाती कर्मनो कीधो अंत कै ॥ सं ॥ ५ ॥
हुं तुज शरणे आवियो। कर्म विदारन तुं प्रभु वीर के ॥
तें तन मन वच वश किया । दु:कर करणी करण
महाधीर के ॥ सं० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसें भाद्रवें ।
सुदि इग्यारस आण विनोद के ॥ संभव साहिब सम-
रिया । पाम्यो छे मन अधिक प्रमोद के ॥ सं० ॥७॥

श्री अभिनन्दन जिनस्तवन ।

(म्हारी चन्द्रजी री पुजा मंजमनं म्हार पदेशी)

तीर्थंकर हो चौथा जग भाण छांडि गृहवास
फरी मति निरमली । विषय विटम्बण हो तजिया
विष फल जाण । अभिनंदन वान्दुं नित्य मनरली ॥१॥
ए धांकणी । दु:कर करणी रो कीधी आप दयाल ॥

ध्यान शुधा रस सम दम मन गली । संग त्याग्यो हो जाणी माया जाल ॥ अ० ॥ २ ॥ वीर रसे करी हो कीधी तपस्या विशाल । अनित्य अशरण भावन अशुभ निरदली ॥ जग झूठो हो जाण्यो आप कृपाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ आत्म मंत्री हो सुख दाता सम परिणाम ॥ एहीज अमित्र अशुभ भावे कलकली ॥ एहवी भावन हो भाया जिन गुण धाम ॥ अ० ॥ ४ ॥ लीन संवेगे हो ध्याया शुक्ल ध्यान ॥ चायक श्रेणी चढी हुआ केवली ॥ प्रभु पाम्या हो निरावरण सुज्ञान ॥ अ० ॥ ५ ॥ उपशम रस भरी हो वागरी प्रभु वाण ॥ तन मन प्रेम पाया जन सांभली ॥ तुम वच धारी हो पाम्या परम कल्याण ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिन अभिनंदन हो गाया तन मन प्यार ॥ संवत उगणीसैनें भाद्रवे अघदली ॥ सुदि इग्यारस हो हुओ हर्ष अपार ॥ अ० ॥ ७ ॥

श्री सुमति जिनस्तवन ।

(मुरख जीवडा रे गाफल मत रहे)

सुमतिजिनेश्वर साहेब शोभता ॥ सुमति करण संसार ॥ सुमति जप्यांथी सुमति वधे घणी ॥ सुमति सुमति दातार ॥ सु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ध्यान

सुधारस निर्मल ध्यायने ॥ पाम्या केवल नाण ॥ वाण सरस वर जन बहु तारिया ॥ तिमिर हरण जग भाण ॥ सु० ॥ २ ॥ फटिक सिंहासण जिनजी फावता ॥ तरु आशोक उदार ॥ छत्र चामर भामंडल झलकतो ॥ सुर दुंदुभि झिणकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पुप्फ विष्टि वर सुर ध्वनी दीपती ॥ साहिब जग सिणगार ॥ अनंत ज्ञान दर्शन सुख बल घणुं ॥ ए द्वादश गुण श्रीकार ॥ सु० ॥ ४ ॥ वाणी अमी सम उपशम रस भरी ॥ दुर्गति रून्ध कषाय ॥ शिव सुखना अरि शब्दादिक कह्या ॥ जग तारक जिन राय ॥ सु० ॥ ५ ॥ अंतर जामीरे शरणो आपरे ॥ हुं आयो अवधार ॥ जाप तुमारोरे निश दिन संभरु ॥ शरणागत सुखकार ॥ सु० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसैरे सुदि पच्च भाद्रवे ॥ बारस मंगलवार ॥ सुमतिजिणेश्वर तन मनस्युं रख्या ॥ आनन्द उपना अपार ॥ सु ॥ ७ ॥

पद्म जिनस्तवन ।

(झिन्दोनी देशी ॐ सुणसर्ण जगत्स्वरे पदेशी)

निर्लेप पद्म जिसा प्रभु ॥ पद्म प्रभु पीछाण ॥ संय-म लीधो तिण नरे ॥ पाया चौवीनाण ॥ पद्म प्रभु नित्य समरिये ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ध्यान शुक्ल प्रभु

ध्यान शुधा रस सम दम मन गली । संग त्याग्यो हो जाणी माया जाल ॥ अ० ॥ २ ॥ वीर रसे करी हो कीधी तपस्या विशाल । अनित्य अशरण भावन अशुभ निरदली ॥ जग झूठो हो जाण्यो आप कृपाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ आत्म मंत्री हो सुख दाता सम परिणाम ॥ एहीज अमित्र अशुभ भावे कलकली ॥ एहवी भावन हो भाया जिन गुण धाम ॥ अ० ॥ ४ ॥ लीन संवेगे हो ध्याया शुक्ल ध्यान ॥ क्षायक श्रेणी चढी हुआ केवली ॥ प्रभु पाम्या हो निरावरण सुज्ञान ॥ अ० ॥ ५ ॥ उपशम रस भरी हो वागरी प्रभु वाण ॥ तन मन प्रेम पाया जन सांभली ॥ तुम वच धारी हो पाम्या परम कल्याण ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिन अभिनंदन हो गाया तन मन प्यार ॥ संवत उगणीसैनें भाद्रवे अघदली ॥ सुदि इग्यारस हो हुओ हर्ष अपार ॥ अ० ॥ ७ ॥

श्री सुमति जिनस्तवन ।

(मुरख जीवडा रे गाफल मत रहे)

सुमतिजिनेश्वर साहेब शोभता ॥ सुमति करण संसार ॥ सुमति जप्यांथी सुमति वधै घणी ॥ सुमति सुमति दातार ॥ सु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ध्यान

सुधारस निर्मल ध्यायने ॥ पाम्या केवल नाण ॥ वाण सरस वर जन बहु तारिया ॥ तिमिर हरण जग भाण ॥ सु० ॥ २ ॥ फटिक सिंहासण जिनजी फावता ॥ तरु आशोक उदार ॥ छत्र चामर भामंडल भलकतो ॥ सुर दुंदुभि भिणकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पुप्प विष्टि वर सुर ध्वनी दीपती ॥ साहिब जग सिणगार ॥ अनंत ज्ञान दर्शन सुख बल घणुं ॥ ए द्वादश गुण श्रीकार ॥ सु० ॥ ४ ॥ वाणी अमी सम उपशम रस भरी ॥ दुर्गति मूल कषाय ॥ शिव सुखना अरि शब्दादिक कह्या ॥ जग तारक जिन राय ॥ सु० ॥ ५ ॥ अंतर जामीरे शरणै आपरे ॥ हुं आयो अवधार ॥ जाप तुमारोरे निश दिन संभरु ॥ शरणागत सुखकार ॥ सु० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसैरे सुदि पक्ष भाद्रवे ॥ बारस मंगलवार ॥ सुमतिजिणेश्वर तन मनस्यूं रच्या ॥ आनन्द उपनो अपार ॥ सु ॥ ७ ॥

पद्म जिनस्तवन ।

(जिन्दवेरी देशी छे सुणभगते भगवन्तके एदेशी)

निर्लेप पद्म जिसा प्रभु ॥ पद्म प्रभु पीछाण २ संय-म लीधो तिण समै ॥ पाया चोथोनाण ॥ पद्म प्रभु नित्य समरिये ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ध्यान शुक्ल प्रभु

ध्यायनें ॥ पाया केवल सोयर दीन दयाल तणी दिशा ॥ कहणी नावे कोय ॥ पद्म० ॥ २ ॥ सम दम उपशम रस भरी ॥ प्रभु आपरी वाणि ॥ त्रिभुवन तिलक तुंही सही ॥ तुंही जनक समान ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ तुं प्रभु कल्पतरु समो ॥ तुं चिन्तामणि जोय २ ॥ समरण करतां आपरो ॥ मन बंछित होय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥ सुखदायक सहु जग भणी ॥ तुंही दीन दयाल २ शरणे आयो तुज साहिबा ॥ तुंही परम कृपाल ॥ पद्म० ॥ ५ ॥ गुणगातां मन गहगहे ॥ सुख संपति जाण २ ॥ विघ्न मिटै समरण कियां ॥ पामै परम कल्याण ॥ पद्म० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसै नें भाद्रवे ॥ सुदिवार सदेख ॥ पद्म प्रभु रच्या लाडनूं ॥ हुओ हर्ष विशेष ॥ पद्म० ॥ ७ ॥

श्री सुपास जिन स्तवन ।

(कृपण दीन अनाथए एदेशी)

सुपास सातमां जिणंद ए ॥ ज्यांनें सेवे सुर नर वृंद ए ॥ सेवक पूरण आशए ॥ भजिये नित्य स्वामिसुपासए ॥ १ ॥ आंकणी ॥ जन प्रतिबोधण कामए ॥ प्रभु वागरै वाण अमामए ॥ संसार स्युं हुवै उदासए ॥ भ० ॥ २ ॥ पामै काम भोगथी उद्वेगए ॥ वलि उपजे परम संवेगए ॥ एहवा

तुम वच सरस विलासए ॥ भ० ॥ ३ ॥ घणी मीठी चक्रीनी खीर ए ॥ वलिखीर समुद्रनो नीर ए॥ एहथी तुम वच अधिक विमासए ॥ भ० ॥४॥ सांभलनें जन वृंद ए ॥ रोम रोम में पामे आनंद ए ॥ ज्यांरी मिटै नरकादिक त्रास ए ॥ भ०॥५॥ तुं प्रभु दीन दयाल ए ॥ तुंही अश रण शरण निहालए ॥ हुं छुं तुमारो दासए॥ भ० ॥६॥ संवत उगणीसै सोयए ॥ भाद्रवा सूदि तेरस जोय ए ॥ पहुंची मननी आश ए ॥ भ० ॥७॥

श्री चंद्रप्रभजिन स्तवन ।

(शिवपुर नगर सुहामणो एदेशी)

हो प्रभु चंद जिनेश्वर चंद जिस्या ॥ वाणी शीतल चंद सी न्हालहो ॥ प्रभु उपशम रस जन सांभलै ॥ मिटै कर्म भ्रम मोह जालहो ॥ प्रभु ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ हो प्रभु सूरत मुद्रा सोहनी ॥ बारु रूप अनूप विशाल हो ॥ प्रभु इंद्र शचि जिन निरखती ॥ तेतो तृप्त न होवे निहालहो ॥ प्रभु० ॥२॥ अहो वीतराग प्रभु तूं सही ॥ तुम ध्यान ध्यावे चित्त रोकहो ॥ प्रभु तुम तुल्य ते हुवे ध्यानस्युं ॥ मन पाया परम संतोष हो॥ प्रभु० ॥३॥ हो प्रभु लीन पणै तुम ध्यावियां ॥ पामै इंद्रादिकनी ऋद्धि हो ॥ वले विविध भोग सुख संपदा ॥ लहे आमोसही

आदि लब्धिधहो ॥ ॥ प्रभु ॥ ४ ॥ होप्रभु नरेंद्र पद पामै सही ॥ चरण सहीत ध्यान तन मनहो ॥ प्रभुग्रह मिंद्र पद पावे वलि ॥ कियां निश्चल थारो भजनहो ॥ प्रभु० ॥५॥ होप्रभु शरण आयो तुज साहिबा ॥ तुम ध्यान धरू दिन रयनहो ॥ तुज मिलवा मुझ मन उमह्यो ॥ तुम शरणास्युं सुखचैनहो॥ प्रभु० ॥६॥ संवत उगणीसैनें भाद्रवे ॥ सुदि तेरसनें बुधवारहो ॥ प्रभु चंद्र जिनेश्वर समरिया ॥ हुओ आनंद हर्ष अपारहो ॥ प्रभु० ॥ ७॥

श्री सुविधि जिन स्तवन ।

(सोहीतेरापंथ पावै हो एदेशी)

सुविधि करी भजिये सदा ॥ सुविधि जिनेश्वर स्वामी हो ॥ पुष्पदंत्त नाम दूसरो ॥ प्रभु अंतरजामीहो ॥ सुविधि भजिये शिरनामीहो ॥१॥ ऐआंकणी ॥ श्वेत बरण प्रभु शोभता बारू बाण अमामीहो ॥ उपशम रस गुण आगलो ॥ मेटण भव भव खामीहो सु० ॥२॥ समवसरण विच फावता ॥ त्रिभुवन तिलक तमामीहो ॥ इंद्र थकी ओपै घणां ॥ शिवदायक स्वामीहो सु: ॥३॥ सुरेंद्र नरेंद्र चंद्र ते इंद्राणी अभिरामीहो ॥ निरख निरख धापै नहीं ऐहवो रूप अमामीहो सु० ॥ ४ ॥ मधु मकरंद तणीपरें

। सुर नर करत सलामी हो ॥ तोपिण राग व्यापै नहीं । जीत्यो मोह हरामीहो ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे जोधा जगमें घणा ॥ सिंघ साथि संग्रामीहो ॥ ते मन इंद्रिय वश करी ॥ जोड़ी केवल पामीहो ॥ सु० ॥६॥ उगणीसै पुनम भाद्रवी प्रणमु शिरनामीहो ॥ मनचिंतित वस्तु मिलै ॥ रटियां जिनस्वामीहो सु०॥ ७ ॥

श्री शीतलजिन स्तवन ।

(हुं देवा आइ ओलंभड़ो सासुजी एदेशी)

शीतलजिन शिवदायका ॥ साहिबजी ॥ शीतल चंद समान हो ॥ निस्नेही ॥ शीतल अमृत सारिखा ॥ साहिबजी ॥ तप्त मिटै तुम ध्यानहो ॥ निस्नेही ॥ सूरत थांरी मन बसी साहिबजी ॥१॥ बंदे निंदे तोभणी साहिबजी ॥ राग द्वेष नहीं तामहो ॥ निस्नेही ॥ मोह दावानल तें मेटियो ॥ साहिबजी ॥ गुणनिष्पन्न तुम नाम हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ २ ॥ नृत्य करै तुज आगलें साहिबजी ॥ इंद्राणी सुरनारहो ॥ निस्नेही ॥ राग भाव नहीं उपजे ॥ साहिबजी ॥ तेअंतर तप्त निवारहो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥३॥ क्रोध मान माया लोभए ॥ साहिबजी ॥ अग्निसुं अधिकी आगहो ॥ निस्नेही ॥ शुक्ल ध्यान रूप जलकरी ॥ साहिबजी ॥ थया श

लिभूत माहाभाग्यहो ।। निस्नेही ।। सू० ।।४।। इंद्रिय नोइंद्रिय आकरा ।। साहेबजी ।। दुर्जय ने दुर्दांतहो ।। निस्नेही ॥ तें जीता मन थिरकरी ।। साहेबजी ।। धरि उपशम चित शांतिहो ।। निस्नेही ।। सू० ।।५।। अंतरजामी आपरो ।। साहेबजी ।। ध्यान धरूं दिन रैन हो ।। निस्नेही ॥ उवाही दिशा कद आवसी ।। साहेबजी ।। होसी उत्कृष्टो चैनहो ।। निस्नेही ।। सू० ।।६।। उगणीसे पूनम भाद्रवी ।। साहेबजी ।। शीतल मिलवा काजहो ।। निस्नेही ।। शीतल जिनजीनें समरिया ।। साहेबजी ।। हियो शीतल हुओ आजहो ।। निस्नेही ।। सू० ।। ७ ।।

श्री श्रेयांसजिन स्तवन ।

(पुत्रवसुदेवनो एदेशी)

मोक्षमार्गश्रेयशोभता ।। धास्या स्वाम श्रेयांस उदाररे ।। जेजेश्रेय वस्तु संसारमें ।। ते ते आप करी अंगीकाररे ।। ते ते आपकरी अंगीकार श्रेयांस जिनेश्वरू प्रणमूं नित्य बेकर जोड़रे ।। १ ।। समिति गुप्ति दुःधर घणा ।। धर्म शुक्ल ध्यान उदाररे ।। एश्रेय वस्तु शिव दायनी ।। आप आदरी हर्ष अपाररे ॥ श्रे० ॥२॥ तन चंचलता मेटनें ।। पद्मासन आप बिराजरे ।। उत्कृष्टो ध्यान तणो कियो॥ आलम्बन श्रीजिनराजरे ।। श्रे० ।। ३ ।। इंद्रिय विषय

विकारथी ॥ नरकादिक रुलियो जीवरे ॥ किंपाक फलनी उपमा ॥ रहिये दूर थी दूर सदीवरे ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ संयम तप जप शीलए ॥ शिव साधन महा सुखकाररे ॥ अनित्य अशरण अनंतए ॥ ध्यायो निर्मल ध्यान उदाररे ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ स्त्रियादिक ना सङ्गते ॥ आलम्बन दुःख दातारे ॥ अशुद्ध आलम्बन छांड़ने ॥ धर्यो ध्यान आलम्बन साररे ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ शरणे आयो तुज साहिबा ॥ करुं बारंबार नमस्काररे ॥ उगणीसै पूनम भाद्रवे ॥ मुज वर्त्या जय जय काररे ॥ श्रे० ॥ ७ ॥

श्री वासुपूज्यजिन स्तवन ।

(इम जाप जपो श्रीनवकारं एदेशी)

द्वादशमा जिनवर भजिये ॥ राग द्वेष मच्छर माया तजिये ॥ प्रभु लालबरण तन छवि जाणी ॥ प्रभुवासुपूज्य भजले प्राणी ॥१॥ बनिता जाणी बैतरणी ॥ शिव सुंदर वरवा हूंस घणी ॥ काम भोग तज्या किंपाक जाणी ॥ प्र० ॥ २ ॥ अंजन मंजन स्युं अलगा ॥ वलि पुष्फ विलेपन नहीं विलगा ॥ कर्म काव्या ध्यान मुद्रा ठाणी ॥ प्र० ॥३॥ इंद्र थकी अधिका ओपे ॥ करुणागर कदेइ नहीं कोपे ॥ वर शाकर दूध जिसी बाणी ॥ प्र० ॥४॥ स्त्री स्नेह पाशा तुर्टता ॥ कह्या नरक निगोद तणा पंथा ॥ इह भव परभव

दुःखदाणी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ गज कुंभ दले मृगराज हणी ॥ पिण दोहिली निज आत्मा दमणी ॥ इम सुण बहु जीवचेल्या जाणी ॥ प्र० ॥६॥ भाद्रवी पूनम उगणीसे ॥ कर जोड़ नमूं वासुपूज्य इसो ॥ प्रभु गांतां रोम राय हुलसाणी ॥ प्र० ॥७॥

श्री विमलजिन स्तवन।

कांयनमांगाकांयनमांगाहोराणाजीमांगापूर्णप्रितवीजूं
(कांयनमांगाहो एदेशी)

शरणे तिहारे होविमलप्रभु ॥ सेवकनी अरदाश ॥ आयो शरण तिहारे हो ॥ विमल करण प्रभु विमलनाथजी ॥ विमल आप मल रहीत ॥ विमल ध्यान धरतां हुवे निर्मल ॥ तन मन लागी प्रीत ॥ साहेब शरणे तिहारे हो ॥ १ ॥ विमल ध्यान प्रभु आप ध्याया ॥ तिण सूं हुआ विमल जगदीश ॥ विमल ध्यान वलि जे कोइ ध्यासी ॥ होसी विमल सरीस ॥ सा० ॥२॥ विमल गृहवासे द्रव्य जिनंद्र था ॥ दीक्षा लियां भावे साध ॥ केवल उपना भावे जिनेश्वर ॥ भावे विमल आराध ॥ सा० ॥३॥ नाम स्थापना द्रव्य विमल थी कारज न सरेकोय ॥ भाव विमलथी सुधरे ॥ भाव जप्यां शिवहोय ॥ सा० ॥४॥ गुण गंभीर धीरतूं ॥ तूं मेटण जम त्रास ॥ सें तुम वयण आगम शिर धार्या ॥ तूं मुज पूरण आश ॥

सा० ॥ ५ ॥ तूंही कृपाल दयाल तूंसाहेब। शिवदा-
यक तूं जगनाथ ॥ निश्चल ध्यान करे तुज ओलख ॥
ते मिले तुज संघात ॥ सा० ॥३॥ अंतरजामी आप
उजागर ॥ मैं तुम शरणो लीध ॥ संवत उगणीसै
भाद्रवी पुंनम वंछितकार्य सिद्ध ॥ सा० ॥ ७ ॥

अनंत जिन स्तवन।

(पायो युगराजपद मुनि एदेशी)

अनंतनाम जिन चउदमारे ॥ द्रव्य चोथे गुणठांण
भलांजी कांई द्रव्य० ॥ भावे जिन हुवै तेरमेरे ॥ इतले
द्रव्य जिन जाण ॥ भलाजी कांइ इतलै द्रव्य जिन
जाण ॥ पायो पद जिनराजनुंरे ॥ शुद्ध ध्यान निरमल
ध्याय। भलां० पायोपद ॥ १ ॥ जिन चक्री सुर जुग-
लियारे ॥ वासूदेव बलदेव भलां० बा० ॥ एपंचम
गुण पावै नहींरे ॥ ए रीत अनादि स्वमेव भलां० ए० ॥
पा० ॥ २ ॥ संयम लीधो तिण समैरे ॥ आया सा-
तमें गुंणठाणभलां० आ० ॥ अंतरमुहूर्त्त तिहांर हीरे ॥
छठे बहुस्थिति जाण भलां० छ० ॥ पा० ॥ ३ ॥ आठमां
थी दोय श्रेणीछेरे ॥ उपशम खपक पिछाण भलां० उ०
उपशम जाय इग्यारमैरे ॥ मोह दबावतो जाण भलां०
मो० ॥ पा० ॥ ४ ॥ श्रेणी उपशम जिन ना लहैरे ॥ खपक-

श्रेणी धर खंत भ० ख० चारित्रमोह खपाव तांरे ॥ चढिया ध्यान अत्यंत भ० च० ॥ पा० ॥ ५ ॥ नवमें आदि संजलचिहुंरे ॥ अंतसमे इक लोभ भ० अं० ॥ दसमे सूक्ष्म मातवेरे ॥ सागार उपयोग शोभ भ० सा० ॥ पा० ॥६॥ एकादशमो उलंघनैरे ॥ बारमें मोह खपाय ॥ भ० बा० ॥ त्रिकर्म एक समै तोडतारे तेरमें केवल पाय॥ पा० ॥ ७ ॥ तीर्थ थाप योग रुंध नैरे ॥ चउदमा थी शिवपाय भ० च० ॥. उगणीसै पुनम भाद्रवेरे ॥ अनंत रच्या हरषाय भ० अ० ॥ पा० ॥ ८ ॥

॥ ओ स्तवन नीचे लिखे मूजब चालमें भी गायो जावे है ॥

अनंत नाम जिन चवदमां, जिनरायारे ॥ द्रव्यध चोथे गुण स्थान, स्वाम सुखदायारे ॥ भावे जिन हुवै तेरमें, जिनरायारे ॥ इतलै द्रव्य जिन जाण, स्वाम सुखदायारे ॥ १ ॥

धर्म जिन स्तवन ।

(भिक्षुपटभारीमालभलके एदेशी)

धर्म जिन धर्म तणा धोरी ॥ वटक मोहपाश ना-ख्या तोड़ी ॥ चरण धर्म आत्म स्युं जोड़ी अहोप्रभुधर्म

देव प्यारा ॥१॥ शुक्ल ध्यान अमृत रस लीना ॥ संवेग रसे करी जिन भीना ॥ प्याला प्रभु उपशमना पीना ॥ अ० ॥२॥ जाण्या शब्दादिक मोह जाला ॥ रमणि सुख किंपाक सम काला ॥ हेतु नरकादिक दुःख आला ॥ अ० ॥३॥ पुद्गल शिव अरि जाण्या स्वामी ॥ ध्यानथिर चित्त आत्म धामी ॥ जोड़ी युग केवलनी पामी ॥ अ० ॥ ४ ॥ थाप्या प्रभु च्यार तीरथ तायो ॥ आख्यो धर्म जिन आज्ञा मांयो ॥ आज्ञा बाहिर अधर्म दुःखदायो ॥ अ० ॥ ५ ॥ व्रतधर्म धर्मजिन आख्याता ॥ अविरत कही अधर्म दुखदाता ॥ सावद्य निरवद्य जु जुआ कह्या खाता ॥ अ० ॥६॥ बहु जन तार मुक्ति पाया ॥ उगणीसै आसू धुर दिन आया ॥ धर्मजिन रटवे सुख पाया ॥ अ० ॥७॥

श्रीशांतिजिनस्तवन।

हुं बलिहारी भीखणजी साधरी।

शांतिकरण प्रभु शांतिनाथजी ॥ शिव दायक सुखकंदकी ॥ बलिहारी हो शांतिजिणंदकी ॥ १ ॥ अमृत वाणी सुधासी अनुपम ॥ मेटण मिथ्या मंदकी ॥ ब० ॥२॥ कामभोग राग द्वेष कटुक फल ॥ विष बेलि मोह धंदकी ॥ ब० ॥३॥ राक्षसणी रमणी वेस-

रणी। पुतली अशुचि दुर्गंधकी ॥ व० ॥४॥ विविध उपदेश देइ जन तास्या ॥ हुं वारी जाउं विश्वानंदकी ॥ व० ॥५॥ परम दयाल गोवाल कृपानिधि ॥ तुज जप माला आनंदकी ॥ व० ॥ ६ ॥ सम्वत उगणीसै आसू वदि एकम ॥ शांति लता सुख कंदकी ॥ व० ॥७॥

श्रीकुंथुजिनस्तवन ।

बाल्होतो भावनारो भूखो ।

कुंथु जिनेश्वर करुणा सागर ॥ त्रिभुवन शिर टीकोरे ॥ प्रभुको समरण कर नीकोरे ॥ १ ॥ अद्भुत रूप अनूपम कुंथुजिन ॥ दर्शन जग पीयकोरे ॥ प्र० ॥ २ वाणी सुधा सम उपशम रसनी ॥ वालहो जग तीकोरे ॥ प्र० ॥३॥ अनुकंपा दोय श्रीजिन दाखी ॥ मर्म ओ समदृष्टीकोरे ॥ प्र० ॥४॥ असंयतीरो जीवणो बांछे ॥ ते सावद्य तहतीकोरे ॥ प्र० ॥५॥ निरवद्य करुणा करी जन तास्या ॥ धर्म ए जिनजीकोरे ॥ प्र० ॥६॥ सम्वत उंगणीसै आसू वदि एकम ॥ शरणो साहिबजीकोरे ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्रीअरजिनस्तवन

॥ देखो सहियां बनड़ोए नेमकुमार एदेशी ॥

अर जिन कर्म अरीनां हंता ॥ जगत उधारण जिनराज ॥ मोने प्यारा लागेछै जी ॥ अर जिनराज

॥ मोनेवाला लागैछै जी अर महाराज ॥ १ ॥ परिसह उपसर्ग रूप अरिहणा ॥ पाया केवल पाज मो० ॥२॥ नयण न धापे निरखतांजी ॥ इंद्राणी सुर राज ॥ मो० ॥३॥ वारूं रे जिनेस्वर रूप अनूपम ॥ तुं सुगुणा शिरताज ॥ मो० ॥४॥ वाणी विशाल दयाल पुरुषनी ॥ भूख तृषा जावे भाज ॥ मो० ॥५॥ शरणे आयो स्वामरेजी ॥ अविचल सुखनें काज मो० ॥६॥ उगणीसै आसू वदि एकम ॥ आनंद उपनो आज ॥ मो० ॥७॥

श्रीमल्लिजिनस्तवन

जय गणेश २ देवा तथा दीन दयाल जाण चरण ।

नील वर्ण मल्लिजिनेश्वर ॥ ध्यान निर्मल ध्यायो ॥ अलप काल मांहि प्रभु ॥ परमज्ञान पायो ॥ मल्लि जिनेश्वर नाम समर तरण शरणं आयो ॥ १ ॥ कल्प पुष्पमाल जेम ॥ सुंगध तन सुहायो ॥ सुर वधु वर नयण भ्रमर ॥ अधिक हि लिपटायो ॥म०॥२॥ स्व पर चक्र विविध विघ्न ॥ मिटत तुज पसायो ॥ सिंघ नाद थकी गजेंद्र जेम दूर जायो ॥ म० ॥ ३ ॥ वाणी विमल निर्मल सुधा ॥ रस संवेग छायो ॥ नर सुरा सुर विय समज। सुणतही हरषायो ॥ म० ॥४॥ जगद-याल तुंही कृपाल । जनकज्युं सुख दायो ॥ वत्सल नाथ

स्वामसाहिब । सुजश तिलक पायो ॥ ह० ॥५॥ जप्त जाप खपत पाप । तप्त हि मिटायो ॥ मल्लि देव त्रि विधि सेव । जग अछेरो पायो ॥ ६ ॥ उगणीसै आसोज तीज कृष्ण सुदिन आयो ॥ कुंभ नंदन कर आनंद ॥ हर्षधी में गायो ॥ म० ॥ ७ ॥

श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तवन

शोरठ ।

भरतजी भूप भयाछो वैरागी ।

सुमित्र नंदन श्रीमुनिसुव्रत ॥ जगत नाथ जिन जाणी । चारित्र लेइ केवल उपजायो ॥ उपशम रसनी बाणीरा ॥ प्रभुजी आप प्रवल बड भागी ॥१॥ त्रिभुवन दीपक सागीरा ॥ प्र० ॥ आ० एआंकणी ॥ चौतीस अतिशय पैंत्रीसबाणी ॥ निरखत सुर इंद्राणी ॥ संवेग रसनी बाणी सांभल ॥ हर्षस्युं आंख्यां भराणीरा ॥प्र०॥ आ० ॥२॥ शब्द रूप रस गंध अने स्पर्श प्रात कूल न हुवैतुम आगै ॥ ज्युं पंच दर्शन थास्यूं पग नहीं मांडै ॥ तिम अशुभ शब्दादिक भागैरा ॥प्र०॥ आ० ॥३॥ सुर कृत जल स्थल पुष्फ पुंज वर ॥ तेछांडी चित दीनो ॥ तुज निश्वास सुगंध मुख परिमल मनभ्रमर मह लीनोरा ॥ प्र० ॥ आ० ॥४॥ पंचेंद्री सुर नर तिरि

तुमस्युं ॥ किम हुवै दुखदायो ॥ एकेंद्री अनिल तजै प्रति कूल पणु ॥ बाजै गमतो वायोरा ॥प्र० आ० ॥५॥ राग द्वेष दुरदंत ते दमिया ॥ जील्या विषय विकारो ॥ दीन दयाल आयो तुज शरणे ॥ तु'गति मति दातारोरा ॥ प्र० आ० ॥६॥ सम्बत उगणीसे आसोज तीज कृष्ण श्री मुनिसुव्रत गाया ॥ लाडनूं शहर मांहि रूड़ी रीतें आनंद अधिको पायारा प्र० आ० ॥ ७ ॥

श्रीनमि जिन स्तवन

परम गुरू पूज्यजी मुज प्यारारे ।

नमिनाथ अनाथांरानाथोरे ॥ नित्य नमण करूं-जोड़ी हाथोरे ॥ कर्म काटण बीर विख्यातो ॥ प्रभु नमिनाथजी मुजप्यारारे ॥१॥ प्रभु ध्यान सुधारस ध्यायारे पद केवल जोड़ीपाया रे ॥ गुण उत्तम उत्तम आया ॥प्र० ॥२॥ प्रभु वागरी वाण विशालोरे ॥ खीर समुद्रथी अधिक रसालोरे ॥ जग तारक दीन दयालो ॥प्र० ॥३॥ थाप्या तीर्थ च्यार जिणंदोरे ॥ मिथ्या तिमिर हरणनें मुणंदोरे ॥ त्यानें सेवे सुर नर वृंदो ॥प्र०॥४॥ सुर अनुत्तर विमाणना सेवेरे प्रश्न पूछ्यां उत्तर जिन देवेरे ॥ अवधिग्यांन करी जाणलेवे ॥ प्र० ॥ तिहां बैठा ते तुम-ध्यान ध्यावेरे ॥ तुम योग मुद्रा चित्त चावेरे ॥ ते पिण

आपरी भावना भावे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ उगणीसे आसोज उदारोरे कृष्ण चोथ गाया गुण धारोरे ॥ हुओ आनंद हर्ष आपारो ॥ प्र० ॥७॥

श्रीअरिष्टनेमि जिन स्तवन

छिणगईरे ।

प्रभु नेमिस्वामी ॥ तुं जगनाथ अंतरजामी ॥ तुं तारयां स्युं फिर्‌यो जिनस्वाम ॥ अद्भुत बात करी तें अमाम ॥ प्रभु ॥१॥ राजिमती छांडी जिनराय ॥ शिव सुंदर स्युं प्रीत लगाय ॥ प्रभु ॥२॥ केवल पाया ध्यान वर ध्याय ॥ इंद्र शची निरखे हर्षाय ॥ प्र० ॥३॥ नेरिया पिण पामें मन मोद ॥ तुज कल्याण सुर करत विनोद प्र० ॥४॥ राग रहित शिव सुखस्युं प्रीत कर्म हणे वलि द्वेष रहित ॥प्र० ॥५॥ अचरिजकारी प्रभु थारोचरित्र॥ हुं प्रणमुं कर जोड़ी नित्य ॥ प्र० ॥६॥ उगणीसे वदि चोथ कुमार ॥ नेमि जप्यां पायो सुखसार ॥ प्र० ॥७॥

॥ श्री पार्श्व जिनस्तवन ॥

पूज्य भीखणजी तुमारा दर्शण ।

लोह कंचन करे पारस काचो । ते कहो कर कुण लेवे हो ॥ पारस तुं प्रभु साचो पारस । आप समो कर देवे हो ॥ पारसदेव तुमारा दर्शन । भाग भला सोइ

पावै हो ॥ १ ॥ तुज मुख कमल पासे चमरावलि। चंद्र क्रान्ति वत सोहै हो ॥ हंस श्रेणि जाणै पंकज सेवै। देखत जन मन मोहै हो पारस० ॥ २ ॥ फटिक सिंहासण सिंघ आकारे। बैठ देशना देवै हो ॥ वन मृग आवै वाणी सुणवा। जाणकि सिंह नें सेवै हो ॥ पारस० ॥३॥ चंद समो तुज मुख महा शीतल। नयन चकोर हर्षावे हो ॥ इन्द्र नरेंद्र सुरासुर रमणी। निरखत तृपति न पावै हो ॥ पारस० ॥ ४ ॥ पाखंडी सरागी आप निरागी। आपसमें इमगैरी हो ॥ वैर भाव पाखंडी राखै। पिण आप त्यांरा नहीं बैरी हो ॥ पारस० ॥ ५ ॥ जिम सूर्य खद्योत उपरें। वैरभाव नहीं आणै हो ॥ प्रभु पिण इण विधि पाखंडिया नें। खद्योत सरीखा जाणे हो ॥ पा० ॥ ६ ॥ परम दयाल कृपाल पारस प्रभु। संवत उगणीसै गाया हो ॥ आसोज कृष्ण तिथि चोथ लाडनूं। आनंद अधिको पाया हो ॥ पारस० ॥ ७ ॥

श्री महावीर जिनस्तवन

कपिरे प्रिया संदेशो कहै।

परम जिनेंद्र चोवीसमा जिन। अघहणवा महा-वीर ॥ विकट तप वर ध्यान कर प्रभु। पाया भव जल

तीर ॥ नहीं इसो दूसरो जगवीर ॥ उपसर्ग सहिवा अडिग जिनवर । सुर गिर जेम सधीर ॥ नहीं ॥ १ ॥ संगम दुःख दिया आकरारे । पिण सुप्रसन्न निजर दयाल ॥ जग उद्धार हुवै मो थकीरे । ए डूबे इण काल ॥ नहीं ॥ २ ॥ लोक अनार्य बहु किया रे । उपसर्ग विविध प्रकार ॥ ध्यान सुधा रस लीनता जिन। मन में हर्ष अपार ॥ नहीं ॥३॥ इण पर कर्म खपाय नें प्रभु । पाया केवल नाण ॥ उपशम रसमय वागरी प्रभु । अधिक अनूपम वाण ॥ नहीं ॥ ४ ॥ पुद्गल सुख अरि शिव तणारे । नरक तणा दातार ॥ छांडि रमणी किंपाक बेलि । संवेग संयम धार ॥ नहीं० ॥ ५ ॥ निंदा स्तुति सम पणै रे । मान अनें अपमान ॥ हर्ष शोक मोह परिहर्यां रे । पामै पद निर्वाण ॥ नहीं० ॥ ६ ॥ इम बहुजन प्रभु तारिया रे । प्रणमुं चरम जिनेंद ॥ उगणीसै आसोज चोथ वदि । हुवो अधिक आनंद ॥ नहीं० ॥ ७ ॥

इति श्रीभीखणजी स्वामी तस्य शिष्य भारीमालजी स्वामी, तस्य शिष्य रिषरायचंदजी, स्वामी तस्य शिष्य जीतमलजी स्वामी कृत चतुर्विंशति जिनस्तुति समाप्तः

॥ दुहा ॥

नमुं देव अरिहंत नित्य जिनाधिपति जिणराय ॥
द्वादश गुण सहितजे वंदु मन वच काय ॥ १ ॥
नमुं सिद्ध गुण अष्टयुत आचार्य मुनिराज ॥
गुण षट तीस संयुतजे प्रणमुं भव दधि पाज ॥ २ ॥
प्रणमुं फुन उवझाय प्रति गुण पण बीस उदार ॥
नमुं सर्व साधु निर्मल सप्त बीस गुण धार ॥ ३ ॥
द्वादश अठ षट तीस फुन वली पण बीस प्रगट ॥
सप्त बीस ए सर्वही गुण वर इकसय अठ ॥ ४ ॥
नोकरवाली ना जिके मिणियां जगत मझार ॥
एक २ जे गुण तणों एक २ मिणियोंसार ॥ ५ ॥

॥ णमोअरिहंताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवंतने ।

ते अरिहंत भगवंत केहवा छै १२ बारे गुणे करी सहित छै ते कहै छै अनन्तो ज्ञान १ अनन्तो दर्शण २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भा मण्डल ६ फटिक सिंघासण ७ अशोकवृक्ष ८ पुष्प विष्टी ९ देव दुंदवी १० चमरवींजै ११ छत्र धारे १२

णमोसिद्धाणं

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने ।

ते सिद्ध भगवंतकेहवा छै आठ गुणे करी सहित छै ते कहै छै । केवल ग्यान १ केवल दर्शण २ आत्मीक सुख ३ चायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५ अमुर्त्तिभाव ६ अगुलघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज केहवा छै । ३६ षट वीस गुणे करी सहित छै ते कहै छै । आरजदेश ना उपनां १ आरज कुल ना उपनां २ जातवंत ३ रूपवंत ४ थिर संघयेण ५ धीरजवंत ६ आलोवणां दूसरा पासे कहै नहो ७ पोतेरा गुण पोते वर्णन न करे ८ कपटी न होवे ९ शब्दादिक पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवे ११ देश ना जाण होवे १२ काल नां जाण होवे १३ तीच्चण बुद्धि होवे १४ घणां देशांरी भाषा जाणे १५ पांच आचार सहित १६ सूत्रांरा जाण होवे १७ अर्थरा जाण होवे १८ सुत्र अर्थ दोनों रा जाण होवे १९ कपटकरी पूछै तो

छलावे नहीं २० हेतुनां जाण होवे २१ कारणरा जाण होवे २२ दिष्टान्त नां जाण होवे २४ न्यायरा जाण होवे २४ सीखणे समर्थ २६ प्राश्चितनां जाण होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज बचन बोले २८ परीषह जीते २९ समय पर समय नां जाण ३० गंभीर होवे ६१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३ सोम चन्द्रमांजीसा ३४ शूरवीर होवे ३५ बहु गुणी होवे ३६

पुनः

५ पांच इंद्री जीते ४ च्यार कषायटाले नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच आचार पाले ग्यांन १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४ बिर्य ५ ५ पंच समिति पाले इर्या १ भाषा २ अेषणा ३ आदान भंड निक्षेपणा ४ उच्चारपासवण ५ ३ तीन गुप्ती मन १ बचन २ कायगुप्ती ३

इति षट तीस गुण संपूर्ण ।

॥ णमोउवज्झायाणं

नमस्कार थावो उपाध्याय महाराजने ।

ते उपाध्याय महाराज किहवा छै २५ पचवीस गुणे करी सहित छै ते कहै छै । १४ चवदे पूरब ११

इग्यारे अंग भणे भणावे ।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपांग भणे भणावे ।

णमोलोएसव्वसाहुणं ।

नमस्कार थावो लोकने विषै सर्व साधु मुनिराजोंने ।

ते साधु मुनिराज कहवाछै सत्तवीस गुणै करी सहित छै ते कहेछै । ५ पंच महाव्रत पाले ५ इंद्री जीते ४ च्यार कषाय टाले भाव संचैय १५ करण संचैय १६ जोग संचैय १७ क्षम्यांवंत १८ वैराग्यवंत १९ मनसमांधारणीया २० बचन समांधारणी या २१ कायसमांधारणीया २२ नांणसंपणा २३ दर्शन संपना २४ चारित्र संपना २५ वेदनी आयां समो अहियासे २६ मरणआयां समो अहियासे २७ ॥

इति संपूर्णम् ।

सामायक लेणेकी पाटी

करेमि भन्ते सामायियं सावज्जं जोगं ।

पच्चखामि जाव नियम (मुहूर्त एक) पज्जवासामी दुविहिं तिविहेणं नकरेमी नकारवेमी मनसा वायसा कायसा तस्स भन्ते पड़िक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥

सामायेक पारणोकी पाटी ।

नवमा सामायक व्रतनें बिषें ज्यो कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोउं १ सामायक में सुमता नकिधी विकथाकिधी हुवे अणपूरी पारी होय पारवो बिसाखो होय मन बचन कायाका जोग माठा परिवरताया होय सामायकमें राज कथा देशकथा स्त्रीकथा भत्तकथा करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ तिख्खुताकी पाटी ।

तिक्खुतो अयाहिणं पयाहिणं बंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देइयं चेइयं पज्भु वासामि मत्थएण बंदामी ।

॥ अथ पंच पद बंदणा ॥

पहिले पदे श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (बीस) तीर्थंकर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एकसो साठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजी पंचमाहाविदेह क्षेत्रांके बिषे बिचरेछे अनन्त ज्ञानका धणी अनंत दर्शनका धणी अनन्त चारित्रका धणी अनन्त बल का धणी एक हजार आठ लक्षणाका धारणहार

इग्यारे अंग भणे भणावे ।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपांग भणे भणावे ।

णमोलोएसव्वसाहुणं ।

नमस्कार थावो लोकने बिषै सर्व साधु मुनिराजोंने ।

ते साधु मुनिराज केहवाछै सप्तवीस गुणै करी सहित छै ते कहैछै । ५ पंच महाव्रत पाले ५ इंद्री जीते ४ च्यार कषाय टाले भाव संचेय १५ करण संचेय १६ जोग संचेय १७ क्षम्यांवंत १८ वैराग्यवंत १९ मनसमांधारणीया २० बचन समांधारणीया २१ कायसमांधारणीया २२ नांणसंपणा २३ दर्शन संपना २४ चारित्र संपना २५ वेदनी आयां समो अहियासे २६ मरणआयां समो अहियासे २७ ॥

इति संपूर्णम् ।

सामायक लेणेकी पाटी

करेमि भन्ते सामायियं सावज्जं जोगं ।

पच्चखामि जाव नियम (मुहूर्त एक) पज्जवासामी दुविहिं तिविहेणं नकरेमी नकारवेमी मनसा वायसा कायसा तस्स भन्ते पड़िक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥

सामायेक पारणोकी पाटी।

नवमा सामायक व्रतनें बिषें ज्यो कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोउं १ सामायक में सुमता नकिधी बिकथाकिधी हुवे अणपूरी पारी होय पारवो बिसार्यो होय मन बचन कायाका जोग माठा परिवरताया होय सामायकमें राज कथा देशकथा स्त्रीकथा भत्तकथा करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ अथ तिरुखुताकी पाटी।

तिक्खुतो अयाहिणं पयाहिणं बंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देइयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण बंदामी।

॥ अथ पंच पद बंदणा॥

पहिले पदें श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (बीस) तीर्थंकर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एकसो साठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजी पंचमाहाविदेह क्षेत्रांके बिषे बिचरेछै अनन्त ज्ञानका धणी अनंत दर्शनका धणी अनन्त चारित्रका धणी अनन्त बल का धणी एक हजार आठ लक्षणाका धारणाहार

चौसट इन्द्राका पूजनीक चौतीस अतिशय पैतीस बाणी द्वादश गुण सहित बिराजमान छै ज्यां अरिहन्ता सें मांहरी बंदना तिख्खुत्ताका पाठसे मालुम होज्यो ।

दूजे पदेअनन्ता सिद्ध पंनरा भेदे अनन्ती चोवीसी आठ कर्म खपायनें सिद्ध भगवान मोक्ष पहुंता तिहां जनम नहीं जरा नही रोग नहीं सोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संयोग नहीं वियोग नहीं दुःख नही दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भावासमें आवे नहीं सदा काल शाश्वता सुखामें बिराजमान छै इसा उत्तम सिद्ध भगवंतासें मांहरी बंन्दना तिख्खुताका पाठसें मालुम होज्यो ।

तीजे पदे जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्चमाहबिदेह क्षेत्रामें बिचरेछे केवल ज्ञान केवल दर्शनका धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणे देखे छै ज्यां केवलीजी सें माहरी बन्दना तिख्खुताका पाठसें मालुम होज्यो ॥

चौथे पदे गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी स्थविरजी तेगणधरजी महाराज केहवाछै अनेक गुणे करी बिराजमान छै आचार्यजी महाराज केहवाछै षट तीस

गुणे करी विराजमान छे उपाध्यायजी महाराज केहवा-छे पचवीसगुणे करी विराजमान छे स्थविरजी महाराज केहवा छे धर्मसें डिगता हुवा प्राणीनें थिरकरी राखे शुद्ध आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मां हरी वन्दना तिख्खुताका पाठसें मालुम होज्यो ।

पञ्चमें पदे मांहारा धर्म आचारज गुरु पूज्य श्री श्रीश्री १००८ श्रीश्रीकालूरामजी स्वामी (वर्तमान आचारजको नांव लेणो)आदि जघन्य दोय हजार कोड़ साधु साध्वी जाझेरा उत्कृष्टा नवहजार कोड़ साधु साध्वी अढ़ाई द्वीप मन्दरे खेत्रांमें विचरे छे ते महा उत्तम पुरुष केहवा छे पञ्च महाव्रतका पालणा-हार छव कायोनां पीहर पञ्च समिति सुमता तीन गुप्ती गुप्ता नवबाड़सहित ब्रह्मचर्य्यका पालक-दशवि-धि यतिधर्मका धारक बारे भेदे तपस्याका करणाहार सतरे भेदे संजमका पालणाहार बावीस परीसहका जीतणाहार सतावीस गुणे करी संयुक्त बयालीस दोष टाल आहार पांणीका लेवणाहार बावन अणाचारका टालणाहार निरलोभी निरलालची संसार नां त्यागी मोक्षनां अभिलाषी संसारसें पूठा मोक्षसे सहामा सचित्तका त्यागी अचित्तका भोगी अस्वादी त्यागी बैरागी तेड़ीया आवे नही नोंतीया जीमें नही मोलकी

वस्तु लेवे नहीं कनककामणीसें न्यारा मायगनी परे अप्रतिबन्ध बिहारी इसा माहापुरुषासें माहरी वन्दना लिख्खुताका पाठसें मालूम होज्यो

१ पहिले बोले गति च्यार ४

नर्कगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देव-गति ४

२ दूजे बोले जातिपांच ५

एकेन्द्री १ बेइन्द्री २ तेइन्द्री ३ चोरेन्द्री ४ पंचेन्द्री ५

३ तीजे बोले काया छव

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ बाउकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चौथे बोले इन्द्री पांच

श्रोतइन्द्री १ चक्षू इन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रस-इन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोले पर्याय छव ६

आहारपर्याय १ शरीरपर्याय २ इन्द्रीय पर्याय ३ श्वासोश्वासपर्याय ४ भाषापर्याय ५ मनपर्याय ६

६ छठे बोले प्राण १०

श्रोतेंद्री बलप्राण १ चक्षूइन्द्रीबलप्राण २ घ्राण इन्द्रीबलप्राण ३ रसेन्द्रीबलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री बलप्राण ५ मनबलप्राण ६ बचनबलप्राण ७ काया

बलप्राण ८ शासोश्वासबलप्राण ९ आउषोबल प्राण १० ७ सातमे बोलि शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ वैक्रियशरीर २ आहारिक शरीर ३ तैजसशरीर ४ कार्मणशरीर ५

८ आठवें बोलि जोग पंद्राह १५

४ च्यारमनका

सत्यमनजोग १ असत्यमनजोग २ मिश्रमनजोग ३ व्यवहारमनजोग ४

४ च्यारबचनका

सत्यभाषा १ असत्यभाषा २ मिश्रभाषा ३ व्यव-हार भाषा४

७ सातकायाका

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्मणजोग ७

९ नवमे बोलि उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान

मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन पर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मतिअज्ञान १ श्रुतिअज्ञान २ विभंगअज्ञान ३

४ च्यार दर्शन

चक्षुदर्शण १ अचक्षुदर्शण २ अवधिदर्शण ३ केवल दर्शण ४

१० दशमें बोले कर्म आठ ८

ज्ञानावर्णी कर्म १ दर्शणावर्णी कर्म २ वेदनी कर्म ३ मोहणी कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ नामकर्म ६ गोत्रकर्म ७ अंतरायकर्म ८

११ इग्यारामें बोले गुण स्थान चौदाह १४

१ पहिलो मिथ्याती गुणस्थान।

२ दूजो साह्स्वादान समदृष्टि गुणस्थान।

३ तीजो मिश्र गुणस्थान।

४ चौथो अव्रती समदृष्टी गुणस्थान।

५ पांचमो देशविरती श्रावक गुणस्थान।

६ छट्ठो प्रमादी साधु गुणस्थान।

७ सातवों अप्रमादी साधु गुणस्थान।

८ आठवों नियट वादर गुणस्थान।

९ नवमो अनियट बादर गुणस्थान।

१० दसमो सुक्षम संप्राय गुणस्थान।

११ इग्यारमूं उपशान्ति मोह गुणस्थान।

१२ बारमूं क्षीण मोहनी गुणस्थान।

१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान।

१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान ।

१२ बारमें बोले पांच इन्द्रियांकी तेबीस विषय

श्रोतइन्द्रीकी तीन विषय

जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३

चक्षू इन्द्रीकी पांच विषय

कालो १ पीलो २ धोलो ३ रातो ४ लीलो ५

घ्राण इन्द्रीकी दोय विषय

सुगंध १ दुर्गंध २

रस इन्द्रीकी पांच विषय

खट्टो १ मीठो २ कड़वो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्रीकी आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५ चोपड्यो ६ ठंडो ७ उन्हो ८

१३ तेरमें बोले दश प्रकारका मिथ्याती

१ जीवनें अजीव सरदहै ते मिथ्याती

२ अजीवनें जीव सरदहै ते मिथ्याती

३ धर्मनें अधर्म सरदहै ते मिथ्याती

४ अधर्मनें धर्म सरदहै ते मिथ्याती

५ साधुनें असाधु सरदहै ते मिथ्याती

६ असाधुनें साधु सरदहै ते मिथ्याती

७ मार्गनें कुमार्ग सरदहै ते मिथ्याती

८ कुमार्गनें मार्ग सरदहे ते मिथ्याती

९ मोक्षगयांनें अमोक्षगया सरदहे ते मिथ्याती

१० अमोक्षगयांनें मोक्षगया सरदहे ते मिथ्याती

१४ चौदमें बोले नवतत्वको जांण पणों तीका

११५ एकसो पन्द्रराह बोल

१४ चौदाह जीवका—

सुक्ष्म एकेंद्रीका दोय भेद:—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

बादर एकेन्द्रीका दोय भेद:—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बेइन्द्रीका दोय भेद:—

५ पांचमूं अपर्याप्तो ६ छट्ठो पर्याप्तो

तेइन्द्रीका दोय भेद:—

७ सातमूं अपर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्ता

चोइन्द्रीका दोय भेद:—

९ नवमूं अपर्याप्तो १० दशमूं पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेद:—

११ इग्यारमूं अपर्याप्तो १२ बारमूं पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेद—

१३ तेरमूं अपर्याप्तो १४ चौदमूं पर्याप्तो

१४ चौदे अजीवका भेद:—

धर्मास्ति कायका ३ तीन भेद :—

खंध, देश, प्रदेश,

अधर्मास्ति कायका ३ तीन भेद :--

खंध, देश, प्रदेश,

आकाशास्ति कायका ३ तीन भेद :--

खंध, देश, प्रदेश,

कालको दशलूं भेद (ए दश भेद अरूपीके)

पुद्गलास्ति कायका ४ च्यार भेद :—

खंध, देश, प्रदेश, परमाणु

९ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्य १ पाणपुन्य २ लैणपुन्य* ३ सयणपुन्य* ४ वत्थपुन्य ५ मनपुन्य ६ वचनपुन्य ७ कायापुन्य ८ नमस्कारपुन्य ९

१८ पाप अठारे प्रकार :—

प्राणातिपात १ मृषावाद* २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य* १४ परपरिवाद १५ रतिअरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

---

*लैण=जागां जमीनादिक *सयन=पाट बाजोटा दिक

*वाद=बोलना *पैशुन्य=चुगली

२० बीस आस्रवका :—

मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५ प्राणातिपात आस्रव ६ मृषावाद आस्रव ७ अदत्तादान आस्रव ८ मैथुन आस्रव ९ परिग्रह आस्रव १० श्रुत इन्द्री मोकली मेलेते आस्रव ११ चक्षुइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १२ घ्राण इन्द्री मोकली मेलेते आस्रव १३ रस इन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १४ स्पर्शइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १५ मनप्रवर्तावे ते आस्रव १६ वचनप्रवर्तावि- ते आस्रव १७ कायाप्रवर्तावे ते आस्रव १८ भण्डोपगरणमेलताअजयणाकरे * ते आस्रव १९ सुई कुसाग्रमात्र सेवे ते आस्रव २०

२० बीस संवरका :—

सम्यक् ते संवर १ व्रत ते संवर २ अप्रमाद ते संवर ३ अकषाय संवर ४ अजोग संवर ५ प्राणातिपात न करे ते संवर ६ मृषावाद न बोले ते संवर ७ चोरी न करे ते संवर ८ मैथुन न सेवे ते संवर ९ परिग्रह न राखे ते संवर १० श्रुत इन्द्री वशकरे ते संवर ११ चक्षुइन्द्री वशकरे

---

* अजयणा = यत्नां ।

ते संवर १२ घ्राणइन्द्री वशकरे ते संवर १३ रसेन्द्री बशकरे ते संवर १४ स्पर्शइन्द्री बशकरे ते संवर १५ मन बशकरे ते संवर १६ वचन बशकरे ते संवर १७ काया बशकरे ते संवर १८ भण्डउपगरणसेलतां अजयणानकरे ते संवर १९ सुई कुसाग्र न सेवे ते संवर २०

१२ निरजरा बारै प्रकारे :—

अणसण * १ उणोदरी * २ भिक्षाचरी ३ रसपरित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्रायश्चित ७ विनय ८ वेयावच्च ९ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग * १२

४ बंध च्यार प्रकारे :—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभागबन्ध ३ प्रदेशबन्ध ४

४ मोक्ष च्यार प्रकारे :—

ज्ञान १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४

१५ पंदरमें बोले आत्मा आठ :—

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३

---

* अणसण = उपवासादिक ।

* उणोदरी = कमखानां ।

* विउसग्ग = निवर्तवो ।

उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शण आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ बीर्य आत्मा ८

१६ सोलमे बोले दंडक चोबीस २४ :—

१ सातनारकीयांको एक दंडक

१० दशदंडक भवनपतिका :—

असुर कुमार १ नाग कुमार २ सोवन कुमार ३ बिद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ दीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिसा कुमार ८ बायु कुमार ९ स्तनित कुमार १०

५ पांचथावरका पंच दंडक :—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ बायुकाय ४ बनस्पतिकाय ५

१ बेइन्द्री को सतरमों

१ तेइन्द्री को अठारमों

१ चौइन्द्रीको उगणीसमों

१ तियञ्च पंचेन्द्री को बीसमों

१ मनुष्य पंचेन्द्री को इकबीसमों

१ बानव्यंतर देवतांको बावीसमों

१ ज्योतषी देवतांको तेबीसमों

१ वैमानिक देवतांको चौबीसमो

१७ सतरवें बोले लेश्या छः ६ :—

कृष्ण लेश्या १ नील लेश्या २ कापोत लेश्या ३ तेजुलेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६

१८ अठारमे बोले दृष्टि ३ तीन:---

सम्यक् दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि १ समिथ्या दृष्टि ३

१९ उगणीसमें बोले ध्यान ४ च्यार :—

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४

२० वीसमें बोले षट द्रव्यको जांण पणो

धर्मास्तिकायनें पांचा बोलां ओलखीजे :—द्रव्यथकी एक द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथकी जीव पुद्गलने हालवा चालवाको साझ, अधर्मास्तिकायने पांचा बोलां ओलखीजे :—द्रव्यथी एक द्रव्य खेतथी लोकप्रमाणे कालथकी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथी थिररहवानों साझ, आकाशास्तिकायनें पांच बोलकरी ओलखीजे :—द्रव्यथी एक द्रव्य खेत्रथी लोक अलोक प्रमाणे कालथी आदि अंत रहित भाव थी अरूपी गुणथी भाजन गुण कालनें पांचा बोलां करी ओलखीजे:—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेतथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे

कालथी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथी वर्त्तमानगुण पुद्गलास्तिकायनें पांच बोलकरी ओलखीजे:—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी रूपी गुणथी गले * मले, जीवास्तिकायनें पांच बोल करी ओलखीजे:--द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अंत रहित भावथी अरूपी गुणथी चैतन्य गुण।

२१ इकवीसमें बोले राशि २ दोय:—

जीवराशि १ अजीवराशि २

२२ बावीसमें बोले श्रावक का १२ बारे व्रत:—

१ पहिला व्रतमें श्रावक स्थावर जीव हणवाको प्रमाण करे और त्रस जीव हालतो चालतो हणवाका सउपयोग त्याग करे।

२ दूजा व्रतमें मोटको झूठ बोलवाका सउपयोग त्याग करे।

३ तीजा व्रतमें श्रावक राजडण्डे लोकभण्डे इसी मोटकी चोरी करवाका त्याग करे।

४ चौथा व्रतमें श्रावक मर्याद उपरांत मैथुन

---

* गले मले: घटे वधे अथवा: जुदा एकत्र होय।

सेवाका त्याग करे ।

५ पांचमां व्रतमें श्रावक मर्यादा उपरांत परि-ग्रह राखवाका त्याग करे ।

६ छट्ठा व्रतके विषे श्रावक दशों दिशिमें मर्यादा उपरान्त जावाका त्याग करे ।

७ सातवां व्रतके विषे श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छाबीस के जिणारी मर्यादा उप-रांत त्याग करे तथा पन्द्रह कर्मादानकी मर्यादा उपरांत त्याग करे ।

८ आठमा व्रतके विषे श्रावक मर्यादा उपरांत अनर्थ दण्डका त्याग करे ।

९ नवमां व्रतके विषे श्रावक सामायककी मर्याद करे ।

१० दशमां व्रतके विषे श्रावक देसावगासी संव-रकी मर्याद करे ।

११ इगारमूं व्रत श्रावक पोसह करे

१२ बारमूं व्रत श्रावक सुध साधु निर्ग्रंथनें निर्दोष आहार पाणी आदि चउदे प्रकार दान देवे ।

२३ तेवीसमे बोले साधुजीका पंच महाव्रत :—

१ पहिला महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारें

जीव हिंसा करे नहीं करावे नहीं करतानें भलो जाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें

२ दूसरा महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकार झूठ बोले नहीं बोलावे नहीं बोलतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

३ तीजा महा व्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं करावे नहीं करतां प्रते भलोजाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

४ चौथा महा व्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं सेवावे नहीं सेवतां प्रते भलोजाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

५ पंचमां महा व्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं रखावे नहीं राखतां प्रते भलोजाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें ।

२४ चौवीसमे बोले भांगा ४९ गुणचास :---

करण ३ तीन जोग ३ तीनसें हुवे ।

करण ३ तीनका नाम—करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं, नहीं जोग ३ तीनका नाम—मनसा. वायसा कायसा ।

आंक ११ इग्यारेको भांगा ९ :—

एक करण एक जोगसें कहणां, करूं नहीं

मनसा, करूं नहीं वायसा, करूं नहीं कायसा, कराऊं नहीं मनसा, कराऊं नहीं वायसा, कराऊं नहीं कायसा; अनुमोदूं नहीं मनसा, अनुमोदूं नहीं वायसा, अनुमोदूं नहीं कायसा।

आंक १२ बाराको भांगा ९ :—
एक करण दोय जोगसे, करूं नहीं मनसा वायसा, करूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं वायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा वायसा, कराऊं नहीं मनसा कायसा, कराऊं नहीं वायसा कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा।

आंक १३ तेराको भांगा ३ तीन :—
एक करण तीन जोगसें; करूं नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा।

आंक २१ को भांगा ९ :--
दोय करण एक जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा

करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, करूं नही अनुमोदूं नहीं वायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा कराऊं नहीं अनुमोदूं नहींमनसा कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नही कायसा ।

आंक २२ बावीसको भांगा ९ नव :---

दोय करण दोयजोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा, करूं नही कराऊं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा करूं नहीं अनुमोदूं नही मनसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नही मनसा वायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं ममसा कायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ।

आंक २३ तेवीसको भांगा ३ तीन :---

दोय करण तीन जोगसें करूं; नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊं

नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा ।

आंक ३१ इकतीसको भांगा ३ तीन:---

तीन करणएक जोगसें; करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ।

आंक ३२ बत्तीसको भांगा ३ तीन:---

तीन करण दोयजोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ।

आंक ३३ तेतीसको भांगो १ एक:---

तीन करण तीन जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा

२५ पचीसमें बोल चारित्त पांच:---

सामायक चारित्त १ छेदोपस्थापनीय चारित्त २ पडिहार विशुद्ध चारित्त ३ सूक्ष्म सांपराय चारित्त ४ यथाख्यात चारित्त ५

॥ इति पचीस बोल सम्पूर्णम् ॥

——:०:——

॥ अथ पानाकी चरचा ॥

१ जीव रूपीकि अरूपी; अरूपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय ।

२ अजीव रूपीकि अरूपी; रूपी अरूपी दोनूं ही छै किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ए च्यारुं तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी ।

३ पुन्य रूपीकि अरूपी, रूपी ते किणन्याय पुन्यते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल पुद्गल ते रूपी ही छै ।

४ पाप रूपीकि अरूपी, रूपी ते किणन्याय पापते अशुभ कर्म कर्मते पुद्गल पुद्गलते रूपी ही छै ।

५ आस्रव रूपीकि अरूपी, अरूपीते किणन्याय आस्रव जीवका परिणाम छै, परिणामते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

६ संवर रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं ।

७ निर्जरा रूपीकि अरूपी अरूपी छै ते किणन्याय निर्जरा जीवका परिणाम छै पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

८ वंध रूपीकि अरूपी; रूपी किणन्याय वंध ते शुभ अशुभ कर्म छे, कर्म ते पुद्गल छे, पुद्गल ते रूपी छे ।

९ मोक्षरूपी कि अरूपी अरूपी छे ते किणन्याय समस्त कर्मांसि मुकावे ते मोक्ष अरूपीते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।

॥ लडी दूजी सावद्य निरवद्यकी ॥

१ जीव सावद्यकि निर्वद्य दोनूं ही छे ते किणन्याय चोखा परिणामां निर्वद्य खोटा परिणामा सावद्य छे ।

२ अजीव सावद्य निद्य दोनूं नहीं अजीव छे ।

३ पुन्य सावद्य निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छे ।

४ पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छे ।

५ आस्रव सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं ही छे किण-न्याय मिथ्यात्व आस्रव अव्रत आस्रव प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो एकान्त सावद्य छे, शुभ जोगां से निरजरा होय जिण आसरी निर्वद्य छे अशुभ जोग सावद्य छे ।

६ संवर सावद्यकि निर्वद्य निर्वद्य छे ते किणन्याय कर्मां नें रोके ते निर्वद्य छे ।

७ निरजरा सावद्यके निर्वद्य निर्वद्य छै ते किण-
न्याय कर्म तोडवारा परिणाम निर्वद्य छै ।

८ बंध सावद्यके निर्वद्य दोनूं नहीं ते किणन्याय
अजीव छै इण न्याय ।

९ मोक्ष सावद्यके निर्वद्य, निर्वद्य छै, सकल कर्म
मूकाय सिद्ध भगवंत थया ते निर्वद्य छै ।

॥ छठी तीजी आज्ञा मांहि वाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि के बारे; दोनूं छै ते किण-
न्याय, जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि
छै, खोटा परिणाम आज्ञा वाहिर छै ।

२ अजीव आज्ञा मांहि बाहिर; दोनूं नहीं; अजीव
छै ।

३ पुन्य आज्ञा मांहि के बाहिर दोनूं नहीं अजीव
छै इण न्याय ।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ आस्रव आज्ञा मांहिके बारे; दोनूंइ छै; ते
किणन्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिणमें
मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो
आज्ञा बाहिर छै अने जोग नां दोय भेद शुभ
जोग तो आज्ञा मांहि छै अशुभ जोग आज्ञा
बाहिर छै ।

६ संवर आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।

७ निर्जरा आज्ञा मांहिके बाहर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।

८ बंध आज्ञा मांहिके बाहर; दोनूं नहीं ते किण-न्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव हुवे ए बंध तो अजीव छै इणन्याय ।

९ मोक्ष आज्ञा माहिके बाहर, आज्ञा माहि छै ते किणन्याय, कर्म सूंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा मे छै ।

॥ लड़ी चौथी जीव अजीवकी ॥

१ जीव ते जीव छै के अजीव; जीव ते किणन्याय सदाकाल जीवको जीव रहसी अजीव कदे हुवे नहीं ।

२ अजीव ते जीव छै के अजीव छै, अजीव छै अ-जीवको जीव किण ही कालसे हुवे नहीं ।

३ पुन्य जीव छै के अजीव छै, अजीव छै ते किण-न्याय पुन्यते शुभकर्म शुभ कर्मते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै ।

७ निरजरा सावद्यके निर्वद्य निर्वद्य छै ते किण-न्याय कर्म तोडवारा परिणाम निर्वद्य छै ।

८ बंध सावद्यके निर्वद्य दोनूं नहीं ते किणन्याय अजीव छै इणा न्याय ।

९ मोक्ष सावद्यके निर्वद्य, निर्वद्य छै, सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवंत थया ते निर्वद्य छै ।

॥ लडी तीजी आज्ञा मांहि बाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि के बारे, दोनूं छै ते किण-न्याय, जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै, खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर छै ।

२ अजीव आज्ञा मांहि बाहिर; दोनूं नहीं; अजीव छै ।

३ पुन्य आज्ञा मांहि के बाहिर दोनूं नहीं अजीव छै इणा न्याय ।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ आस्रव आज्ञा मांहिके बारे; दोनूंइ छै; ते किणन्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिणमें मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहिर छै अने जोग नां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा मांहि छै अशुभ जोग आज्ञा बाहिर छै ।

६ संवर आज्ञा मांहि कि बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।

७ निर्जरा आज्ञा मांहिकि बाहर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।

८ बंध आज्ञा मांहिकि बाहर; दोनूं नहीं ते किण-न्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव हुवे ए बंध तो अजीव छै इणन्याय ।

९ मोक्ष आज्ञा माहिकि बाहर; आज्ञा माहि छै ते किणन्याय, कर्म सूंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा मे छै ।

॥ लड़ी चौथी जीव अजीवकी ॥

१ जीव ते जीव छै के अजीव; जीव ते किणन्याय सदाकाल जीवको जीव रहसी अजीव कदे हुवे नहीं ।

२ अजीव ते जीव छै के अजीव छै, अजीव छै अ-जीवको जीव किया ही कालसे हुवे नहीं ।

३ पुन्य जीव छै के अजीव छै, अजीव छै ते किण-न्याय पुन्यते शुभकर्म शुभ कर्मते पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै ।

४ पाप जीव छै के अजीव छै; अजीव छै किण-न्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल तो अजीव छै ।

५ आस्रव जीव छै के अजीव छै जीव, छै ते किण न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रहै ते आस्रव छै कर्म ग्रहै ते जीव ही छै ।

६ संवर जीवके अजीव, जीव छै ते किणन्याय कर्म रोके ते जीव ही छै ।

७ निर्जरा जीवके अजीव, जीव छै किणन्याय कर्म तोड़ै ते जीव छै ।

८ बंध जीवके अजीव छै, अजीव छै ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्मको बंध अजीव छै ।

९ मोक्ष जीवके अजीव, जीव छै, किणन्याय समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छै ।

॥ लड़ी पांचवीं जीव चोरके साहूकार ॥

१ जीव चोरके साहूकार, दोनूं छै किणन्याय चोखा परिणामां साहूकार छै मांठा परिणामां चोर छै ।

२ अजीव चोरके साहूकार, दोनूं नहीं किणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवे ये अजीव छै ।

३ पुन्य चोरके साहूकार ,दोनूं नहीं अजीव छै ।

४ पाप चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ आस्रव चोरके साहूकार, दोनूं छै किणन्याय च्यार आस्रव तो चोर छै, अनें अशुभ जोग पण चोर छै शुभ जोग साहूकार छै ।

६ संवर चोरके साहूकार, साहूकार छै किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै ।

७ निर्जरा चोरके साहूकार, साहूकारछै किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम साहूकार छै ।

८ बंध चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै ।

९ मोक्ष चोरके साहूकार साहूकार किणन्याय कर्म खूं'कायकर सिद्ध थया ते साहूकार छै ।

लडी छटी जीव छांडवा जोगके आदरवा जोगकी ।

१ जीव छांडवा जोगके आदरवा जोग छांडवा जोग छै किणन्याय पोते जीवनूं भाजन करे अनेरा जीव पर ममत्व भाव न करे ।

२ अजीव छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय अजीव छै ।

३ पुन्य छांडवा जोगके आदरवा जाग, छांडवा

जोग छै ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छै कर्म ते छांडवा ही जोग छै ।

४ पाप छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म छै जीवनें दुखदाई छै ते छांडवा जोग छै ।

५ आस्त्रव छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय आस्त्रव द्वारे जीवरे कर्म लागे छै आस्त्रव कर्म आवानां बारणा छै ते छांडवा जोग छै ।

६ संबर छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग छै किणन्याय कर्म रोके ते संबर छै ते आदरवा जोग छै ।

७ निर्जरा छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग छै किणन्याय देशथी कर्म तोडे देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छै ते आदरवा जोग छै ।

८ बन्ध छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जो, छै, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नो बन्ध छांडवा जोगही छै ।

९ मोक्ष छांडवा जोगके आदरवा जोग
जोग ते किणन्याय सकल कर्म

निरमल थाय सिद्ध हुवे इणन्याय आदरवा जोग छे।

॥ षटद्रव्यपरलड़ी सातमी रूपी अरूपी की ॥

१ धर्मास्ति काय रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्ति काय रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच बर्ण नहीं पावे इणन्याय।

३ आकाशास्तिकाय रूपीके अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच बर्ण नहीं पावे इणन्याय।

४ काल रूपीके अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच बर्ण नही पावे इणन्याय।

५ पुद्गल रूपीके अरूपी, रूपी, किणन्याय पांच बर्ण पावे इणन्याय।

६ जीव रूपीके अरूपी अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी आठमी सावद्य निर्वद्यकी ॥

१ धर्मास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छे।

२ अधर्मास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छे।

३ आकाशास्ति काय सावद्यके निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

४ काल सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ पुद्गलास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं छै खोटा परिणामा सावद्य छै चोखा परिणामा निर्वद्य छै।

छवद्रव्यपर लड़ी नवमी आज्ञामांहिबाहेरकी

१ धर्मास्ति काय आज्ञा मांहिके बाहर दोनूं नहीं ते किणन्याय आज्ञा मांहि बाहर तो जीव छै। अने ए अजीव छै।

२ अधर्मास्ति काय आज्ञा मांहिके बहो नूंहर नहीं किणन्याय अजीव छै।

३ आकाशास्ति काय आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नही किणन्याय अजीव छै।

४ काल आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किण न्याय अजीव छै।

५ पुद्गल आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

६ जीव आज्ञा मांहिके बाहिर दोनं छै किणन्याय

निर्वंद्य करणी आज्ञा मांहि छै सावद्य करणी आज्ञा बाहर छै इणन्याय ।

छव द्रव्यपर लडी दशमी चोर साहूकारकी

१ धर्मास्ति काय चोर कै साहूकार दोनूं नही किणन्याय चोर साहूकार तो जीव छै ए धर्मास्ति काय अजीव छै इणन्याय ।

२ अधर्मास्ति काय चोरकै साहूकार दोनूं नही अजीव छै ।

३ आकाशास्ति काय चोरकै साहूकार दोनूं नही अजीव छै ।

४ काल चोरकै साहूकार दोनूं नही अजीव छै ।

५ पुद्गल चोरकै साहूकार दोनूं नही अजीव छै ।

६ जीव चोरकै साहूकार, दोनूं छै किणन्याय, माठा परिणामा आसरी चोर छै चोखा परिणामां आसरी साहूकार छै ।

॥ छव द्रव्यपर लडी इग्यारमी जीव अजीवकी ॥

१ धर्मास्ति काय जीवकै अजीव, अजीव छै ।

२ अधर्मास्ति काय जीवकै अजीव, अजीव छै ।

३ आकाशास्ति काय जीवकै अजीव, अजीव छै ।

४ काल जीवके अजीव, अजीव छै।

५ पुद्गलास्ति काय जीवके अजीव, अजीव, छै।

६ जीवास्ति काय जीवके अजीव, जीव छै।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी बारमी एक अनेक की ॥

१ धर्मास्ति काय एक छै के अनेक छै, एक छै, किणन्याय, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

२ अधर्मास्ति काय एक छै के अनेक छै एक छै, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

३ आकाशास्ति काय एकके अनेक, एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एकही द्रव्य छै।

४ काल एक छै के अनेक छै, अनेक छै द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय।

५ पुद्गल एक छैके अनेक छै, अनेक छै, द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय।

६ जीव एक छै के अनेक छै, अनेक छै अनंता द्रव्य छै इणन्याय।

॥ लड़ी तेरमी ॥

छवमें नवमेंकी चरचा।

१ कर्मांकोकर्त्ता छव द्रव्यमें कोण नव तत्वमें कोण उत्तर छवमें जीव नवमें जीव आस्रव।

२ कर्मांको उपावता छवमें कोण नवमें कोण उ० छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

३ कर्मांको लगावता छवमें कोण नवमें कोण उ० छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

४ कर्मांको रोकता छवमें कोण नवमें कोण उत्तर छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५ कर्मांको तोड़ता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा

६ कर्मांको बान्धता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

७ कर्मांको मुकावता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष ।

॥ लड़ी चौदमी ॥

१ अठारे पाप सेवे ते छवमें कोण नवमें कोण . छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

२ अठारे पाप सेवाका त्याग करे ते छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ।

३ सामायक छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

४ व्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें

जीव संवर।

५ अव्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव।

६ अठारे पापको वहरमण छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव सम्वर।

७ पञ्च महाव्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव संवर।

८ पांच चारित्र छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संवर।

९ पांच सुमती छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा।

१० तीन गुप्ती छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, संवर।

११ बारे व्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संवर।

१२ धर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नव में जीव, संवर, निर्जरा।

१३ अधर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आश्रव।

१४ दया छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संवर, निर्जरा।

१५ हिन्सा छवमें कोग नवमें कोग छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव ।

॥ लडी १५ पंद्रमी ॥

१ जीव छवमें कोग नवमें कोग छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा मोक्ष ।

२ अजीव छवमें कोग नवमें कोग छवमें पांच, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

३ पुन्य छवमें कोग नवमें कोग छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, बंध ।

४ पाप छवमें कोग ? नवमें कोग ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पाप बंध ।

५ आस्रव छवमें कोग नवमें कोग छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव ।

६ संवर छवमें कोग नवमें कोग छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

७ निर्जरा छवमें कोग नवमें कोग छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा ।

८ बंध छवमें कोग नवमें कोग छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

९ मोक्ष छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, मोक्ष ।

॥ लडी १६ सोलहमी ॥

१ धर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण छवमें धर्मास्ति, नवमें अजीव ।

२ अधर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण छवमें अधर्मास्ति, नवमें अजीव ।

३ आकाशास्ति, छवमें कोण नवमें कोण छवमें आकाशास्ति, नवमें अजीव ।

४ काल छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमें अजीव ।

५ पुद्गल छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप बंध ।

६ जीव, छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव संवर, निर्जरा मोक्ष ।

॥ लडी १७ सतरमी ॥

१ लेखण (कलम) पूठो, कागद को पानों, लकड़ी को पाटी ; छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमे अजीव ।

२ पातो, रजोहरण, चादर चोलपट्टो आदि भंड उपगरण, छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव ।

३ धानओ दाणों; छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव ।

४ रूंख (वृक्ष) छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव ।

५ तावड़ो छायां छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव ।

६ दिन रात छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमें अजीव ।

७ श्रीसिद्ध भगवान छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव मोक्ष ।

॥ लडी १८ अठारमी ॥

१ पुन्य और धर्म एकके दोय, दोय किणन्याय, पुन्य तो अजीव छै, धर्म जीव छै ।

२ पुन्य और धर्मास्ति एक के दोय; दोय, किण-न्याय, पुन्य तो रूपी छै धर्मास्ति अरूपी छै ।

३ धर्म और धर्मास्ति एक के दोय दोय, किण-न्याय, धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै ।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक के दोय दोय, किणन्याय, अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै ।

॥ लडी १९ उन्नीसमी ॥

५ पुन्य अनें पुन्यवान एक के दोय दोय, किण-न्याय, पुन्य तो अजीव छै पुन्यवान जीव छै ।

६ पाप अने पापी एककै दोय दोय, किणन्याय, पाप तो अजीव छै, पापी जीव छै ।

७ कर्म अनें कर्मा को करता एककै दोय दोय, किणन्याय, कर्म तो अजीव छै; कर्मारो करता जीव छै ।

॥ लडी १६ सोलहमी ॥

१ कर्म जीव कै अजीव अजीव ।

२ कर्म रूपीकै अरूपी रूपी छै ॥

३ कर्म सावद्यकै निरवद्य; दोनू नहीं अजीवछै ।

४ कर्म चोरकै साहूकार ; दोनूं नहीं ; अजीव छै ।

५ कर्म आज्ञा मांहिकै बाहर; दोनूं नहीं अजीव छै ।

६ कर्म छांडवा जोग कै आदरवा जोग ; छांडवा जोग छै ।

७ आठ कर्मां में पुन्य कितना पाप कितना ज्ञानावर्णी, दर्शणावर्णी, मोहनीय, अंत-राय, ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै, वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै।

॥ लडी २० वीसमी ॥

१ धर्म जीव के अजीव जीव छै।

२ धर्म सावद्य के निरवद्य निरवद्य छै।

३ धर्म आज्ञा मांहि के वाहर श्री वितराग देवकी आज्ञा मांहि छै।

४ धर्म चोर के साहूकार साहूकार छै।

५ धर्म रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ धर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ धर्म पुन्य के पाप दोनूं नही किणन्याय धर्म तो जीव छै पुन्य पाप अजीव छै।

॥ लडी २१ इकीसमी ॥

१ अधर्म जीव के अजीव जीव छै।

२ अधर्म सावद्य के निरवद्य सावद्य छै।

३ अधर्म चोर के साहूकार चोर छै।

४ अधर्म आज्ञा मांहि के बाहर; बाहर छै।

५ अधर्म रूपी के अरूपी रूपी छै।

६ अधर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

॥ लडी २२ बाइसमी ॥

१ सामायक जीव के अजीव जीव छै।

२ सामायक सावद्य के निरवद्य निरवद्य छै।

३ सामायक चोर के साहूकार साहूकार छै।

४ सामायक आज्ञा मांहि के बाहर आज्ञा मांहि छै।

५ सामायक रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ सामायक छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ सामायक पुन्यके पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप अजीव छै, सामायक जीव छै।

॥ लडी २३ तेवीसमी ॥

१ सावद्य जीव के अजीव जीव छै।

२ सावद्य सावद्य छै के निरवद्य सावद्य छै।

३ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहर बाहर छै।

४ सावद्य चोर कि साहूकार चोर छै।

५ सावद्य रूपी कि अरूपी अरूपी छै।

६ सावद्य छांडवा जोग कि आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

७ सावद्य पुन्य, कि पाप दोनूं नहीं, पुन्य पाप तो अजीव छै, सावद्य जीव छै।

॥ लडी २४ चोवीसमी ॥

१ निरवद्य जीव कि अजीव जीव छै।

२ निरवद्य सावद्य कि निरवद्य निरवद्य छै।

३ निरवद्य चोर कि साहूकार साहूकार छै।

४ निरवद्य आज्ञा मांहि कि वाहर मांहि छै।

५ निरवद्य रूपी कि अरूपी अरूपी छै।

६ निरवद्य छांडवा जोग कि आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ निरवद्य धर्म कि अधर्म धर्म छै।

८ निरवद्य पुन्य कि पाप पुन्य पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव छै, निरवद्य जीव छै।

३ अधर्म चोर के साहूकार चोर छै।

४ अधर्म आज्ञा मांहि के बाहर ; बाहर छै।

५ अधर्म रूपी के अरूपी रूपी छै।

६ अधर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

॥ लडी २२ बाइसमी ॥

१ सामायक जीव के अजीव जीव छै।

२ सामायक सावद्य के निरवद्य निरवद्य छै।

३ सामायक चोर के साहूकार साहूकार छै।

४ सामायक आज्ञा मांहि के बाहर आज्ञा मांहि छै।

५ सामायक रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ सामायक छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ सामायक पुन्य के पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप अजीव छै, सामायक जीव छै।

॥ लडी २३ तेवीसमी ॥

१ सावद्य जीव के अजीव जीव छै।

२ सावद्य सावद्य छै के निरवद्य सावद्य छै।

३ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहर बाहर छै।

४ सावद्य चोर कि साहूकार चोर छै।

५ सावद्य रूपी कि अरूपी अरूपी छै।

६ सावद्य छांडवा जोग कि आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

७ सावद्य पुन्य, कि पाप दोनूं नहीं, पुन्य पाप तो अजीव छै, सावद्य जीव छै।

॥ लडी २४ चोवीसमी ॥

१ निरवद्य जीव कि अजीव जीव छै।

२ निरवद्य सावद्य कि निरवद्य निरवद्य छै।

३ निरवद्य चोर कि साहूकार साहूकार छै।

४ निरवद्य आज्ञा मांहि कि बाहर मांहि छै।

५ निरवद्य रूपी कि अरूपी अरूपी छै।

६ निरवद्य छांडवा जोग कि आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ निरवद्य धर्म कि अधर्म धर्म छै।

८ निरवद्य पुन्य कि पाप पुन्य पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव छै, निरवद्य जीव छै।

॥ लडी २५ पचीसमी ॥

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ अने अजीव कितना पदार्थ जीव, आस्रव, संवर निर्जरा, मोक्ष, ए पांच तो जीव छे, अनें अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ए च्यार पदार्थ अजीव छे।

२ नव पदार्थ में सावद्य कितना निरवद्य कितना जीव अनें आस्रव ए दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं छे, अजीव, पुन्य पाप, बंध, ए सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं। संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन पदार्थ निरवद्य छै।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितनां आज्ञा बाहर कितना जीव, आस्रव, ए दोय तो आज्ञा मांहि पण छे, अने आज्ञा बाहर पण छे। अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ए च्यार आज्ञा मांहि बाहर दोनूं ही नहीं। संवर, निर्जरा मोक्ष, ए आज्ञा मांहि छे।

४ नव पदार्थ में चोर कितनां साहूकार कितनां जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनूं ही छै। अजीव, पुन्य, पाप, बंध ए चोर साहूकार दोनूं

नही; संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन साहूकार छे।

५ नव पदार्थ में छांडवा जोग कितना आदरवा जोग कितना जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आस्रव, बंध, ए छव तो छांडवा जोग छे; संवर, निर्जरा, मोक्ष ए तीन आदरवा जोग छे अनें जाणवा जोग नवही पदार्थ छें।

६ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितनां जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ए, पांच तो अरूपी छे: अजीव- रूपी अरूपी दोनूं छे पुन्य, पाप, बंध रूपी छे।

७ नव पदार्थ में एक कितनां अनेक कितना उ० अजीव टाली आठ पदार्थ तो अनेक छे, अने अजीव एक अनेक दोनूं छे, किणन्याय धर्मास्ति धर्मास्ति आकाशास्ति ये तीनूं द्रव्य थकी एक एक ही द्रव्य छे।

॥ लडी २६ छवीसमी ॥

१ छव द्रव्य में जीव कितना अजीव कितना एक जीव पांच अजीव छे।

२ छव द्रव्य में रूपी कितना अरूपी कितना जीव; धर्मास्ति; अधर्मास्ति आकाशास्ति; काल: ए पांच तो अरूपी छै; पुद्गल रूपी छै ।

३ छव द्रव्य में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना जीव तो आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै; बाकी पांच आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नही ।

४ छव द्रव्य में चोर कितना साहूकार कितना जीव तो चोर साहूकार दोनूं छै; बाकी पांच द्रव्य चोर साहूकार दोनूं नही, अजीव छै ।

५ छव द्रव्य में सावद्य कितना निरवद्य कितना एक जीव द्रव्यतो सावद्य निरवद्य दोनूं छै, बाकी पांच द्रव्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं ।

६ छव द्रव्य में एक कितना अनेक कितना धर्मास्ति; अधर्मास्ति; आकाशास्ति; ए तीनों तो एक ही द्रव्य छै, काल; जीव; पुद्गलास्ति ए तीन अनेक छै, इणांका अनन्ता द्रव्य छै ।

७ छव द्रव्यमें सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना एक काल तो अप्रदेशी छै, बाकी पांच सप्रदेशी छै ।

॥ लडी २७ सत्ताइसमी ॥

१ पुन्य धर्मके अधर्म दोनूं नहीं; किणन्याय धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै ।

२ पाप धर्म के अधर्म दोनूं नहीं; किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै पाप अजीव छै ।

३ बंध धर्मके अधर्म दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै बंध अजीव छै ।

४ कर्म अनें धर्म एक के दोय दोय छै; किणन्याय कर्म तो अजीव छै, धर्म जीव छै ।

५ पाप अने धर्म एक के दोय दोय छै, किणन्याय पाप तो अजीव छै, धर्म जीव छै ।

६ अधर्म अनें अधर्मास्ति एक के दोय दोय, किण-न्याय अधर्म तो जीव छै; अधर्मास्ति अजीव छै ।

७ धर्म अनें धर्मास्ति एक के दोय दोय, किणन्याय धर्म तो जीव छै; धर्मास्ति अजीव छै ।

८ धर्म अनें अधर्मास्ति एक के दोय दोय; किण-न्याय धर्म तो जीव, अधर्मास्ति अजीव छै ।

९ अधर्म अनें धर्मास्ति एक के दोय दोय, किण न्याय अधर्म तो जीव छै; धर्मास्ति अजीव छै ।

१० धर्मास्ति अनें अधर्मास्ति एकके होय होय, किण-
न्याय धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै; ।
अनें अधर्मास्तिनो थिर रहवानों सहाय छै ।

११ धर्म अनें धर्मी एक के होय एक छै, किणन्याय
धर्म जीवका चोखा परिणाम छै ।

१२ अधर्म अने अधर्मी एक के होय एक छै, किण-
न्याय अधर्म जीव का खोटा परिणाम छै ।
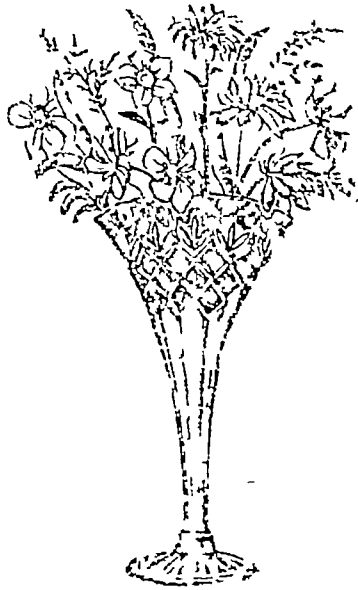
प्रश्नोत्तर ।

१ थारी गति कांई-मनुष्य गति ।

२ थारी जाती कांई—पंचेन्द्री ।

३ थारी काय कांई—त्रसकाय ।

४ इन्द्रीयां कितनीपावे—५ पांच

५ पर्याय कितनापावे—छव

६ प्राण कितना पावे—१० दशपावे ।

७ शरीर कितना पावे—३ तीन—औदारिक, तैजस, कार्मण ।

८ जोग कितना पावे—९ नव पावे, च्यार मन का; च्यार बचनका, एक काया को; औदारिक; ।

९ उपयोग कितना पावे ४ च्यार पावे मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४

१० थारे कर्म कितना ८ आठ ।

११ गुणस्थान किसो पावे—व्यवहारथी पांचमूं; साधु नें पूछे तो छट्ठो ।

१२ विषय कितनो पावे २३—तेवीस ।

१३ मिथ्यात्वनां दश बोल पावै के नहीं, व्यवहारथी नही पावै ।

१४ जीवका चौदा भेदामें से किसो भेदपामे, १ येक चोदभूं पर्याप्तो सन्नी पञ्चेन्द्री को पावे ।

१५ आतमां कितनी पावे श्रावकमें तो ७ सात पावै; अनें साधू में आठ आवे ।

१६ दण्डक किसोपावै—येक इकवीसमु ।

१७ लेस्या कितनी पावे—६ छव ।

१८ दृष्टी कितनी पावे—व्यवहारथी ऐक; सम्यक दृष्टी पावै ।

१९ ध्यान कितना पावे—३ तीन; सुक्ल ध्यान टालके ।

२० छवद्रव्यसें किसा द्रव्य पावै १—ऐक जीव द्रव्य ।

२१ राशि किसी पावें—एक जीव राशि ।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक में पावै ।

२३ साधुका पञ्च महा व्रत पावै के नहीं—साधु में पावें श्रावक में पावै नही ।

२४ पांच चारित्र श्रावक में पावे के नहीं; नहीं पावे, एक देश चारित्र पावे ।

१ एकेन्द्री की गति कांई—तिर्यंच गति ।

२ एकेन्द्री की जाति कांई—एकेन्द्री ।

३ एकेन्द्री में काया किसी पावे पांच थावरकी ।

४ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी पावे—एक स्पर्श इन्द्री ।

५ एकेन्द्री में पर्याय कितनी पावे—४ च्यार मन भाषा एटोय टली ।

६ एकेन्द्री में प्राण कितना पावे ४—च्यार पावे स्पर्श इन्द्रीय बलप्राण १ कायबलप्राण २ श्वासोश्वासबलप्राण ३ आउखोबलप्राण ४

७ मूरड माटो मुलतानी पत्थर सोनो चांदी रतनादिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तर ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावे	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी पावे	४ च्यार, मन भाषा टली

प्राण कितना	४ च्यार पावै, स्पर्श इन्द्री वल प्राण १ काय वल २ श्वासोश्वास वल ३ आयु वलप्राण ४

८ पांणी ओसादि अप्पकायकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	अप्पकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याव कितनी	४ च्यार, मन भाषाटली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नी तेउकायनी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणें

१० वायु कायकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति

जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वायुकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, लीलण, फूलण आदि वनस्पतिकायनी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वनस्पतिकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितना	च्यार ऊपर प्रमाणे
प्राण कितनी	च्यार ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिंडोला आदि बेन्द्रीकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	बेइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्री
पर्याय कितनी	५ पांच मन पर्याय टली
प्राण कितना	६ छव, रस इन्द्री वल प्राण १
	स्पर्श इन्द्री वल प्राण २
	काय वल प्राण ३

श्वासोश्वासबल प्राण	४
आउखो बल प्राण	५
भाषा बल प्राण	६

१३ कीड़ी मकोड़ा आदि तेइन्द्रीका ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	तेइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	३ तीन, स्पर्श १ रस २ घ्राण ३
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	७ सात, छव तो ऊपर प्रमाणे घ्राण इन्द्री बल प्राण वध्यो

१४ माखी मच्छर टीडी पतंगिया बिच्छु आदि चोइन्द्री का ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	चोइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियाँ कितनी	४ च्यार, श्रुत इन्द्री टली
र्याय कितनी	५ पाँच, मन टली
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षू इन्द्री बल प्राण और वध्यो

१५ पंचेन्द्रीकी

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पावै	४ च्यारूं ही पावै
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	पांचोंही
पर्याय कितनी	६ छवों ही पावै सन्नीमें, और असन्नीमें ५ पांच, मन टल्यो
प्राण कितना पावै	सन्नीमें तो १० दशुं ही पावै, असन्नी में ९ पावै मन टल्यो

१६ नारकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नरक गति
जाति कांई	पञ्चेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांचोही
पर्याय कितनी	५ पांच मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशोंही

१७ देवताकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय

इन्द्रियाँ कितनी	५ पांचोही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशोंही

१८ मनुष्य की पूछा असन्नी की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	३॥ श्वास लेवेतो उश्वास नही
प्राण कितना	७॥ श्वास लेवेतो उश्वास नहीं

१९ सन्नी मनुष्य की पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
[illegible] कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रिया कितनी	५ पांच
पर्याय कितना	६ छव
[illegible] कितना	१० दश

१ तुमे सन्नीके असन्नी ? सन्नी, किणन्याय मन छै ।

२ तुमे सूक्षमके बादर, ? बादर किण० ? दीखूं छूं ।

३ तुमे त्रसके स्थावर ? त्रस, किण० ? हालू चालूं छूं ।

४ एकेन्द्री सन्नी के असन्नी—असन्नी, किण० मन नही

५ एकेन्द्री सुक्ष्म के बादर—दोनूं ही छै किण० एकेन्द्री दोय प्रकार की छै, दीखै ते बादर छै, नही दीखै ते सुक्ष्म छै

६ एकेन्द्री त्रस के स्थावर—स्थावर छै, हालै चालै नही

७ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी—एक स्पर्श इन्द्री (शरीर)

८ पृथ्वीकाय अप्पकाय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नही
सूक्ष्म के बादर	दोनूं ही प्रकार की छै
त्रस के स्थावर	स्थावर छै

९ बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्रीकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नही
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१० तिर्यंच पंचेन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चौदे स्थानकमें नीपजे ।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजे जिणारी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै

१३ नारकी का नेरीया की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१० तिर्यंच पंचेन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चौदे स्थानकमें नीपजे।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजे जिणारी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै

१३ नारकी का नेरीया की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१४ देवता की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१५ गाय भैंस हाथी घोड़ा बलद पक्षी आदि पशु जानवर की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही प्रकार का छै छिमो छिमके मन नहीं, गर्भजके मन छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै, नेत्र से देखवा में आवै छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै हालै चालै छै

१ एकेन्द्री में वेद कितना पावे एक नपुंसक वेद पावै

२ पृथ्वी पाणी बनस्पति अग्नि बायरो यां पांचां में वेद कितनां पावे—१ एक नपुंसक ही छै

३ वेइन्द्री तेंइन्द्री चोइन्द्री में वेद कितनां पावै—एकनपुंसक वेदही पावे छै

४ पंचेन्द्रीमें वेद कितना पावे—सन्नी में तो तीनों ही वेद पावे छै, असन्नीमें एक नपुंसक वेदहीछै

५ मनुष्यमें वेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदै थानक में उपजै जीवां में तो वेद एक नपुंसक ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भ में उपजै जिणांमें वेद तीनोंही पावै छै

६ नारकी में वेद कितना पावै--एक नपुंसक वेद ही पावै छै।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यंचा में वेद कितना पावै—छिमो-छिम उपजै ते असन्नी छै जिणांमें तो वेद नपुं-सकही पावै छै, अनें गर्भ में उपजै ते सन्नीछै जिणां में वेद तीनोंही पावैछै।

८ देवतामें वेद कितना पावै—उत्तर—भवनपती, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देव लोक तांई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावै छै, और तीजा देवलोक से स्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक पुरुषही छै।

९ चौबीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना उगणीस दण्डकका जीवांमें तो कर्म आठही पावै छै, अनें मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावै छै।

१ धर्म व्रत में कि अव्रत में—व्रत में ।

२ धर्म आज्ञा मांहि कि बाहर श्रीवीतरागदेव की आज्ञा मांहि छै ।

३ धर्म हिंसा में कि दया में—दया में ।

४ धर्म मोल मिलै कि नहीं मिलै—नहीं मिलै, धर्म तो अमूल्य छै ।

५ देव मोल मिलै कि नहो मिलै—नहो मिलै, अमूल्य छै ।

६ गुरु मोल लियां मिलै कि नहीं मिलै—नहो मिलै, अमूल्य छै ।

७ साधुजी तपस्या करै ते व्रत में कि अव्रत में व्रत पुष्टको कारण छै: अधिक निर्जरा धर्म छै ।

८ साधुजी पारणो करै ते व्रत में कि अव्रत में अव्रतमें नहीं, किणन्याय ? साधुकै कोई प्रकार अव्रतरही नहीं सब सावद्य जोगका त्याग छै । तिणसूं निरजराथाय छै तथा व्रत पुष्टको कारण छै।

९ श्रावक उपवास आदि तप करै ते व्रत में कि अव्रत में—व्रत में ।

१० श्रावक पारणूं करै ते व्रत में कि अव्रत में—अव्रत मे किणन्याय ? श्रावक को खाणों पीणों

५ मनुष्यमें वेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजै जीवां में तो वेद ऐक नपुंसक ही पावै छे, सन्नी मनुष्य गर्भ में उपजैं जिणांमें वेद तीनोंही पावै छे

६ नारकी में वेद कितना पावै--ऐक नपुंसक वेद ही पावै छै।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यंचा में वेद कितना पावै—छिमो-छिम उपजै ते असन्नी छे जिणांमें तो वेद नपुं-सकही पावै छे, अनें गर्भ में उपजैं ते सन्नीछै जिणां में वेद तीनोंही पावैछै।

८ देवतामें वेद कितना पावै—उत्तर—भवनपती, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देव लोक तांई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावै छे, और तीजा देवलोक सै सर्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक पुरुषही छे।

९ चौवीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना उगणीस दण्डकका जीवांमें तो कर्म आठही पावै छे, अनें मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावै छे।

१ धर्म व्रत में कि अव्रत में—व्रत में ।

२ धर्म आज्ञा मांहि कि बाहर श्रीवीतरागदेव की आज्ञा मांहि छै ।

३ धर्म हिंसा में कि दया में—दया में ।

४ धर्म मोल मिलै कि नहीं मिलै—नही मिलै, धर्म तो अमूल्य छै ।

५ देव मोल मिलै कि नहीं मिलै—नही मिलै, अमूल्य छै ।

६ गुरु मोल लियां मिलै कि नहीं मिलै—नही मिलै, अमूल्य छै ।

७ साधुजी तपस्या करै ते व्रत म कि अव्रत में व्रत पुष्टको कारण छै: अधिक निर्जरा धर्म छै ।

८ साधुजी पारणो करै ते व्रत में कि अव्रत में अव्रतमें नहीं, किणन्याय ? साधुकै कोई प्रकार अव्रतरही नहीं सब सावद्य जोगका त्याग छै । तिणसूं निरजराथाय छै तथा व्रत पुष्टको कारण छै ।

९ श्रावक उपवास आदि तप करै ते व्रत में कि अव्रत में—व्रत में ।

१० श्रावक पारणूं करै ते व्रत में कि अव्रत में—अव्रत में किणन्याय ? श्रावक को खाणों पीणों

पच्चक्खाँ ए सर्व अव्रत में छै श्रीउववाई तथा सूयगडांग सूत्र में विसतारकर लिख्या छै।

११ साधुजी नें सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कांई होवे, व्रतमें के अव्रतमें—अशुभ कर्म क्षयथाय तथा पुन्य बंधे छै, १२ मूं व्रत छै।

१२ साधुजी नें असूजतो दोषसहित आहार पाणी दियां कांई होवे तथा व्रत में के अव्रत में— श्री भगवती सूत्र में कह्यो छै, तथा श्री ठाणांग सूत्र के तीजे ठाणें में कह्यो छै अल्प आयुबंधे अकल्याणकारी कर्म बंधे तथा असूजतो दीधोते व्रत में नही। पाप कर्म बंधे छै।

१३ अरिहंत देव देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१४ साधु देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१५ देवता साधुनीं वंछा करै के नहीं करै—करै साधु तो सबका पूजनीक छै।

१६ साधु देवताकी वंछा करैके नहीं करै—नहीं करै।

१७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य—दोनूं नहीं।

१८ सिद्ध भगवान सुक्ष्म कें वादर—दोनूं नहीं।

१९ सिद्ध भगवान त्रसके स्थावर--दोनूं नहीं।

२० सिद्ध भगवान सन्नी के असन्नी--दोनूं नहीं।

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता--दोनूं नहीं।

॥ इति पानाकी चरचा ॥

१ असंयति अव्रती ने दीयां कांई होवै श्री भगवति सूत्र के पाठ में शतक छट्ठे उद्देशे कह्यो असंयती अव्रती नें सूजतो असूजतो सचित अचित च्यार प्रकार को आहार दियां एकान्त पाप होय निर्जरा नहीं होय।

२ असंजती अव्रती जीवां को जीवणो वांछणो के मरणो वांछणो असंजती को जीवणो वांछणो नहीं, मरणो वांछणो नहीं, संसार समुद्र सें तिरणो वांछणो ते श्रीवीतरागदेव को धर्म छै।

३ कसाई जीवां ने मारै तिण वेल्यां साधु कसाई नें उपदेश देवे के नहीं देवे—अवसर देखे तो उपदेश देवै हिन्साका खोटाफल कहै।

प्रश्न—जीवां को जीवणो वांछकर उपदेश देवै के कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवै—

उत्तर—कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवै ते वीतरागको धर्म छै।

४ कोई वाड़ामें पशु जानवर दुखिया छै अनें साधु जिणारसते जाय रह्या छै तो जीवांकी अनुकम्पा आणी छोड़ै के नहीं छोड़ै—नहीं

छोड़ै, किणन्याय, उ० श्रीनिशीथ सूत्रके १२ बारमें उद्देशामें कह्यो छै अनुकम्पा करे त्रस जीव बांधे बंधावे अनुमोदे तो चौमासी प्राय-श्चित आवै, तथा साधु संसारी जीवांकी सार संभार करे नहीं साधु तो संसारी कर्तव्य त्यागदिया।

॥ अथ तेरा द्वार ॥

प्रथम मूल द्वार

१ मूल १ दृष्टान्त २ कुण ३ आत्मा ४ जीव ५ अरूपी ६ निरवद्य ७ भाव ८ द्रव्य गुण पर्याय ९ द्रव्यादिक १० आज्ञा ११ निनय १२ तलाव १३ ए तेराद्वार जाणवा, प्रथम मूल-द्वार कहे छै—जीव ते चेतना लक्षण, अजी-वते अचेतना लक्षण, पुन्य ते शुभ कर्म, पापते अशुभ कर्म, कर्म ग्रहेते आश्रव, कर्म रोके ते संवर, देशथकी कर्म तोड़ी देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा, जीव संघाते शुभा-शुभ कर्म बंध्या ते बंध, समस्तकर्मा से मू-कावे ते मोक्ष।

॥ इति प्रथम द्वार सम्पूर्ण ॥

दूसरो दृष्टान्त द्वार।

जीव चेतन का २ दोय भेदः—

एक सिद्ध, दूजो संसारी, सिद्ध कर्मां रहित छै; संसारी कर्मा सहित छै, तिणरा अनेक भेद छै— सूक्ष्म अने बादर, त्रस नें स्थावर, सन्नी अनें असन्नी, तीन वेद, च्यार गति, पांच जाति, छव काय, चौदे भेद जीवनां, चौबीस दंडक, इत्यादिक अनेक भेद जाणवा, ते चेतन गुण ओलखावानें सोनांनों दृष्टान्त कहै छै, जिम सोनांनों गहणों भांजी भांजी नें और और आकारे घड़ावे तो आकार नों विनाशथाय पण सोनानों विनाश नथी, तिम कर्मां नें उदय थी जीव की पर्याय पलटै पण मूल चेतन गुण को विनाश नहीं।

अजीव अचेतन तिणरा पांच भेद

धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल पुद्गलास्ति, तिणमें च्यारांकी पर्याय पलटै नहीं एक पुद्गलास्ति की पर्याय पलटै ते ओलखावानें सोनानों दृष्टान्त कहै छै जिम कोई सोनानों गहणो भांजी भांजी और और आकारे घड़ावे तो आकारनों विनाश होय सोनानों विनाश नहीं,

ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटै पण पुद्गल गुण को विनाश नहीं।

पुन्यते शुभ कर्म, पापते अशुभ कर्म ते पुन्य पाप ओलखावानें पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्त कहे छै, कदेक जीवके पथ्य आहार घटै और अपथ्य आहार बधै, तो जीव की निरोगपणों घटै अनें सरोगपणों बधै, कदे जीवरे अपथ्य आहार घटै पथ्य बधै तब जीवरे सरोगपणो घटै अनें निरोगपणों बधै पथ्य अपथ्य दोनूं घट जाय तो प्राणी मरण पामें, ज्यों जीवके पुन्य घटै अरु पाप बधै तो सुख घटै अनें दुख बधै, कदे जीवरे पुन्य घटै अरु पाप बधै तो सुख घटै अनें दुख बधै, पुन्य पाप दोनूं खय होय तो जीव मोक्ष पामें, कर्म ग्रहते आस्रव ते ओलखावानें तीन दृष्टान्त पांच कहणा कहे छे।

१ प्रथम कहणा।

१ तलाव रे नालो ज्यूं जीवरे आस्रव
२ हवेली के बारणों ज्यों जीवरे आस्रव
३ नाव के छिद्र ज्यों जीवरे आस्रव

२ दूजो कहणा कहैछै।

१ तलाव अनें नालो एक ज्यूं जीव आस्रव एक

२ हवेली बारणों एक ज्यों जीव आस्रव एक

३ नाव अनें छिद्र एक, ज्यूं जीव आस्रव एक

३ कर्म आवे ते आस्रव तो ओलखावानें ३ तीजो कहणा कहे छै।

१ पांणी आवै ते नालो ज्यों कर्म आवै ते आस्रव।

२ मनुष्य आवै ते बारणों ज्यों कर्म आवै ते आस्रव।

३ पांणी आवै ते छेद्र ज्यों कर्म आवै ते आस्रव।

४ इम कह्या थकां कोई कर्म अनें आस्रव एक श्रद्धे तेहनें दोय श्रद्धावानें चोथो कहणा कहे छै।

१ पांणी अनें नालो दोय ज्यों कर्म अनें आस्रव दोय।

२ मनुष्य अनें बारणों दोय ज्यों कर्म अनें आस्रव दोय।

३ पांणी छेद्र दोय ज्यों कर्म अनें आस्रव दोय।

ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटे पण पुद्गल गुण को बिनाश नहीं ।

पुन्यते शुभ कर्म, पापते अशुभ कर्म ते पुन्य पाप ओलखावानें पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्त कहे छै, कदेक जीवके पथ्य आहार घटै और अपथ्य आहार बधै, तो जीव की निरोगपणों घटै अनें सरोगपणों बधै, कदे जीवरे अपथ्य आहार घटै पथ्य बधै तब जीवरे सरोगपणो घटै अनें निरोगपणों बधै पथ्य अपथ्य दोनूं घट जाय तो प्राणी मरण पामे, ज्यों जीवकी पुन्य घटै अरु पाप बधैं तो सुख घटै अनें दुख बधै, कदे जीवरे पुन्य घटै अरु पाप बधै तो सुख घटै अने दुख बधै, पुन्य पाप दोनूं खय होय तो जीव मोक्ष पामें, कर्म ग्रहते आस्रव ते ओलखावानें तीन दृष्टान्त पांच कहणा कहे छै ।

१ प्रथम कहणा ।

१ तलाव रे नालो ज्यूं जीवरे आस्रव

२ हवेली के बारणों ज्यों जीवरे आस्रव

३ नाव की छिद्र ज्यों जीवरे आस्रव

२ दूजो कहणा कहैछै ।

१ तलाव अनें नालो एक ज्यूं जीव आस्रव एक

२ हवेली बारणों एक ज्यों जीव आस्रव एक
३ नाव अनें छिद्र एक, ज्यूं जीव आस्रव एक

३ कर्म आवे ते आस्रव ते ओलखावानें ३ तीजो कह्या कहै छै ।

१ पांणी आवै ते नालो ज्यों कर्म आवै ते आस्रव ।

२ मनुष्य आवै ते बारणों ज्यों कर्म आवै ते आस्रव ।

३ पांणी आवै ते छेद्र ज्यों कर्म आवै ते आस्रव ।

४ इम कह्या थका कोई कर्म अनें आस्रव एक श्रद्धे तेहनें दोय श्रद्धावानें चोथो कह्या कहै छै ।

१ पांणी अनें नालो दोय ज्यों कर्म अनें आस्रव दोय ।

२ मनुष्य अनें बारणों दोय ज्यों कर्म अनें आस्रव दोय ।

३ पांणी छेद्र दोय ज्यों कर्म अनें आस्रव दोय ।

५ विशेष ओलखावानें पांचमूं कहण कहैछै

१ पांणी आवै ते नालो पण पांणी नालो नहीं ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

२ मनुष्य आवै ते बारणों पण मनुष्य बारणों नहीं, ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

३ पांणी आवै ते छेद्र पण पांणी छेद्र नहीं ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

कर्म रोके तें संवर तें ओलखावानें तीन दृष्टान्त कहै छै ।

१ तालाव रो नालो रूंधे ज्यों जीवेरे आस्रव रूंधे ते संवर ।

२ हवेलीरो बारणों रूंधे ज्यों जीवरै आस्रव रूंधे ते संवर ।

३ नावांरे छेद्र रूंधे ज्यूं जीवरे आस्रव रूंधे ते संवर ।

देशथकी कर्म तोड़ी जीव देशथी उज्वल थायते निर्जरा ओलखावानें तीन दृष्टान्त कहै छै ।

१ तलवारो पांणी मोरीयांदिक करी नें काढै ज्यों

जीव भला भाव प्रवर्तावी नें जीव रूपीयो तलावरो कर्म रूपीयो पांणी काढै ते निर्जरा ।

२ हवेलीरो कचरो पूंजी पूंजी नें काढै ज्यों भला भाव प्रावर्तावी नें जीव रूपणी हवेलीरो कर्म रूपीयो कचरो काढै ते निर्जरा ।

३ नावां को पांणी उलेची २ नें काढै ज्यूं जीव भला भाव प्रवर्तावी नें जीव रूपणी नावांको कर्म रूपीयो पांणी काढै ते निर्जरा ।

जीव संघाते कर्म बंधिया हुयाते बंध ते ओलखावानै छव बोल कहे छे ।

१ पहिले बोले कहो स्वामीजी जीव अनें कर्मनी आदि छै ए बात मिले कि न मिले । गुरु बोल्या न मिले (प्रश्न) क्यूं न मिले गुरु बोल्या ए उपनों नहीं ।

२ दूजे बोले कहो स्वामीजी पहिली जीव और पाछे कर्म ए बात मिले । गुरु बोल्या नहीं मिले: प्रश्न—क्यों न मिले: उ०—कर्म बिना जीव रह्यो जिहां मोक्ष गयो पाछो आवै नहीं यों न मिले ।

५ विशेष ओलखावानें पांचमूं कहण कहेछै

१ पांणी आवै ते नालो पण पांणी नालो नही ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

२ मनुष्य आवै ते बारणों पण मनुष्य बारणों नहीं, ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नही।

३ पांणी आवै ते छेद्र पण पांणी छेद्र नहीं ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

कर्म रोके तें संबर तें ओलखावानें तीन दृष्टान्त कहे छै।

१ तालाव रो नालो रूंधे ज्यों जीवेरे आस्रव रूंधे ते संबर।

२ हवेलीरो बारणों रूंधे ज्यों जीवरे आस्रव रूंधे ते संवर।

३ नावांरे छेद्र रूंधे ज्यूं जीवरे आस्रव रूंधे ते संबर।

देशथकी कर्म तोड़ी जीव देशथी उज्ज्वल थायते निर्जरा ओलखावानें तीन दृष्टान्त कहै छै।

१ तलावारो पांणी मोरीयांदिक करी नें काढे ज्यों

जीव भला भाव प्रवर्तावी नें जीव रूपीयो तलावरो कर्म रूपीयो पांणी काढै ते निर्जरा ।

२ हवेलीरो कचरो पूंजी पूंजी नें काढै ज्यों भला भाव प्रावर्तावी नें जीव रूपणी हवेलीरो कर्म रूपीयो कचरो काढै ते निर्जरा ।

३ नावां को पांणी उलेची २ नें काढै ज्यूं जीव भला भाव प्रवर्तावी नें जीव रूपणी नावांको कर्म रूपीयो पांणी काढै ते निर्जरा ।

जीव संघाते कर्म बंधिया हुयाते बंध ते ओलखावानै छव बोल कहै छै ।

१ पहिले बोले कहो स्वामीजी जीव अनें कर्मनो आदि छै ए वात मिले की न मिले । गुरु बोल्या न मिले (प्रश्न) क्यूं न मिले गुरु बोल्या ए उपनों नहीं ।

२ दूजे बोले कहो स्वामीजी पहिली जीव और पाछे कर्म ए वात मिले । गुरु बोल्या नहीं मिले: प्रश्न—क्यों न मिले: उ०—कर्म विना जीव रह्यो किहां मोक्ष गयो पाछो आवै नहीं यों न मिले ।

३ तीजै बोल कह्यो स्वामीजी पहली कर्म अनें पछे जीव ए मिलै गुरु कहै नहीं मिलै ।
प्र०—क्यों न मिलै । गुरु कहै कर्म किया बिना हुवै नहीं तो जीव बिना कर्म कुण किया
४ चौथे बोले कह्यो स्वामीजी जीव कर्म एकसाथ उपना ए मिले गुरु कहै न मिले ।
प्र०—किणन्याय । उ०—जीव कर्म यां दोयां नें उपजावण वालो कुण ।
५ पांच में बोल जीव कर्म रहित छै ए बात मिले गुरु कहै न मिले । प्र०—किणन्याय । उ०—ए जीव कर्म रहित होवै तो करणी करवारी खप (चूंप) कुणकरै मुक्त गयो पाछो आवे नहीं ।
६ छठे बोलै कह्यो स्वामीजी जीव अनें कर्म नों मिलाप किण विधि थाय छै गुरु कहै अपच्छा न पूर्वे पणे अनादि कालसे जीव कर्मनो मिलाप चल्यो जाय छै ।

तिण बंधरा ४ च्यार भेद छै ।

प्रकृति बंध कर्म सभावरे न्याय १ स्थिति बंध काल व्यवहाररे न्याय २ अनुभाग बंध रस विपाकरे न्याय ३ प्रदेश बंध जीव कर्म लोली भूतरे न्याय ४

ते ओलखावानें तीनदृष्टांत कहैछै ।

१ तेल अने तिल लोलो भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।
२ घृत दूध लोलो भूत ज्युं जीव कर्म लोली भूत ।
३ धातू माटी लोलो भूत ज्युं जीव कर्म लोली भूत ।

समस्त कर्मासे मूकावे ते मोक्ष ओलखा वानें तीन दृष्टांत कहे छै ।

१ घांणियांदिकनूं उपायकरी तेल खल रहित होवे ज्युं तप संजमादि करी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष ।
२ झेरणादिक को उपायकरी घृत छाछ रहित होवे ज्युं तप संजमकरी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष ।
३ अग्नियांदिकनूं उपायकरी धातु माटी अलग होवे ज्युं तप संजमकरी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष ।

॥ तीजो कोण द्वार ॥

जीव चेतन छवद्रव्यांमे कोण नव पदार्थांमे कोण

छवद्रबां मे तो एक जीव नव पदार्थों मे पांच। जीव १ आस्रव २ संबर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५

अजीव अचेतन छवमें कौंण नवमें कौंण:- छवमें ५ पांच, नवमें ४ च्यार, छवद्रबां में तो धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ पुद्गलास्ति ५, नव पदार्थों में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४

पुन्यते शुभ कर्म छवमें कौंण नवमें कौण: छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पुन्य २ बंध ३

पाप ते अशुभ कर्म छवमें कौंण नवमें कौंण: छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन अजीव १ पाप २ बंथ ३

कर्म ग्रह ते आस्रव छवमें कौंण नवमें कौंण: छवमें जीव, नवमें जीव नवमें १ आस्रव २

कर्मरोके ते संवर छवमें कौंण नवमें कौंण: छवमें जीव नवमें जीव संवर

देशथी कर्म तोड़ी देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छवमें कौंण नवमें कौंण:—छवमें जीव, नवमें जीव १ निर्जरा २

बंध छवमें कौंण नवमें कौंण:—छवमें पुद्गल नवमें अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४

मोक्ष रूवमें कोण नवमें कोण—रूवमें जीव नवमें जीव मोक्ष ।

चाले ते कोण चालवानों साझ किणरो:—चाले ते जीव पुद्गल, अनें साझ धर्मास्तिकायनों

थिर रहै ते कोण थिर रहवानों साझ किणरो—थिर रहै जीव पुद्गल, साझ अधर्मास्तिकाय नो

वस्तु ते कोण भाजन किणरो:—वस्तु तो जीव पुद्गल, भाजन आकाशास्तिकायनों

वरतै ते कोण वर्तै किण ऊपर:—वरतै तो काल अनें वरतै जीव अजीव ऊपर

भोगवै ते कोण अनें भोगमें आवै ते कोण:—भोगवै ते जीव, भोगमें आवै ते पुद्गल दोय प्रकार एक तो शब्दादिक पणें दूजो कर्म पणै

कर्मां रो करता कोण कीधाहोवै ते कोण:—करता तो जीव कीधाहुवा कर्म

कर्मांरो उपाय ते कोण उपनां ते कोण:—उपाय तो जीव उपना ते कर्म

कर्मांनें लगावै ते कोण लाग्या हुवा ते कोण—लगावै ते जीव, लागे ते कर्म

कर्म रोकै ते कोण रूक्या ते कोण:—रोकै तो जीव, रूक्या ते कर्म

कर्मा नें तोड़े ते कोण तूट्या ते कोण:—तोड़े ते जीव अने तूट्या ते कर्म

कर्मोनें बांधे ते कोण बंध्या ते कोण बांधे ते जीव बंध्या ते कर्म

कर्मा नें खपावे ते कोण अने चयथया ते कोण खपावे ते जीव चयथया ते कर्म

॥ इति तृतीय द्वारम् ॥

॥ अथ चोथो आत्मा द्वार कहे छे ॥

जीवचेतन से आत्तमा छे अनेरो नही ।

अजीव अचेतन आत्तमा नहीं अनेरो छे ।

आत्तमारे काम आवेछे पण आत्तमा नहीं ।

कोण कोण काम आवेते कहे छे ।

धर्मास्तिकाय अवलम्ब नें चाले छे ।

अधर्मास्तिकाय अवलम्ब नें स्थिर रहे छे ।

आकाशास्तिकाय अवलम्ब नें वसे छे ।

काल अवलम्बनें काय करे छे ।

पुद्गल खाय छे, पीवे छे, पहरे छे, ओढे छे इत्यादि अनेक प्रकारे आत्तमारे काम आवे छे पण आत्तमा नहीं । पुन्यते शुभ कर्म आत्तमारे शुभ पणें उदय आवे छे पण आत्तमा नहीं ।

पापते अशुभ कर्म आत्तमा रे अशुभ पर्ण उदय आवे के पण आत्तमा नहीं ।

शुभाशुभ कर्म ग्रहे ते आस्त्रव आत्तमा के अनेरो नहीं ।

कर्म रोके ते संवर आत्तमा के अनेरो नहीं देशथकी कर्म तोडी देशथकी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा आत्तमा के अनेरो नहीं ।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध आत्तमा नहीं अनेरो के आत्तमा ने बांध राखीके पण आत्तमा नहीं ।

समस्त कर्मा सें मुकावे ते मोक्ष आत्तमा के अनेरो नहीं ।

॥ इति चतुर्थ द्वारम् ॥

॥ अथ पांचमूं जीव द्वार कहे छे ॥

जीव ते चेतन तिण जीवनें जीव कहीजे जीवनें आस्रव कहीजे जीवनें संवर कहीजे जीव नें निर्जरा कहीजे जीव नें मोक्ष कहीजे ।

अजीव अचेतन नें अजीव कहिजे पुन्य कहीजे पाप कहीजे बंध कहीजे ।

पुन्यते शुभ कर्म तेहनें पुन्य कहीजे तेहनें अजीव कहीजे तेहनें बंध कहीजे ।

पाप ते अशुभ कर्म तेहनें पाप कहीजे अजीव कहीजे बंध कहीजे।

कर्म ग्रहे ते आस्रव कहिजे तेहनें जीव कहीजे कर्म रोके ते संवर कहीजे जीव कहीजे।

देशथकी कर्म तोड़ी देशथकी जीव उज्जलथाय तेहनें निर्जरा कहीजे जीव कहीजे।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध कहीजे अजीव कहीजे। पुन्य कहीजे। पाप कहीजे।

समस्त कर्म मुकावे ते मोक्ष कहीजे जीव कहीजे हिवे एहनो ओलखणा न्याय सहित कहे छे।

जीवनें जीव किणन्याय कहीजे, गये काल जीव छो वर्तमान काल जीव छे आगमें काल जीव को जीव रहसी इणन्याय।

अजीव नें अजीव किणन्याय कहीजे, गये काल अजीव छो वर्तमानकाल अजीव छे आगमें काल अजीव को अजीव रहसी।

पुन्य नें अजीव किणन्याय कहीजे, पुन्य ते शुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे पुद्गल ते अजीव छे।

पाप नें अजीव किणन्याय कहीजे, पाप ते अशुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे पुद्गल ते अजीव छे।

आस्रव नें जीव किणन्याय कहीजे:—आस्रव तो

कर्म ग्रहे छे कर्मांरो करता छे कर्मांरो उपाय छे उपाय ते जीव हीज छे।

१ मिथ्यात आस्रव नें जीव किणन्याय कहीजे विपरीत सरधान ते मिथ्यात आस्रव विपरीत सरधान जीवरा परिणाम छे।

२ अव्रत आस्रव नें जीव किणन्याय कहीजे अत्याग भाव ते जीवरी आशा वांछां अव्रत आस्रव छे ते जीवरा परिणाम छे।

३ परमाद आस्रव नें जीव किणन्याय कहीजे अण उत्साह पणों ते प्रमाद आस्रव छे ते जीवरा परिणाम छे।

४ कषाय आस्रव नें जीव किणन्याय कहीजे कषाय आत्तमा कही छे कषाय ते जीवरा परिणाम छे ते जीव छे।

जोग आस्रवनें जीव किणन्याय कहीजे जोग आतमा कही छे जोग ते जीवरा परिणाम छे जोग नाम व्यापार तीनूंही जोगांरो व्यापार जीवरो छे।

संवर ने जीव किणन्याय कहिजे समाई पचखाण संयम संवर विवेक विउसग ए छउं आतमा कही छे सर्व चारित आतमां कही छे चारित जीवरा परिणाम छे इणन्याय।

निर्जरा नें जीव किणन्याय कहीजे भला भाव प्रवर्तावी नें जीव देशथी उजलो हुवे ते जीव छे।

बंधनें अजीव किणन्याय कहीजे बंध तो शुभ अशुभ कर्म छे ते पुद्गल छे, पुद्गल ते अजीव छे।

मोक्षनें जीव किणन्याय कहीजे समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष कहीजे निर्वाण कहीजे सिद्ध भगवान कहीजे सिद्ध भगवान ते जीव छे इणन्याय मोक्षनें जीव कहीजे।

॥ इति पंचम् द्वारम् ॥

॥ अथः छट्ठो रूपी अरूपी द्वार कहे छे। ॥

जीव अरूपी छे अजीव रूपी अरूपी दोनूं छे पुन्य रूपी छे पाप रूपी छे आस्रव अरूपी छे संवर अरूपी छे निर्जरा अरूपी छे बंध रूपी छे मोक्ष अरूपी छे हिवे एहनी ओलखना कहे छे।

जीवनें अरूपी किणन्याय कहीजे छव द्रव्यमें जीवनें अरूपी कह्यो छे पांच वर्ण पावे नहीं।

अजीव नें अरूपी रूपी दोनूं किणन्याय कहीजे अजीवका पांच भेद धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति काल, पुद्गल इणमें च्यार तो अरूपी छे यामें पांच वर्ण पावे नहीं एक पुद्गल रूपी छे।

पुन्य नें रूपी किण न्याय कहीजे पुन्य तो शुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे पुद्गल ते रूपी छे ।

पापनें रूपी किण न्याय कहीजे पाप ते अशुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे पुद्गल ते रूपी छे ।

आस्रव नें अरूपी किण न्याय कहीजे कृष्णादिक छऊं भाव लेश्या अरूपी कही छे ।

मिथ्यात आस्रव नें अरूपी किण न्याय कहीजे मिथ्या दृष्ट अरूपी कही छे ।

अव्रत आस्रव नें अरूपी किण न्याय कहीजे अत्याग भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छे ।

प्रमाद आस्रव नें अरूपी किण न्याय कहीजे अणउत्साहपणों ते प्रमाद आस्रव छे जीवरा परिणाम छे ते जीव छे जीव ते अरूपी छे ।

कषाय आस्रव नें अरूपी किण न्याय कहीजे श्रीठाणांग दशमें ठाणें जीव परिणामीरा दश भेदां में कषाय परिणामी कह्या छे अनें ज्ञान दर्शन चारित परिणामी कह्या छे ए जीव छे तिम कषाय परिणामी जीव छे कषायपणें परिणमें ते कषाय परिणामी आस्रव छे जीव छे जीव ते अरूपी छे ।

जोग आस्रव नें अरूपी किण न्याय कहीजे तीनों

हीं जोगांरो उठाण कर्म बल वीर्य पुर्षाकार पराक्रम अरूपी छै।

संवर ने अरूपी किणन्याय कहीजे अठारे पाप ठाणांरो विरमण अरूपी कह्यो छै।

निर्जरा नें अरूपी किणन्याय कहीजे कर्म तोड़वारो उठाण कर्म बल वीर्य पुरुषाकार प्राक्रम अरूपी छै।

बंधनें रूपी किणन्याय कहीजे बंधते शुभाशुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते रूपी छै।

मोक्ष नें अरूपी किणन्याय कहीजे समस्त कर्मां से मूकावे ते जीव छै ते हने मोक्ष कहीजे सिद्ध भगवान कहीजे सिद्ध भगवान ते अरूपी छै।

॥ इति छठो द्वारम् ॥

॥ अथः सातमूं सावद्यनिवद्य द्वार ॥

जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै। अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं। पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै। आस्रवका पांच भेद, मिथ्यात आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो सावद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै शुभ जोग निर्वद्य छै। इणन्याय आस्रव सावद्य निर्वद्य दोनूं छै। संबर निर्वद्य छै। निर्जरा निर्वद्य छै

बंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छे। मोक्ष निर्वद्य छे।

॥ इति सप्तम द्वारम् ॥

॥ अथः आठमूं भाव द्वार कहे छे ॥

भाव ५ पांचः—उदय भाव १ उपशम भाव २ क्षायक भाव ३ क्षयोपशम भाव ४ परिणामिक भाव ५

उदय तो आठ कर्मनों अनें उदय निपन्नरा दोय भेदः—जीव उदय निपन्न १ दूजो जीवरे अजीव उदय निपन्न २ तिणमें जीव उदय निपन्नरा ३३ तेतीस भेद ते कहे छे ४ च्यार गति ६ छव काय ६ छव लेश्या ४ च्यार कषाय ३ तीन वेद एवं २३ मिथ्यात्वी २४ अव्रती २५ असन्नी २६ अनाणी २७ आहारता २८ संसारता २६ असिद्ध ३० अकेवली ३१ छद्मस्थ ३२ संजोगी ३३

हिवे जीवरे अजीव उदय निप्पन्नरा ३० तीस भेद ते कहे छे ५ पांच शरीर ५ पांच शरीरे प्रयोग परिणाम्यां द्रव्य ५ पांच वर्ण २ दोय गंध ५ पांच रस ८ आठ स्पर्श एवं तीस।

उपशमरा दोय भेद एकतो उपशम १ दूजो उपशम निपन्न भाव उपशम तो एक मोहनी कर्मनों

होय उपशम निपन्नरा दोय भेद, उपशम समकित १ उपशम चारित्र २

क्षायकरा दोय भेद एक तो क्षायक दूजो क्षायक निपन्न, क्षायक तो आठ कर्मां को होय अने क्षायक निपन्नरा १३ भेद ते कहै छै।

केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २ आत्मिक सुख ३ क्षायक समकित ४ क्षायक चारित्र ५ अटल अवगाहना ६ अमूर्तिक पणों ७ अगुरु लघूपणों ८ दान लब्धि ९ लाभ लब्धि १० भोग लब्धि ११ उपभोग लब्धि १२ वीर्य लब्धि १३

क्षयोपशमरा दोय भेद, एक तो क्षयोपशम १ दूजो क्षयोपशम निपन्न भाव २ क्षयोपशम तो च्यार कर्म को ज्ञानावर्णी दर्शनावर्णी मोहनी अंतराय, अनें क्षयोपशम निपन्न भावरा ३२ बत्तीस बोल ते कहै छै।

ज्ञानावर्णी कर्मरो क्षयोपशम होय तो ८ आठ बोल पामे, केवल वरजी ४ च्यार ज्ञान ३ तीन अज्ञान १ एक भणबो गुणबो।

दर्शणावर्णी कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामे ५ पांच इन्द्री ३ तीन दर्शन केवल वरजी।

मोहनी कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोलपामे ४ च्यार चारित्र १ एक देशव्रत ३ दृष्टि ।

अंतराय कर्मरो क्षयोपशम होवे तो आठ बोल पामे ५ पांच लब्धि ३ तीन वीर्य ।

परिणामिकरा दोय भेद सादिया परिणामि १ अनादिया परिणामी २ अनादिया परिणामिकरा १० दश भेद, तिणमें ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि ७ सातमूं लोक आठ आठमूं अलोक ८ नवमूं भवी १० दशमूं अभवी । यने सादिया परिणामीरा अनेक भेद जाणवा । गाम नगर गढ़ पहाड़ पर्वत पताल समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परिणामिकरा जाणवा ।

जीव आश्री जीव परिणामीरा १० दश भेद तै कहै छै ।

गति परिणामी १ इन्द्रीय परिणामी २ कषाय परिणामी ३ लेश्या परिणामी ४ जोग परिणामी ५ उपयोग परिणामी ६ ज्ञान परिणामी ७ दर्शन परिणामी ८ चारित्र परिणामी ९ वेद परिणामी १०

हिवे जीव आश्री अजीव परिणामीरा १० दश भेद कहै छै ।

बन्धन परिणामी १ गई परिणामी २ संठाण

परिणामी ३ भेद परिणामी ४ वर्ण परिणामी ५ गन्ध परिणामी ६ रस परिणामी ७ स्पर्श परिणामी ८ अगुरु लघू परिणामी ६ शब्द परिणामी १० ॥ जीव में भाव पावे ५ पांचूं ही, अजीव पुन्य पाप बन्धमें भाव एक परिणामिक ।

आस्रव भाव दोय:—उदय, परिमाणिक ।

संवर भाव ४ च्यार उदय वरजी नें ।

निर्जरा भाव ३ तीन क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक ।

मोक्ष भाव २ दोय क्षायक, परिणामिक ।

॥ इति अष्टम द्वारम् ॥

॥ अथः नवमं द्रव्य गुण पर्याय द्वार ॥

द्रव्य तो जीव असंख्यात प्रदेशी गुण ८ आठ ज्ञान, दर्शण, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग, सुख, दुःख, एक एक गुणरी अनन्ती अनन्ती पर्याय ।

ज्ञान करी अनन्ता पदार्थ जाणैं तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

दर्शन करी अनन्ता पदार्थ श्रद्धै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोके तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

तपकरी अनन्त कर्म प्रदेश तोड़े तिणसूं अनन्तो पर्याय।

वीर्यना अनन्ती शक्ति तिणसूं अनन्तो पर्याय।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणे देखे तिणसूं अनन्तो पर्याय।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेशसूं अनन्त पुद्गलिक सुख वेदे तिणसूं अनन्तो पर्याय वलि अनन्त कर्म प्रदेश अलग कुर्यां थी अनन्त आत्मीक सुख प्रगटे तिणसूं अनन्तो पर्याय।

दुःख अनन्त पाप प्रदेश सूं अनन्त दुःख वेदे तिणसूं अनन्तो पर्याय।

अजीव नां पांच भेदः—धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति, यांको द्रव्य गुण पर्याय कहे छै।

द्रव्य तो एक धर्मास्ति, गुण चालवानो साझ पर्याय अनन्ता पदार्थ नें चालवानो साझ तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति गुण थिर रहवानो साझ पर्याय अनन्ता पदार्थ नें थिर रहवानो साझ तिणसूं अनन्तो पर्याय।

द्रव्य तो एक आकाशास्ति गुण भाजन पर्याय अनन्त पदार्थां नों भाजन तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो काल, गुण वर्तमान, पर्याय अनन्ता पदार्थां प्रवर्ते तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो पुद्गल, गुण अनन्त गलै अनन्त मिलै, तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो पुन्य, गुण जीवके शुभ पणै उदय आवै पर्याय अनंत प्रदेश शुभ पणै उदय आवै सुख करे तिणसूं अनंती पर्याय।

द्रव्य तो पाप, गुण जीवरे अनंत प्रदेश अशुभ पणै उदय आवै, अनंत दुःख करे तिणसूं अनंती पर्याय।

द्रव्य तो आस्रव गुण कर्म ग्रहवानों पर्याय अनंता कर्म प्रदेश ग्रहे तिणसूं अनंती पर्याय।

द्रव्य तो संवर गुण कर्म रोकवारो, पर्याय अनंता कर्म प्रदेश रोके तिणसूं अनंती पर्याय।

द्रव्य तो निर्जरा, गुण देशथकी कर्म प्रदेश तोड़ी देश थी जीव उज्ज्वलो थाय, पर्याय अनंत कर्म प्रदेश तोड़े तिणसूं अनंती पर्याय।

द्रव्य तो बंध, गुण जीवनें बांधराखवारो, पर्याय अनंता कर्म प्रदेश करी बांधे तिणसूं अनंती पर्याय।

द्रव्य तो मोक्ष, गुण आत्मिक सुख, पर्याय अनंत कर्म प्रदेश क्षयहुयां अनंत सुख प्रगट तिणसुं अनंती पर्याय ।

॥ इति नवमूं द्वारम् ॥

॥ अथः दशमूं द्रव्यादिकरी ओलखनाद्वार ॥

जीवनें पांचां बोलांकरी ओलखीजें

द्रव्य थकी अनंता द्रव्य, क्षेत्रथी लोक प्रमाण, कालथकी आदि अंत रहित, भावथी अरूपी, गुणथी चेतन गुण

अजीव नें पांचां बोलांकरी ओलखीजें

द्रव्य थकी अनंताद्रव्य क्षेत्रथी लोकालोक प्रमाण, कालथकी आदि अंत रहित, भावथी रूपी अरूपी दोनूं, गुणथकी अचेतन गुण

पुन्य नें पांचां बोलांकरी ओलखीजें

थकी आदि अंत रहित, भावथकी रूपी, गुण-
थकी जीवरै अशुभ पणै उदय आवै

आस्रव नें पांचां बोलांकरी ओलखीजै

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेतकी जीवांकनें, काल-
थकीरा ३ तीन भेद:—एकेक आस्रवरी आदि
नहीं अंत नहीं ते अभवी आसरी एकेक आस्रवरी
आदि नही पण अंत छै ते भवि आंसरी, एकेक
आस्रवरो आदि छै अंत छै ते पड़वाई समदृष्टी
आसरी तेहनीस्थिति जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टी
देश उणी अर्द्ध पुद्गल प्रावर्तन, भावथकी अरूपी,
गुणथकी कर्म ग्रहवानो गुण

संबर नें पांचां बोलांकरी ओलखीजै

द्रव्यथकी तो असंख्याता द्रव्य, खेतथी जीवांकनें,
कालथकी आदि अंत सहित, भावथी अरूपी,
गुणथकी कर्म रोकवारो गुण

निर्जरा नें पांचां बोलांकरी ओलखीजै

द्रव्यथकी अकाम निर्जराका तो अनंता द्रव्य
सकाम निर्जराका असंख्याता द्रव्य, खेत्रथी
जीवांकनें, कालथकी आदि अंत सहित, भाव-
थकी अरूपी, गुणथकी कर्म तोड़वारो गुण

बंधनें पांचां बोलां ओलखीजै

द्रव्यथी अनंता द्रव्य । खेत्रथी जीवांकनें कालथकी आदि अंत सहित भावथकी रूपी। गुणथकी कर्म बंध रखवारो

मोक्षनें पांचां बोलांकरी ओलखीजें: । द्रव्यथकी अनंता द्रव्य । खेत्रथी जीवांकनें । कालथकी एकेक सिद्धांरी आदि अंत नहीं तेथणां काल-सिद्धांरि न्याय एकेक सिद्धांरी आदि छै पण अंत नहीं । ते थोड़ाकाल सिद्धांरि न्याय भावथकी अरूपी । गुणथकी आत्मिक सुख ।

धर्मास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे । द्रव्य-थकी एक द्रव्य । खेत्रथी लोक प्रमाण । काल-थकी आदि अंत रहित । भावथकी अरूपी । गुणथकी जीव पुद्गलनें चालवारो साझ ।

अधर्मास्तिकाय ने पांचां बोलांकरी ओलखीजें । द्रव्यथकी एक द्रव्य । खेत्रथी लोक प्रमाण । काल-थकी आदि अंतरहित । भावथकी अरूपी । गुण-थकी जीव पुद्गलने थिर रहवानों साझ ।

कालथकी आदि अंत रहित। भावथकी अरूपी गुणथकी भाजनगुण

काल नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे।

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य। खेत्रथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे। कालथकी आदि अंत रहित। भावथकी अरूपी। गुणथकी वर्तमान गुण।

पुद्गलास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे।

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य। खेत्रथी लोक प्रमाणे। कालथकी आदि अंत रहित। भावथकी रूपी। गुणथकी गलै मलै।

॥ इति दशम द्वारम् ॥

॥ अथः एकादशमूं आज्ञा द्वार कहै छै ॥

जीव आज्ञा मांही बाहर दोनूं छै, ते किणन्याय सावद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा बाहर छै। अनें निर्वद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा मांहि छै। अजीव आज्ञा मांहि के बाहर, अजीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं, ते किणन्याय अजीव छै अचेतन छै जड़ छै।

पुन्य पाप बंध ए तीनूं आज्ञा मांहि बाहर नहीं अजीव छै।

आस्रव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छैं, किणन्याय आस्रवनां पांच भेद मिथ्यात १ अव्रत २ प्रमाद ३

कषाय ४ ए च्यार तो आज्ञा बाहर छै, जोग आस्रव का दोय भेद शुभ जोग वर्तता निर्जराकरै तिण अपेक्षाय आज्ञा मांहि छै। अशुभ जोग आज्ञा बाहर

संवर आज्ञा मांहि छै. ते किणन्याय संवरथी कर्म रुकै ते श्री वीतरागकी आज्ञा मांहि छै।

निर्जरा आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म तोड़-वारा उपाय श्री वीतरागकी आज्ञा मे छै।

मोक्ष आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय सकल कर्म खपावारी करणी श्रीवीतरागकी आज्ञा मांहि छै।

॥ इति पत्रादमन प्रश्न ॥

॥ अथः बारमूं ज्ञिनय द्वार कहै छै ॥

अजीव छांडवा जोग किणन्याय कहीजे, किणी अजीव पर ममत्व भाव न करवो

पुन्य पाप छांडवा जोग किणन्याय कहीजे शुभ अशुभ कर्म छांडवा जोग छै

आस्रव नें छांडवा जोग किणन्याय कहीजे आस्रव कर्म ग्रहे छै। कर्मांरो उपाय छै। शुभाशुभ कर्म आवाना बारणांछै ते छांडवा जोग छै

कर्मरोकै ते संवर आदरवा जोग छै

देशथकी कर्म तोड़ी देशथकी जीव उज्जल थायते निर्जरा आदरावा जोग छै

बंधनें छांडवा जोग किणन्याय कहीजे। शुभाशुभ कर्म जीव कै बंध रह्या छै ते बंध तो छोडवा-जोग छै

मोक्ष नें आदरावा जोग किणन्याय कहीजे समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष आदरवा जोग छै

॥ इति द्वादश द्वारम् ॥

॥ अथः तेरमूं तलाव द्वार कहे छै ॥

तलावरूपी जीव जाणवो। अतलाव ते तलाव रूपी अजीव जाणवो। निकलता पाणी रूप पुन्य पाप जाणवो। नालारूप आस्रव जाणवो। नाला बंध

रूप संवर जाणवो। मांहिला पाणी रूप बंध जाणवो। खाली तलाव रूप मोक्ष जाणवो।

यह तेरा द्वारनें ३ किया आत्मोपकारार्थ

॥ इति तेराद्वार सम्पूर्णम् ॥

अथ लघुदंडक लिख्यते.

पहिलो शरीर द्वार।

शरीर ५—औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ कार्मण ५"।

सातों ही नारकों और सर्व देवतामें शरीर पावे तीनः—वैक्रिय १ तैजस २ कार्मण ३

च्यार थावर, तीन विकलेंद्रीमें, तथा असन्नी तिर्यंच, असन्नी मनुष्य. सर्वयुगलियामें शरीर पावे ३-औदारिक १ तैजस २ कार्मण ३।

वाउकाय, सन्नीतिर्यंचपंचेन्द्रीमें. शरीर पावे ४ औदारिक १ वैक्रिय २ तैजस ३ कार्मण ४।

गर्भज मनुष्यमें शरीर पावे पांचूंही॥"

सिद्धांमें शरीर पावे नहीं॥"

॥ इति प्रथम शरीर द्वार समाप्तम् ॥

दूसरो अवगाहना द्वार।

जघन्य अवगाहना आंगुलको असंख्यातवों भाग उत्कृष्टी हजार जोजन झाझेरी।

उत्तर वैक्रिय करैतो जघन्य तो आंगुलको सं-ख्यातवों भाग उत्कृष्टो लाखजोजनजाजेरो ।

पहली नरकके नेरिया की अवगाहनां उत्कृष्टो ७॥। धनुष्य ६ आंगुलको ।

दूजी नरककेनेरियां की अवगाहनां साढ़ी पंदरा १५॥ धनुष और १२ आंगुलको ।

तीजी नरककेनेरियां की अवगाहनां ३१। धनुष को ।

चौथी नरकके नेरियां की अवगाहनां ६२॥ धनुषको ।

पांचवों नरकके नेरियां की अवगाहनां १२५ धनुषको ।

छट्ठो नरकके नैरियां की अवगाहनां २५० धनुष को ।

सातवों नरकके नैरियां की अवगाहनां ५०० धनुषको ।

जघन्य सातूंही नारकीको आंगुलको असंख्यातवों भाग, उत्तर वैक्रिय करैतो जघन्य तो आंगुल को ख्यातवों भाग उत्कृष्टो आप आप सूं दूणी ।

देवतांकी अवगाहनां ।

१५ परमाधामी १० भुवनपती, वानव्यंतर,

तेइन्द्री की अवगाहनां ३ कोसकी उत्कृष्टी।

चोइन्द्री की अवगा० ४ कोसकी, उत्कृष्टी।

अनें जघन्य सगले आंगल के असंख्यातवें भाग कहणी। तिर्यंच पंचेन्द्रीकी अवगाहनां जघन्यतो आंगुलनीं असंख्यातवीं भाग उत्कृष्टीः—

१ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजन की।

२ थलचर सन्नी की ६ कोसकी, असन्नी की पृथक् कोसकी।

३ उरपर सन्नी की १००० जोजनकी, असन्नी पृथक् जोजनकी।

४ भुजपर सन्नी की पृथक् कोसकी, असन्नीकी पृथक् धनुषकी।

५ खेचर सन्नी असन्नी की पृथक् धनुषकी तिर्यंच पंचेन्द्री उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य आंगुलकि संख्यात में भाग उत्कृष्टी ९०० जोजनकी करै, मोटी अवगाहननां वालो उत्तर वैक्रिय करै नहीं। असन्नी मनुष्यनीं अवगाहना जघन्य उत्कृष्टी आंगुलकि असंख्यातमें भाग।

॥ सन्नी मनुष्यकी अवगाहना ॥

५ भरत ५ ऐरवतके मनुष्यांकी, अवसर्पिणीके पहिले आरै लागतां ३ कोसकी उतरतां २ कोसकी,

दूजे आरे लागतां २ कोसकी उतरतां १ कोसकी ३
तीजे आरे लागतां १ कोसकी उतरतां ५०० धनुषकी,
चौथे आरे लागतां ५०० धनुषकी उतरतां ७ हाथकी
पांचवें आरे लागतां ७ हाथकी उतरतां १ हाथकी
छट्ठे आरे लागतां १ हाथकी उतरतां १ हाथ मूंठरी
आणवी।

इसीतरे उत्सर्पिणीमें चढती कहणी। वैक्रिय लाख जोजन झाझेरी करे। ५ हेमवय ५ एरणवयका युगलिया को १ कोसकी, ५ हरिवास ५ रम्यकवासका को २ कोसकी, ५ देवकुरु ५ उत्तर कुरुकांकी ३ कोसकी, महा विदेह क्षेत्रका मनुष्यांकी ५०० धनुष की, ५६ अंतरद्वीपा युगलियांकी ८०० धनुषकी।

सिद्धांकी जघन्य १ हाथ ८ आंगुलकी उत्कृष्टी ३३३ धनुष १ हाथ ८ आंगुल की।

[illegible]

३ तीसरो संघयणका द्वार।

में संघयण १ छेवटो, गर्भज मनुष्य, तिर्यंच में संघयण पावै, ६ छउं हीं ।

युगलिया तिर्यंच मनुष्यमें संघयण १ वज्रऋषभ नाराच सिद्धांमें संघयण पावै नहीं ।

॥ इति संघयण द्वारम् ॥

चोथो संठाण द्वार ।

संस्थान ६ तेहनां नाम समचोरंस १, निग्रव परिमंडल २ सादिज ३ वामन ४ कुब्ज ५ हुंडक ६

७ सात नारकी—

५ थावर, ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंचमें संठाण हुंडक । तिणमें पांच थावरको विगत । पृथ्वी काय को चंद मसूरकी दाल अप्प कायको बुदबुदो,

तेऊ कायको सूईको भारनालो ।

वाऊ कायको ध्वजा पताका ।

वनस्पतिका नाना प्रकारका ।

सर्व देवता सर्व युगलिया तथा तेसठ शलाका पुरुषा में समचोरंस संस्थान;

गर्भज मनुष्य तिर्यंचमें ६ छउंहीं, सिद्धामें पावै नहीं,

॥ इति संठाण द्वारम् ॥

५ पांचमूं कषाय द्वार ।

कषाय ४ क्रोध, मान, माया, लोभ । २४ दंडकमें कषाय ४ पावै, मनुष्य अकषाई पणहोय तिवारे कषाय नहीं ।

॥ इति कषाय द्वारम् ॥

६ छठो संज्ञा द्वार ।

संज्ञा ४ आहार संज्ञा १ भय संज्ञा २ मैथुन संज्ञा ३ परिग्रह संज्ञा ४।२४ दंडकामें संज्ञा ४ पावै मनुष्य असंज्ञी वहुता पणहोय, तिवारे संज्ञा नहीं ।

॥ इति संज्ञा द्वारम् ॥

७ सातमूं लेश्या द्वार ।

सातमी में पावे १ महाकृष्णा, भवनपति, वान-व्यंतर, देवतां में लेश्या पावे ४ पद्म शुक्ल टली (द्रव्य लेखवी)

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकायमे तथा सर्व युगलिया में लेश्या पावै ४ प्रथम ।

तेऊ वाऊकाय, ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य, तिर्यंच, मे लेश्या पावे ३ माठी ।

जोतषी, पहला दूजा देवलोक तथा पहिला किल्विषी में लेश्या पावे १ तेजू ।

तीजा चोथा, पांचवां देवलोक तथा दूजा कि-ल्विषी में पावे १ पद्म ।

तीजा किल्विषी तथा छट्ठा देवलोक से सर्वार्थ सिद्धतांई पावे १ शुक्ल । कितलाइक मनुष्य अलेसी पणहोय सिद्धां में लेश्या नहीं ।

सन्नी मनुष्य तिर्यंच में लेश्या पावे ६ छउंही ।

॥ इति लेश्या द्वारम् ॥

८ आठमूं इन्द्रिय द्वार ।

इन्द्री ५ श्रोत, चक्षु, घ्राण, रस, फर्श एवं ५ ७ नारकी—सर्व देवता, गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यंच असन्नी मनुष्य में इन्द्री ५ पावे । ५ थावरमे इन्द्री

युगलिया सन्नी होय। ५ थावर ३ विकलेंद्री समूर्छिम मनुष्य समूर्छिम तिर्यंच ए असन्नी होय। मनुष्य नोसन्नी, नोअसन्नी पणहोय, सिद्धसन्नी असन्नी नहीं होय।

॥ इति सन्नी असन्नी द्वारम् ॥

११ इग्यारमूं वेद द्वार।

३—वेद स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ३।

७ नारकी—५ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच में वेद १ नपुंसक होय। भवनपती वानव्यंतर जोतषी पहलो दूजो देवलोक पहला किल्विषी, सर्वयुगलिया में वेद २ स्त्री तथा पुरुष होय। तीजा देवलोक सूं सर्वार्थ सिद्धतांई वेद १ पुरुष होय। गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच, में वेद ३ तीनू होय, मनुष्य अवेदी पणहोय सिद्धांके वेद नहीं।

॥ इति वेद द्वारम् ॥

१२ बारमूं पर्याय द्वार।

पर्याय ६। आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ श्वासो-श्वास ४ भाषा ५ मन ६ पर्याय एवं ६।

७ नारकी देवतामें पावे ५ पर्याय ।

मनभाषा भेली लेखवी । ५ थावर में पर्याय ४ होय पहली, असन्नी मनुष्य में पर्याय ३॥, तीन तो पहली चाथी में श्वासलेवे तो उश्वास नहीं, उश्वास लेवे तो श्वास नहीं, ३ विकलेन्द्री—समुर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्री में पर्याय ५ पावे मन टल्यो, सिद्धामें पर्याय पावै नहो । सन्नी मनुष्य तिर्यंच में पर्याय पावे ६ ।

॥ इति पर्याय द्वारम् ॥

१३ तेरमूं दृष्टि द्वार ।

दृष्टि ३ सम्यक्‌दृष्टि १ मिथ्यादृष्टि २ समामिथ्यादृष्टि ३ एवं ३ होय ।

७ नारकी १२ बारमां देवलोक तांई देवता गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यंच में दृष्टि ३ तीनूं ही होय, ५ थावरमें असन्नी मनुष्य, में ५६ अंतरद्वीप का युगलियामें दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि पावे, ९ ग्रैवेयकका देवतामें ३ विकलेन्द्रीमें, असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रीमें ३० अकर्म भूमिका युगलियामें दृष्टि २ सम्यक् १ मिथ्या २ पावे, । ५ अनुत्तर विमानका देवता, सिद्धामें दृष्टि १ सम्यक् पावै ।

॥ इति दृष्टि द्वारम् ॥

१४ चौदमूं दर्शन द्वार ।

दर्शन ४ चक्षु १ अचक्षु २ अवधि ३ और केवल एवं दर्शन ४ जाणो ।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज तिर्यंचमें दर्शन ३ पावे चक्षु १ अचक्षु अवधि ३ । गर्भज मनुष्य में दर्शन ४ होय, ५ थावर बेइन्द्री, तेइन्द्री, समूर्च्छिम मनुष्य, सर्व युगलियामें दर्शन २ चक्षु १ अचक्षु २ । सिद्धामें १ केवल दर्शन ही पावे ।

॥ इति दर्शन द्वारम् ॥

१५ पंदरमूं ज्ञान द्वार ।

ज्ञान ५ मति १ श्रुत २ अवधि ३ मनःपर्यव ४ केवल ज्ञान एवं ५ ।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज तिर्यंचमें ज्ञान ३ पावे पहला । गर्भज मनुष्यां में ज्ञान ५ पावे । ५ थावर असन्नी मनुष्य ५६ अंतरद्वीप का युगलियामें ज्ञान नहीं पावे । ३ विकलेन्द्री असन्नी पंचेंद्री तिर्यंचमें, ३० अकर्म भूमिका युगलिया में ज्ञान २ पावे । मति । श्रुत सिद्धामें १ केवल ज्ञान ही पावे ।

॥ इति ज्ञान द्वारम् ॥

१६ सोलमूं अज्ञान द्वार ।

अज्ञान ३ मति अज्ञान १ श्रुत अज्ञान २ विभंग अज्ञान एवं ३ ।

७ नारकी ८ ग्रैवेयकतांई का देवता गर्भज तिर्यंच गर्भज मनुष्य में अज्ञान ३ ही पावे । ५ थावर ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच, पंचेन्द्री, सर्व युगलियामें अज्ञान २ पावे मति अ० १ श्रुत अ० २। ५ अनुत्तर का देवता में सिद्धा में अज्ञान पावे नहीं ।

॥ इति अज्ञान द्वारम् ॥

१७ सतरमूं योग द्वार ।

योग १५ मनका ४ सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र-मन ३ व्यवहार मन एवं ४। वचनका जोग ४ सत्य वचन १ असत्य वचन २ मिश्र वचन ३ व्यवहार वचन एवं ४। कायाका जोग ७ औदारिक १ औदारिक को मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रियको मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिकको मिश्र ६ कार्मण ७ एवं १५

७ नारकी सर्व देवता में योग पावे ११ मनका ४ वचनका ४ वैक्रिय ९ वैक्रियको मिश्र १० कार्मण सर्व युगलिया में योग पावे ११ मनका ४ वचनका

४ औदारिक ८ औदारिकको मिश्र १० कार्मण ११। वाउकाय वरजीनें, ४ स्थावर असन्नी मनुष्यमें योग पावै ३ औदारिक औदारिकको मिश्र कार्मण वाउकायमें जोग पावै ५ औदारिक १ औदारिक को मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय को मिश्र ४ कार्मण ५। ३ विकलेंद्री असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रीमें पावै ४ औदारिक १ औदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कार्मण ४। गर्भज तिर्यंच में पावै १३ आहारक आहारकको मिश्र टल्या, गर्भज मनुष्या में पावै १५ ही, चौदमें गुणठाणें अजोगी होय। सिद्धांमें जोग पावै नहीं।

॥ इति योग द्वारम् ॥

१८ अठारमूं उपयोग द्वार।

७ नारकी ९ नवग्रैवेयकतांई का देवता गर्भज तिर्यंचमें उपयोग पावै ९ ज्ञान तो ३ मति श्रुत अवधि, अज्ञान ३ मति अज्ञान श्रुत अज्ञान विभंग अज्ञान, दर्शन ३ चक्षु अचक्षु अवधि।

५ थावर में पावै ३ मति श्रुत अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

असन्नी मनुष्य तथा ५६ अंतरद्वीप का युगलिया में उपयोग पावै ४ मति श्रुत अज्ञान तथा चक्षु अचक्षु दर्शन।

बेइन्द्री तेइन्द्रीमें उपयोग पावे ५ मति श्रुत ज्ञान मति श्रुत अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

चौइन्द्री—असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री ३० अकर्म भूमि का जुगलियामें उपयोग पावे ६ मति श्रुत ज्ञान मति श्रुत अज्ञान चक्षु अचक्षु दर्शन एवं ६। पांच अणूत्तर विमाण मे पावे ६ तीन ज्ञान तीन दर्शन।

गर्भज मनुष्यां में उपयोग पावे १२ सिद्धां में उपयोग पावे २ केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २।

॥ इति उपयोग द्वारम् ॥

१६ उगणीसमूं आहार द्वार।

उगणीस दंडक का जीव तो छउंही दिशाको आहार लेवे।

पांच थावर तीन च्यार पांच छव दिशिको आहार लेवे।

केतला मनुष्य अणआहारीक पण होय सिद्ध भगवंत आहार लेवे नहीं।

॥ इति आहार द्वारम् ॥

२० बीसमूं उत्पत्ति द्वार ।

७ नारकी, आठवां देवलोक तांई का देवता तेउ, वाऊ काय ३ विकलेंद्री असन्नी मनुष्य तिर्यंच सर्व युगलिया में उत्पत्ति पावे गति २ की मनुष्य तिर्यंच ।

नवमां देवलोक से सर्वार्थ सिद्धतांई का देवतामें उत्पत्ति पावे १ मनुष्य गतिकी ।

पृथ्वी अप्प वनस्पति काय में उत्पत्ति पावे ३ गतिकी (नारकी टली)

गर्भज मनुष्य तिर्यंच में उत्पत्ति ४ च्यारूं ही गतिकी ।

सिद्धांमें १ मनुष्य गतिकी ।

॥ इति उत्पत्ति द्वारम् ॥

२१ इकवीसमूं स्थिति द्वार ।

की की स्थिति

१ पहली नारकी की स्थिति जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १ सागरकी ।

२ दूसरी नारकी की जघन्य १ सागरकी उत्कृष्टि ३ सागरकी ।

३ तीसरी नारकी की जघन्य ३ सागर उत्कृष्टि ७ सात सागरकी ।

४ चोथी नारकी की जघन्य ७ सागरकी उत्कृष्टि १० सागर की ।

५ पांचमी की जघन्य १० उत्कृष्टि १७ सागरकी

६ छट्ठी नारकी की जघन्य १७ उत्कृष्टि २२ सागरकी ।

७ सातमी नारकीकी जघन्य २२ उत्कृष्टि ३३ सागर

भवन पति देवतांकी स्थिति—

दक्षिण दिशिका असुर कुमार की जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १ सागरकी, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्टि ३॥ पल्योपमकी ।

दक्षिण दिशिका ९ नौ निकायका देवतां की जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १॥ पल्योपम की, यांकी देव्याकी जघन्य १० हजार वर्ष उत्कृष्टी पौण पल्योपमकी ।

उत्तर दिशिका असुर कुमारकी जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १ सागर जाझेरी यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्टि ४॥ साडा च्यार पल्योपमकी ।

उत्तर दिशिका ९ भी निकायका देवतांकी जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि देश उणों दोय पल्योपमकी देव्यांकी ज० १० हजार वर्षकी । उत्कृष्टि देश उणां १ पल्य० ।

वाणव्यन्तर देवतांकी स्थिति ।

जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १ पल्योपमकी, यांकी देव्यांकी जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्टि ॥ आधा पल्योपमकी तिर्जूमका देवांकी भी इतनी हो ।

जोतषी देवांकी स्थिति ।

चन्द्रमांकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टी १ पल्योपम १ एक लाख वर्ष अधिक, यांकी देव्यांकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टि आधा पल्य ५० हजार वर्षकी, सूर्यकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टि १ पल्योपम १ हजार वर्ष अधिक, यांकी देव्यांकी जघन्य पाव पल्याकी उत्कृष्टि आधी पल्य पांचसो वर्ष अधिक । ग्रहांकी ज० पाव पल्याकी उ० १ पल्याकी यांकी देव्यांकी ज० पाव पल्य उत्कृष्टि ॥ आधी पल्योपमकी ।

नक्षत्राकी ज० पाव पल्य उ० ॥ आधी पल्यकी यांकी देव्यांकी ज० पाव पल्य, उत्कृष्टि पाव पल्य जाझेरी ।

तारांकी ज० पल्यको आठमूं भाग उ० पाव पल्यकी यांकी देव्यांकी ज० अधपाव पल्य उत्-कृष्टि अधपाव जाझेरी ।

वैमानिक देवतां की स्थिति ।

१ पहला देवलोक में ज० १ पल्योपम उत्कृष्टि २ सागर की, यांकी परिग्रहि देव्यांकी ज० १ पल्य उ० ७ पल्य, अपरिग्रहि देव्यांकी ज० १ पल्य उ० ५० पल्योपमकी ।

२ दूसरा देवलोक में ज० १ पल्य जाझेरी उ० २ सागर जाझेरी, यांकी देव्यांकी ज० १ पल्य जाझेरी उ० परिग्रही की ९ पल्यकी अपरिग्रही की ५५ पल्योपम की ।

३ तीसरा देवलोकमें ज० २ सागर उ० ७ सागर की,

४ चोथा देवलोक की ज० २ सागर जाझेरी उत्कृष्टी ७ सागर जाझेरी ।

५ पांचवांकी ज० ७ सागर उ० १० सागरकी ।

६ छट्ठा देवलोक का देवतांकी ज० १० सागर उ० १४ सागर की।

७ सातमां की ज० १४ उ० १७ सागर की।

८ आठमां की ज० १७ उ० १८ सागर की।

९ नवमां की ज० १८ उ० १९ सागर की।

१० दशमां की ज० १९ उ० २० सागर की।

११ इग्यारमां की ज० २० उ० २१ सागर की।

१२ बारवां की ज० २१ उ० २२ सागर की।

१३ पहिला ग्रैवेयक की ज० २२ उ० २३।

१४ दूसरा ग्रैवेयक की ज० २३ उ० २४।

१५ तीसरा ग्रैवेयक की ज० २४ उ० २५।

१६ चोथा ग्रैवेयक की ज० २५ उ० २६।

१७ पांचमां ग्रैवेयक की ज० २६ उ० २७।

१८ छट्ठा ग्रैवेयक की ज० २७ उ० २८।

१९ सातमां ग्रैवेयक की ज० २८ उ० २९।

२० आठमां ग्रैवेयक की ज० २९ उ० ३०।

२१ नवमां ग्रैवेयक की ज० ३० उ० ३१।

.२ विजय, १ वैजयन्त, २ जयन्त ३।

२५ अपराजित, ४ ए च्यार अनुत्तर वैमानकी ज० ३१ उ० ३३ सागर।

२६ सर्वार्थ सिद्धिका देवांकी ज० ३३ उ० ३३ सागर।

नव लोकान्तिक देवतांकी स्थिति ८ सागरकी,

पांच स्थावरकी स्थिति ज० अंतर मुहूर्त्तकी उत्कृष्टि पृथ्वी कायकी २२ हजार वर्षकी, अप्पकाय की ७ हजार वर्षकी, तेउकायकी ३ दिन रातकी, वाउकायकी ३ हजार वर्षकी, वनस्पति कायकी १० हजार वर्षकी ।

तीन विकलेंद्री की ज० अन्तर मुहूर्त्त की उत्कृष्टी बेइन्द्रीकी १२ वर्षकी, तेइन्द्रीकी ४९ दिन रातकी, चोइन्द्री की ६ महीनाकी । तिर्यंच पंचेन्द्री की ज० अंतर मुहूर्त्तकी उत्कृष्टी जलचर की १ क्रोड़ पूर्व की, थलचर सन्नीकी ३ पल्योपमकी असन्नीकी ८४ लाख वर्षकी, उरपुर सन्नीकी १ क्रोड़ पूर्वकी असन्नीकी ५३ हजार वर्षकी, भुजपुर सन्नीकी क्रोड़ पूर्वकी असन्नी की ४२ हजार वर्षकी, खेचर सन्नीकी पलोपमके असंख्यात में भाग असन्नीकी ७२ हजार वर्षकी । असन्नी मनुष्यकी ज० उ० अन्तर मुहूर्त्तकी । सन्नी मनुष्य की स्थिति ।

५ भरत ५ एरवतका मनुष्यां की पहिलो आरो लागतां ३ पलाकी उतरतां २ पलाकी, दूसरो लागतां २ पलाकी उतरतां १ पलाकी, तीसरो लागतां १ पलाकी उतरतां क्रोड़ पूर्वकी, चोथो

आवो लागतां क्रोड़ पूर्वको उतरतां १२५ वर्षको पांचमूं लागतां १२५ वर्षको उतरतां २० वर्ष को छट्ठो लागतां २० वर्षको उतरतां १६ वर्ष को। उत्सर्पिणी कालमें इमहिज चढती कहणी पांच महाविदेह खेत्रांको जघन्य अन्तर मुहूर्त्त उत्कृष्टि १ क्रोड़ पूर्वको स्थिति।

युगलियां को स्थिति।

५ हैमवय ५ अरणवयकां को जघन्य देश उंणो एक पल्यको उत्कृष्टो १ पल्यको।

५ हरीवास ५ रम्यकवासकां को जघन्य देशउंणो दोय पल्यको उत्कृष्टो २ पल्यको।

५ देवकुरु ५ उत्तरकुरुकां को जघन्य देशउंणो तीन पल्यको उत्कृष्टो ३ पल्यको।

५६ अन्तर द्वीपका युगलियाको पल्योपम को असंख्यात मूं भाग को।

एक एक सिद्धांको आदि नहीं अन्त नहीं एक एक को आदि छै पण अन्त नहीं।

॥ इति स्थिति द्वारम् ॥

२२ बाइसमूं समोह्या असमोह्या द्वार।

समोह्यातो समुद्घात फोड़ी ताणावेजो करी मरे, असमोह्या बिना समुद्घाते गोलीका भड़ाकावत् मरे।

२४ दंडकां का जीव दोनूं प्रकारका मरण करे। सिद्धामें मरण नहीं।

॥ इति समोह्या असमोह्या द्वारम् ॥

२३ मूं चवन द्वार।

६ नारकी आठमां देवलोक तांई का देवता पृथ्वी अप्प वनस्पति काय ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य में चवन दोय गतिकी मनुष्य तिर्यंच की।

नवमां देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध तांई का देवता में चवन १ मनुष्यकी सातमी नारकी मे तथा तेउ वाउमें चवन १ तिर्यंच गतिकी।

गर्भज मनुष्य तिर्यंच, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रीमें चवन च्यारूं ही गतिकी युगलियामे चवन १ देव गतिकी सिद्धां मे चवन पावे नहीं।

॥ इति चवन द्वारम् ॥

२४ मूं गतागति द्वार।

पहिली सें छट्ठी नारकी तांई गति २ दंडक आगति २ दंडकांकी मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्री,।

सातमी नारकी की आगति २ दंडकाकी मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्री की, गत एक तिर्यंचकी जाणवी।

आवो लागतां क्रोड़ पूर्वकी उतरतां १२५ वर्षकी पांचमूं लागतां १२५ वर्षकी उतरतां २० वर्ष की छट्ठो लागतां २० वर्षकी उतरतां १६ वर्ष की। उतसर्पिणी कालमें इमहिज चढती कहणी पांच महाविदेह खेत्रांकी जघन्य अन्तर मुहूर्त्त उत्कृष्ट १ क्रोड़ पूर्वकी स्थिति।

युगलियां की स्थिति।

५ हैमवय ५ अरुणवयकां की जघन्य देश उंणो एक पलाकी उत्कृष्टी १ पलाकी।

५ हरीवास ५ रम्यकवासकां की जघन्य देशउंणो दोय पलाकी उत्कृष्टी २ पलाकी।

५ देवकुरु ५ उत्तरकुरुकां की जघन्य देशउंणो तीन पलाकी उत्कृष्टी ३ पलाकी।

५६ अन्तर द्वीपका युगलियाकी पलोपम को असंख्यात मूं भाग की।

एक एक सिद्धांकी आदि नहीं अन्त नहीं एक एक की आदि छै पण अन्त नहीं।

॥ इति स्थिति द्वारम् ॥

२२ बाइसमूं समोह्या असमोह्या द्वार।

समोह्यातो समुद्घात फोड़ी ताणावेजो करी मरे, असमोह्या बिना समुद्घाते गोलीका भड़ाकावत् मरे।

आगो लागतां क्रोड़ पूर्वको उतरतां १२५ वर्षको पांचमूं लागतां १२५ वर्षको उतरतां २० वर्ष को छट्ठो लागतां २० वर्षको उतरतां १६ वर्ष को। उत्सर्पिणी कालमें इमहिज चढती कहणी पांच महाविदेह खेत्रांको जघन्य अन्तर मुहूर्त्त उत्कृष्ट १ क्रोड़ पूर्वको स्थिति।

युगलियां की स्थिति।

५ हेमवय ५ अरणवयकां की जघन्य देश उंणी एक पल्यकी उत्कृष्टी १ पल्यकी।

५ हरीवास ५ रम्यकवासकां की जघन्य देशउंणी दोय पल्यकी उत्कृष्टी २ पल्यकी।

५ देवकुरू ५ उत्तरकुरूकां की जघन्य देशउंणी तीन पल्यकी उत्कृष्टी ३ पल्यकी।

५६ अन्तर द्वीपका युगलियाकी पल्योपम को असंख्यात मूं भाग की।

एक एक सिद्धांकी आदि नहीं अन्त नहीं एक एक की आदि छै पण अन्त नहीं।

॥ इति स्थिति द्वारम् ॥

२२ बाइसमूं समोह्या असमोह्या द्वार।

समोह्याती समुद्घात फोड़ी ताणावेजो करी मरे, असमोह्या बिना समुद्घाते गोलीका भड़ाकावत् मरे।

२४ दंडकां का जीव दोनूं प्रकारका मरण करे। सिद्धांसें मरण नहीं।

॥ इति समोहिया असमोहिया द्वारम् ॥

२३ मूं चवन द्वार।

६ नारकी आठमां देवलोक तांई का देवता पृथ्वी अप्प वनस्पति काय ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य में चवन दोय गतिको मनुष्य तिर्यंच को।

नवमां देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध तांई का देवता से चवन १ मनुष्यको सातमी नारकी मे तथा तेउ वाउमे चवन १ तिर्यंच गतिको।

गर्भज मनुष्य तिर्यंच, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रीमे चवन च्यारूं ही गतिको युगलियांसे चवन १ देव गतिको सिद्धां मे चवन पावे नहीं।

॥ इति चवन द्वारम् ॥

२४ मूं गतागति द्वार।

पहिली सें छट्ठी नारकी तांई गति २ दंडक आगति २ दंडकांकी मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्री,।

सातमी नारकी की आगति २ दंडकको मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्री की, गत एक तिर्यंचकी जाणवी।

भवनपति वानव्यंतर जोतषी पहिला दूजा देव-लोक तथा पहिला कल्विषिक देवतांको आगत २ दंडकां की (मनुष्य तिर्यंच की) गति ५ दंडकांकी (तिर्यंच मनुष्य पृथ्वी अप्प वनस्पतिकी)

तीजा देवलोक से आठमां देवलोक तांई गता गत २ दंडका की (मनुष्य तिर्यंच) नवमां देव-लोकसे सर्वार्थ सिद्धि तांई गतागत १ मनुष्य की,

पृथ्वी अप्प वनस्पति कायकी आगत २३ दंड-कांकी (नारकी टली) गति १० दण्डकांकी ५ स्थावर ३ विकलेन्द्री मनुष्य ९ तिर्यंच एवं १० की,

तेउ वाउकायमें आगत १० दण्डकांकी, उपरवत् गति ९ दण्डकांकी मनुष्य टलगो; ३ विकलेन्द्रीमें १० की आगत १० की गति उपर वत् ।

असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में आगति १० दण्डकां की उपर वत् गति २२ दण्डकाकी जोतषी वैमानिक टलो ।

सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रीमें आगति २४ की गति २४

असन्नी मनुष्य में आगत ८ दण्डकांकी, पृथ्वी अप्प वनस्पति तीन विकलेन्द्री मनुष्य तिर्यंच एवं ८ अनें गति १० दण्डकांकी उपरवत् ।

गर्भेज मनुष्य में आगति २२ दण्डकांकी तेउ वाउ टल्यो, गति २४ दण्डकांकी, ३० अकर्म भूमिका युगलियां में आगति २ दण्डकांकी मनुष्य तिर्यंच गति १३ दण्डकांकी १०. तो भवनपति का वान-व्यंतर ११ जोतषी १२ वैमानिक १३ एवं ।

५६ अन्तर द्वीपका युगलियामें आगति २ दण्डकांकी उपरवत् गति ११ दण्डकांकी १० तो भवनपति का १ वानव्यंतर को ११ ।

सिद्धांमें आगति मनुष्य की गति नहीं ।

॥ इति गतागत द्वारम् ॥

२५ मूं प्राण द्वार ।

७ नारकी सर्व देवता गर्भेज मनुष्य तिर्यंचमें प्राण १० दशूं ही पावे, ५ स्थावरमें प्राण ४ पावे स्पर्श इन्द्रीबल १ काया २ श्वासोश्वास ३ आउखो ४ एवं ।

बेइन्द्रीमें पावे ६ तेइन्द्री में पावे ७ चौइन्द्रीमें पावे ८ प्राण ।

असन्नी मनुष्य में पावे ७॥

असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में ९ मन टल्यो ।

१३ में गुणठाणे पावे ५, पांच इन्द्रियांका टल्या ।

१४ में गुणठाणे पावे १ आउखो बलप्राण सिद्धांमें प्राण पावे नही ।

॥ इति प्राण द्वारम् ॥

२६ मूं योग द्वार ।

नारकी देवता मनुष्य सन्नीतिर्यंच युगलिया में जोग पावे ३ मन वचन काय का ।

पांच स्थावर असन्नी मनुष्य में १ काया पावे ।

तीन विकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्रीमें जोग पावे २ वचन काया ।

केतला मनुष्य अयोगी होय सिद्धांमें जोग पावे नही ।

॥ इति लघु दंडकम् ॥

॥ अथ बावनबोल को थोकड़ो ॥

१ पहिलै बोलै ८ आत्मा में कर्मां री करता किती ? रोकता किती ? तोड़ता किती आत्मा ? करता तो ३ तीन आत्मा—कषाय, जोग, दर्शन। रोकता २ दोय आत्मा—दर्शन, चारित्र। तोड़ता एक जोग आत्मा।

दूजै बोलै ८ आत्मा में द्रव्य जीव केती ? भाव जीव केती ?

१ द्रव्य जीव एक द्रव्य आत्मा।

७ भाव जीव सात आत्मा

३ तीजै बोलै आठ आत्मामें उदय भावकेती ? यावत परिणामीक भाव केती आत्मा ?

३ उदय भाव तीन—कषाय, जोग दर्शन।

२ उपसम भाव दोय—दर्शन, चारित्र।

६ क्षायक क्षयोपशम छव आत्मा द्रव्य कषायटलो

८ परिणामिक भाव आठ आत्मा।

४ चौथे बोलै आठ आत्मा में सास्वती केती ? असास्वती केती ?

१ साखती तो एक द्रव्य आत्मा ।

७ असाखती सात आत्मा ।

५ पांचमें बोले आठ आत्मा में सावद्य केती ? निर्वद्य केती ?

१ द्रव्य आत्मा तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं :

१ कषाय आत्मा सावद्य छै ।

२ जोग तथा दर्शन आत्मा सावद्य निर्वद्य दोनूं छै ।

४ ज्ञान, चारित्र, वीर्य, उपयोग, ए च्यार आत्मा निर्वद्य छै ।

छट्ठे ६ बोले आठ आत्मा में जाणे किसी ? देखे किसी ? सरधै किसी आत्मा ?

जाणें तो ज्ञान तथा उपयोग आत्मा, देखे उपयोग आत्मा ।

सरधै दर्शन आत्मा ।

काला जाणै उपयोग आत्मा, करै जोग आत्मा, कर्म रोकै चारित्र आत्मा, तोडै जोग आत्मा, शक्ति वीर्य आत्माकी ।

७ सातमें बोले उदयका ३३ (तेतीस) बोलामे सावद्य केता ? निर्वद्य केता ?

१६ सोलै बोलतो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं ; ते कहेछै च्यार गति ४, छव काय १०, असन्नी

११, अनाणी १२, संमारता १३, असिद्ध १४, अकेवली १५, छद्मस्थ १६ ।

३ तीन भली लेश्या निर्वद्य छै ।

१२ वारे सावद्य छै, तीन माठी लेश्या ३, च्यार कषाय ७, तीनवेद १०, मिथ्याती ११, अव्रती १२,

२ आहारता, संजोगी, ए दोय सावद्य निर्वद्य दोनूं होछे ।

८ आठमे बोलै जीव पदार्थ किसे भाव ? यावत मोक्ष पदार्थ किसै भाव?

१ जीव पदार्थ भाव पांचोंही पावै ।

४ अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ए च्यार पदार्थ भाव १ एक परिणामिक ।

१ आस्रव पदार्थ भाव दोय उदय परिणामिक ।

१ संवर पदार्थ भाव च्यार उदय बरजीनें ।

१ निर्जरा पदार्थ भाव तीन—क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक ।

१ मोक्ष भाव दोय—क्षायक, परिणामिक ।

९ नवमे बोलै उदयका ३३ (तेतीस) बोल किसि किसे कर्मका उदय से तथा किसी आत्मा ? १३ तेरा बोलतो नाम कर्मके उदयसे, तिण मे

च्यारगति, ४, छव काय, १०, तीन भली लेश्या १३ ।

१२ बारमें बोल मोहनीय कर्म के उदय से, च्यार कषाय, ४, तीन वेद, ७, तीन माठीलेश्या, १० मिथ्याती, ११, अव्रती, १२ एवं

२ दोय बोल ज्ञानावर्णी कर्मके उदय से—असन्नी अनाणी ।

२ आहारता, संजोगी, ए दोय वाल मोहनीय, नाम, कर्मनां उदयसे ।

२ छद्मस्थ, अकेवली, ए दोय बोल, ज्ञानावर्णी, दर्शणावर्णी, अंतराय, यां तीन कर्मका उदयसे ।

२ संसारता, असिद्धता, ए दोय बोल, च्यार अघातिक कर्मका उदयसे, हिवे आत्मा कहेछे

१७ सतरे बोलतो अनेरी आत्मा—

च्यार गति ४, छव काय १०, अव्रती ११, असन्नी १२, अनाणी १३, संसारता १४, असिद्ध १५, अकेवली १६, छद्मस्थ १७ ।

८ आठ बोल जोग आत्मा—

छव लेश्या ६, आहारता ७, संयोगी ८ ।

४ च्यार कषाय कषाय आत्मा ।

३ तीन वेद कोई कषाय कहै कोई अनेरी कहै।

१ मिथ्याती दर्शन आत्मा।

१० दशमे बोलै जीवनें जीव जाणें यावत मोक्ष नें मोक्ष जाणै ते किसे भाव ?—क्षायक, क्षयोपशम, परिणामीक, ए तीन भाव।

११ इग्यारसें बोलै जीवनें जीव जाणे, यावत मोक्ष ने मोक्ष जाणें; ते किसी आत्मा ? उपयोग अने ज्ञान आत्मा।

१२ बारमे बोलै जीव पदार्थ केती आत्मा ? यावत मोक्ष पदार्थ केती आत्मा ? जीवमें आत्मा पावै आठोंही; अजीव, पुन्य, पाप, वन्ध, आत्मा नहीं। आश्रव ३ (तीन) आत्मा कषाय, जोग दर्शन। संवर २ (दोय) आत्मा दर्शन, तथा चारित्र, निर्जरा आत्मा ५ द्रव्य, कषाय, चारित्र टली। मोक्ष पदार्थ अनेरी आत्मा।

१३ तेरमे बोलै छव मे नव मे कोंण ?
उदय छवमें कोंण, नवमें कोंण? छवमें पुद्गल; नवमें च्यार अजीव, पुन्य, पाप, वंध। उपशम छवमें कोंण नवमें कोंण ? छवमें पुद्गल; नवमें तीन अजीव, पाप, वंध। क्षायक छवमें कोंण ? नवमें कोंण ? छवमें

पुद्गल; नवमें च्यार अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध। क्षयोपशम छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें तीन अजीव, पाप, बंध। परिणामिक छवमें कोण ? नवमें कोण? छवमें छव, नवमें नव।

१४ चौदहमें बोलें उदय निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ? यावत परिणामिक निपन्न छवमें नवमें कोण ?

उदय निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ? छव में जीव; नवमें जीव, आस्रव। उपशम निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर। क्षायक निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव; नवमें ४ जीव संवर, निर्जरा, मोक्ष। क्षयोपशम निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें ३ जीव, संवर, निर्जरा।

परिणामिक निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें छव, नवमें नव।

१५ पंदरहमें बोलें आठ कर्मनों उदय, छवमें नवमें कोण ? ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्मनों उदय तो छवमें

पुद्गल; नवमें तीन, अजीव, पाप, बंध। वेदनी, नाम, गोत, आयु ए च्यार कर्मनों उदय छवमें पुद्गल, नवमें च्यार, अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

१६ सोलहमें बोलै मोहनीय कर्मनों उपशम; छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें तीन, अजीव, पाप बंध। बाकी सात कर्मनों उपशम होवै नहीं।

ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्मनों खायक; छवमें कोण ? नवमें कोण? छवमें पुद्गल; नवमें तीन अजीव, पाप, बंध।

वेदनी नाम गोत ए तीन कर्मनों खायक; छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल नवमें च्यार-अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

आऊखेको खायक छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल ; नवमें तीन अजीव, पुन्य, बंध।

ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनीय, अन्तराय ए च्यार कर्मनों खयोपशम, छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल; नवमें तीन—

बाहै छै, ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, अन्तराय, ए
तीन कर्मनों उदय निपन्न तो पहिलासे बारमां
तांई ।

दर्शन मोहनीयनों उदय निपन्न पहिला से
सातमां तांई ।

चारित्र मोहनीय नों उदय निपन्न पहिला से दशमा
तांई ।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष, च्यार कर्म नों उदय
निपन्न पहिला से चौदमां तांई ।

सात कर्मनों तो उपशम निपन्न होवे नहीं, एक
मोहनीय कर्मनों होय । तिणमें दर्शण मोहनीयनों
उपशम निपन्न तो चौथा से इग्यारमां तांई । चारित
मोहनीयको इग्यारमें गुण ठाणों छो । ज्ञानावर्णी
दर्शनावर्णी, अन्तराय ए तीन कर्मनों क्षायक निपन्न
तेरमें चौदमें गुण ठाणे तथा श्री सिद्ध भगवान में ।
दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा गुण ठाणां
से चौदमां तांई । तथा सिद्ध भगवान में अने चारित
मोहनी को बारमां से चौदमां तांई ।

वेदनी, नाम, गोत, आयु ए च्यार कर्मनों क्षायक
निपन्न गुण ठाणां में पावे नही, श्री सिद्ध भगवान
में पावे ।

ज्ञानावर्णी दर्शनावर्णी अन्तराय ए तीन कर्मनों क्षयोपशम निपन्न तो पहिला से बारमां गुण ठाणां तांई ।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिलां से सातमां गुण ठाणां तांई ।

चारित्र मोहनीयनों क्षयोपशम निपन्न पहिलां से दशमां गुण ठाणां तांई ।

च्यार अघाति कर्मनों क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं ।

२० वीसमे बोले आठ कर्मांसें पुन्य कितना पाप कितना तथा पुन्य कितना से लागे पाप कितना से लागे ?

ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनीय अन्तराय ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै ।

वेदनी, नाम, गोत्र आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै ।

मोहनीय कर्म से तो पाप लागे अने नाम कर्म से पुन्य लागे बाकी छव कर्मां से पुन्य पाप दोनूं नहीं लागे ।

२१ इक्कीस मे बोले आस्रवनां वीस भेद तथा संवरना बीस भेद किसे किसें गुणठाणें कितना कितना पावे ?

आस्रव के २० भेदों की विगत।

पहिले तथा तीजे गुणठाणें तो बीस पावै, दूजै चौथे पांचमें गुणठाणें १९ उगणीस पावै मिथ्यात टल्यो। छट्ठे गुणठाणें १८ अठारे पावै, मिथ्यात तथा अव्रत आस्रव टल्यो। सातमांसे दशमां गुणठाणां तांई ५ पांच आस्रव पावै कषाय, जोग, मन वचन, काया, ए पांच जाणवा। इग्यारमे बारमें तेरमें च्यार पावे कषाय टल्यो। चवदमें आस्रव पावे नहीं। हिवे संबरकी बीस बोलांकी विगत—पहिलासें चौथा गुणठाणां तांई तो संवर पावै नहीं, पांचमें गुणठाणें एक समकित संवर पावै, सम्पूर्ण व्रत ते संवर पावै नहीं।

देस व्रत पावै ते लेख्यो नहीं।

छट्ठे गुणठाणें २ (दोय) पावै समकित व्रतते, सातमांसें दशमां गुणठाणां तांई १५ [पन्दरह] संवर पावै। अकषाय, अजोग, मन, वचन, काया, ए पांच टल्या।

इग्यारमेसे तेरमें गुणठाणां तांई १६ सोलह संवर पावै,। अजोग, मन वचन, काया, ए च्यार टल्या।

चवदमें गुणठाणें २० बीसूं ही संवर पावे ।

२२ बाईस मे बोले चौदा गुणठाणां किस्यो भाव किसो आत्मा ?

पहिलो दूजो तीजो गुणठाणों लो भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मादर्शन चौथो गुणठाणो भाव च्यार—उदय, वरजी नें, आत्मा दर्शण।

पांचमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा देश चारित्र।

छट्ठासे दशमां गुणठाणां तांई भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा चारित्र।

इग्यारमूं गुणठाणों भाव दोय—उपशम परिणामिक, आत्मा उपशम चारित्र।

बारमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षायक परिणामिक, आत्मा क्षायक चारित्र।

तेरमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षायक परिणामिक, आत्मा उपयोग।

चौदमूं गुणठाणों भाव परिणामिक आत्मा अनेरी।

२३ तेवीसमे बोले धर्म अधर्म किस्यो भाव किसो आत्मा ?

धर्म भाव ४ (च्यार) उदय टाली; आत्मा तीन; दर्शन; चारित्र; जोग। अधर्म भाव दोय उदय परिणामिक; आत्मा ३ तीन; कषाय; जोग; दर्शन।

२४ चोबीसमें बोले दया हिन्सा किस्यो भाव किसी आत्मा।

दया भाव ४ (च्यार) उदय बरजीने; आत्मा २ (दोय) चारित्र, जोग ?

हिन्सा भाव २ (दोय) उदय परिणामिक आत्मा जोग; छवसे नवसें का बोल कहना।

२५ पच्चीसमें बोले शुभजोग अशुभ जोग किस्योभाव; किसी आत्मा।

शुभ जोग भाव च्यार—उपशम, बरजीने आत्मा जोग।

अशुभ जोग भाव दोय—उदय परिणामिक; आत्मा जोग। छवसें नवसे का बोल कहणा।

२६ छवीसमें बोले ब्रत अब्रत किस्यो भाव किसी आत्मा ?

ब्रत भाव ४ (चार) उदय, बरजीनें, आत्मा, चारित्र। अब्रत भाव २ (दोय) उदय परिणामिक आत्मा अनेरी।

२७ सत्तावीसमें बोलै पंचव्रत पंच समिति तीन गुप्त किसो भाव किसी आत्मा ?

पंच महाव्रत तीन गुप्त तो भाव ४ (च्यार) उदय, वरजी; आत्मा, चारित्र ।

पांच समति भाव तीन—क्षायक; क्षयोपशम-परिणामिक, आत्मा, जोग ।

२८ अठावीसमे बोलै १२ (बारे) व्रत किस्यो भाव किसी आत्मा ?

भाव क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा देशचारित्र ।

२६ उगणतीसमे बोलै समकित मिथ्यात्व किस्यो भाव किसी आत्मा ? समकित भाव च्यार---उदय; वरजीनें, आत्मा, दर्शन । मिथ्यात्व भाव उदय परिणामिक, आत्मा दर्शन ।

३० तीसमें बोलै ज्ञान अज्ञान किसो भाव किसी आत्मा—

ज्ञान भाव ३ (तीन) क्षायक क्षयोपशम परिणामिक आत्मा, उपयोग, ज्ञान । अज्ञान भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामिक आत्मा उपयोग ।

३१ इकत्तीसमें बोलै द्रव्यजीव भावजीव किस्यो भाव किसी आत्मा—

द्रव्य जीव भाव एक परिणामिक; आत्मा द्रव्य

भाव जीव भाव पांचोंही; आत्मा द्रव्य वरजीनें सात। छवमें नवमें बोल कहणा।

३२ बत्तीसमें बोले अठारे पाप ठाणांरो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम छवमें कोण नवमें कोण।

छवमें पुद्गल, नवमें तीन अजीव; पाप; बंध।

३३ तेतीसमें बोले अठारे पाप ठाणांरो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम निपन्न छवमें कोण नवमें कोण ?

उदय निपन्न छवमें जीव नवमें जीव आस्रव।
उपशम निपन्न छवमें जीव नवमें जीव सम्वर।
सतरा (१७) कोतो क्षायक निपन्न छवमें जीव नवमें जीव संवर, एक मिथ्या दर्शन सल्य को छवमें जीव नवमें जीव संवर, निर्जरा। क्षयोपशम निपन्न छवमें जीव नवमें जीव सम्वर निर्जरा।

३४ चोवीसमें बोले बारह व्रत को द्रव्य क्षेत्र काल भाव राखे तेहनी विगत।

पहिला व्रतसे आठमां व्रत तांई तो द्रव्य थकी आगार राखे ते द्रव्य उपरान्त त्याग, क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रमें, काल थकी जावजीव, भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा। नवमें व्रतमें द्रव्य क्षेत्र उपर परिमाण

कालथकी एक मुहूर्त भाव थी राग द्वेष रहित, उपयोगसहित, गुण थकी संबर निर्जरा।

दशमूं ब्रत द्रव्य क्षेत्र भाव गुणतो उपर परिमाणे, कालथकी राखै जितनो काल। इग्यारमों ब्रत को द्रव्य क्षेत्र भाव गुणतो उपर परिमाणे कालथकी अहोरात्रि परिमाण।

बारमूं ब्रत को द्रव्य थकी साधुजी नें कल्पै ते चवदे प्रकारनो द्रव्य, क्षेत्र थकी कल्पै ते क्षेत्रमें कालथकी कल्पै ते कालमे; भावथकी रागद्वेष रहित, गुणथकी संबर निर्जरा।

३५ पैंतीसमे बोलै नव पदार्थमें निजगुण कितना परगुण कितना ?

निज गुणतो पांच। जीव, आस्रव, संबर, निर्जरा, मोक्ष।

परगुण ४ (च्यार)। अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

३६ छत्तीसमे बोलै दर्शन मोहनीय कर्मको उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम कितना गुण ठाणां पावै। दर्शन मोहनीय को उदय निपन्न पहिला गुणठाणांसि सातमां तांई, चारित्र मोहनीय को उदय निपन्न पहिलासि दशमां तांई।

चारित्र मोहनीयको उपशम निपन्न एक इग्यारमें
ही गुणठाणां तांई ।

दर्शन मोहनीय को उपशम निपन्न चौथा से
इग्यारमें गुणठाणां तांई ।

दर्शन मोहनीय को चायक निपन्न चौथा से
चवदमें गुणठाणें तथा सिद्धामें ।

चारित्र मोहनीय को चायक निपन्न बारमें तेरमें
चवदमें गुणठाणें ।

दर्शन मोहनीय को चयोपशम निपन्न पहिला
से सातमां गुणठाणें तांई ।

चारित्र मोहनीय को चयोपशम निपन्न पहिला
से दशमां गुणठाणां तांई ।

३७ सेंतीसमें बोलै आठ आत्मांमें मूलगुण कितनी
उत्तर गुण कितनी—

मूल गुण एक चारित्र आत्मा, उत्तर गुण एक
जोग आत्मा। बाकी दोनूं नहीं ।

३८ अड़तीसमे बोलै आठ आत्मा किस्यो भाव किसी
आत्मा—आत्मातो आप आपरी, द्रव्य आत्मा
तो भाव एक परिणामिक, कषाय आत्मा भाव
दोय उदय परिणामिक, जोग आत्मा भाव च्यार

उपशम बरजीने, उपयोग ज्ञान वीर्य ए तीन आत्मा भाव तीन चायक क्षयोपशम परिणामिक दर्शन आत्मा भाव पांचोंही।

चारित्र आत्मा भाव च्यार उदय बरजी।

३९ गुणचालीसमे बोलै आठ आत्मा छवमें कोण नवमें कोण।

द्रव्य आत्मा छवमे जीव नवमें जीव, कषाय आत्मा छवमें जीव नवमें जीव आस्रव। योग आत्मा छवमें जीव नवमें जीव आस्रव निर्जरा। उपयोग, ज्ञान, वीर्य ये तीन आत्मा छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा।

दर्शन आत्मा छवमें जीव नवमें जीव आस्रव संवर निर्जरा।

चारित्र, आत्मा, छवमें जीव नवमें जीव संवर।

४० चालीसमें बोलै आस्रवका (बीस) २० बोल किस्यो भाव किसी आत्मा।

भाव तो उदय परिणामिक बीसुं ही बोल। मिथ्याती दर्शन आत्मा; अव्रत प्रमाद अनेरी आत्मा। कषाय-कषाय आत्मा बाकी सोलै आस्रव योग आत्मा।

४१ एकचालीसमें बोलें संवरना २० (बीस) बोल किस्यो भाव किसी आत्मा ।
अकषाय संवर भाव तीन उपशम चायक परिणामिक; आत्मा अनेरी ।
अजोग मन वचन काया ए चार संवर भाव एक परिणामिक आत्मा अनेरी । सम्यकते संवर भाव ४ (च्यार) उदयवरजीनें; आत्मा दर्शन । अप्रमादी संवर भाव चार उदयवरजी आत्मा अनेरी । बाकी १३ (तेरा) संवर का बोल भाव ४ (च्यार) उदयवरजीनें आत्मा चारित्र ।

४२ बयालीसमें बोलें पंदरह जोग किस्यो भाव किसी आत्मा; जीव, अजीव तथा रूपी अरूपी की विगत ।

भावकी विगत ।

सत्यमन जोग सत्य भाषा व्यवहार मन व्यवहार भाषा, औदारिक ए पांच जोग भाव चार उपशम वरजीनें ।
औदारिकको मिश्र; कार्मण ए दोय जोग भाव तीन उदय चायक परिणामिक ।
असत्य मनजोग, मिश्रमनजोग, असत्य भाषा,

मिश्र भाषा वैक्रियनोमिश्र, आहारिकनूं मिश्र ए छव जोग भाव दोय उदय परिणामिक, आहारिक वैक्रिय दोय जोग भाव ३ । उदय क्षयोपशम परिणामिक—

सावद्य निर्वद्य कितना ।

असत्य मन योग असत्य भाषा मिश्र मन योग मिश्र भाषा, आहारिकनूं मिश्र, वैक्रिय नूं मिश्र ए छव योग तो सावद्य छै बाकी नव योग सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।

पन्दरह योग जीवकि अजीव द्रव्ये अजीव भावे जीव ।

पन्दरह योग रूपी कि अरूपी द्रव्ये रूपी भावें अरूपी ।

४३ तयांलीसमें बोलै पांच इन्द्रियां की पृच्छा पांच इन्द्री जीवकि अजीव ? द्रव्यें अजीव भावे जीव। पांच इन्द्री रूपी कि अरूपी ? द्रव्ये रूपी भावे अरूपी । पांच इन्द्रियां कामी कितनी भोगी कितनी ? कामी तो दोय श्रुत इन्द्री, चक्षु इन्द्री, अनें भोगी बाकी तीन इन्द्रियां । पांच इन्द्रियां में चेली कितनी अचेली कितनी ?

४१ एकचालीसमें बोलें संवरना २० (बीस) बोल किस्यो भाव किसो आत्मा ।

अकषाय संवर भाव तीन उपशम चायक परिणामिक; आत्मा अनेरी ।

अजोग मन वचन काया ए च्यार संवर भाव एक परिणामिक आत्मा अनेरी । सम्यक्ते संवर भाव ४ (च्यार) उदयवरजीनें; आत्मा दर्शन । अप्रमादी संवर भाव च्यार उदयवरजी आत्मा अनेरी । बाकी १३ (तेरा) संवर का बोल भाव ४ (च्यार) उदयवरजीनें आत्मा चारित्र ।

४२ बयालीसमें बोलें पंद्रह जोग किस्यो भाव किसो आत्मा; जीव, अजीव तथा रूपी अरूपी की विगत ।

भावकी विगत ।

सत्यमन जोग सत्य भाषा व्यवहार मन व्यवहार भाषा, औदारिक ए पांच जोग भाव च्यार उपशम वरजीनें ।

औदारिकको मिश्र; कार्मण ए दोय जोग भाव तीन उदय चायक परिणामिक ।

असत्य मनजोग, मिश्रमनजोग, असत्य भाषा,

मिश्र भाषा वैक्रियनोमिश्र, आहारिकनूं मिश्र ए छव जोग भाव दोय उदय परिणामिक, आहारिक वैक्रिय दोय जोग भाव ३ । उदय क्षयोपशम परिणामिक—

सावद्य निर्वद्य कितना ।

असत्य मन योग असत्य भाषा मिश्र मन योग मिश्र भाषा, आहारिकनूं मिश्र, वैक्रिय नूं मिश्र ए छव योग तो सावद्य छै बाकी नव योग सावद्य निर्वद्य दोनूं छै ।

पन्दरह योग जीवके अजीव द्रव्ये अजीव भावे जीव ।

पन्दरह योग रूपी के अरूपी द्रव्ये रूपी भावें अरूपी ।

४२ तयांलीसमें बोलै पांच इन्द्रियां की पृछा पांच इन्द्री जीवके अजीव ? द्रव्यें अजीव भावे जीव । पांच इन्द्री रूपी के अरूपी ? द्रव्ये रूपी भावे अरूपी । पांच इन्द्रियां कामी कितनी भोगी कितनी ? कामी तो दोय श्रुत इन्द्री, चक्षु इन्द्री, अनें भोगी बाकी तीन इन्द्रियां । पांच इन्द्रियां में चेचो कितनी अचेलो कितनी ?

एक स्पर्श इन्द्री तो चेती बाकी च्यार इन्द्रियां अचेती ।

द्रव्यथी इन्द्री कितनी भावथी कितनी ? द्रव्यथी तो आठ ते कहै छै दोय कान, दोय आंख, नाक, जीह्वा, स्पर्श । भावथी पांच श्रुत चक्षु घ्राण रस स्पर्श एवं, छवमें कोण नवमें कोण ? भाव इन्द्री छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ते किणन्याय दर्शनावर्णी कर्म क्षयउपशम थयां थी जीव इन्द्रिय पणो पाम्यो इण न्याय ।

४४ चमालीसमें बोले जीव परिणामिकरा १० बोल किसो भाव किसो आत्मा ।

गति परिणामिक भाव दोय, उदय परिणामिक, आत्मा अनेरी । कषाय परिणामिक भाव उदय परिणामिक, आत्मा कषाय वेद परिणामिक भाव उदय परिणामिक आत्मा कषाय तथा अनेरी । योग परिणामिक लेशपरिणामिक भाव च्यार उपशम बरजीने आत्मा योग । इन्द्रिय परिणामिक भाव दोय, क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा उपयोग । ज्ञान परिणामिक उपयोग परिणामिक भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामिक आत्मा आप आपरी । दर्शन परिणामिक भाव

पांचोंही, आत्मा दर्शन। चारित्र परिणामिक भाव च्यार उदय वरजीने आत्मा, चारित्र।

४५ पैंतालीसमें बोल जीव परिणामीरा १० (दश) बोल छवमें कोण नवमें कोण।

गति परिणामिक छवमें जीव नवमें, जीव जाणवो वेद परिणामिक कषाय परिणामिक छवमें जीव नवमें जीव आस्रव। योग लेश परिणामिक छवमें जीव नवमें जीव आस्रव निर्जरा। दर्शन परिणामिक छवमें जीव नवमें जीव आस्रव संवर निर्जरा। इन्द्रिय उपयोग ज्ञान परिणामिक छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा। चारित्र परिणामिक छवमें जीव नवमें जीव संवर।

४६ छयांलीसमें बोले चवदे गुणठाणा वाला में शरीर कितना पावे।

पहिला सें पांच गुणठाणां तांई तो शरीर ४ च्यार पावे आहारिक टल्यो, छठे गुणठाणे शरीर पावे पांचों ही, सातमां गुणठाणां से चवदमा गुणठाणां तांई शरीर पावे ३ (तीन) ओदारिक तेजस कार्मण। च्यार शरीर अठस्पर्शी छै कार्मण चौ स्पर्शी छै।

पांच शरीर जीव की अजीव ? अजीव छै ।

४७ सातचालीसमें बोलै २४ (चौवीस) दंडक में लेश्या कितनी पावै ।

सात नारकी १ तेउ २ वायु ३ बेइन्द्री ४ तेइन्द्री ५ चौइन्द्री ६ असन्नी मनुष्य ७ असन्नी तिर्यंच ८ यांमें तो ३ आठी लेश्या पावै ।

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय १ वनस्पतिकाय १ भवनपतिका १० वानव्यन्तरा १ यां चवदे दण्डकां में लेश्या पावै ४ पद्म शुक्ल वरजीनें । जीतषी अनें पहिला दूजा देवलोक का देवता में लेश्या पावै १ तेजू । तीजा से पांचमातांई पद्म । छट्ठा देवलोकसे सर्वार्थ सिद्ध तांई पावै १ शुक्ल । सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यंच में लेश्या पावै छव । सर्व युगलिया में ४ च्यार पद्म शुक्ल टली ।

४८ अड़चालीसमें बोलै अजीव नां चवदे भेद ऊंचा नीचा तिरछा लोकमें कितना ? ऊंचो लोक अनें अढ़ी द्वीप बारै १० पावै । धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्तिको खंध अनें काल ए च्यार टल्या । नीचो लोक अढ़ाई द्वीपमें ११ (इग्यारे) पावै काल और वध्यो । ऊंची दिशिमें ११ (इग्यारे) पावै नीची दिशिमें १० पावै ।

४६. गुणपचासमें बोले (च्यार) गति ४ (पांच) जाति ६, छव काय १५ पनरे भेद जीवका २६, चौवीस दण्डक एवं ५३ सूक्ष्म ५४ वादर ५५ त्रस ५६ स्थावर ५७ पर्याप्ता ५८ अपर्याप्ता ५६ ए गुणषट बोलकिसो भाव किसी आत्मा ? भाव उदय परिणामिक, आत्मा अभेरी, छवमें कोण नवमें कोण ? छवमें जीव नवमें जीव। तथा सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं।

५०. पचासमें बोले २२ (वाइस) परिशह किसे किसे कर्मकि उदय तथा छवमें नवमें कोण।

११ इग्यारे परिशह तो वेदनी कर्मना उदय से।

२ दोय ज्ञानावर्णी कर्मनां उदय से।

८ आठ मोहनीय कर्मनां उदय से।

१ अंतराय कर्मका उदय से।

छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा।

५१ इक्यावनमें बोले तेवीस पदवी किसो भाव किसी आत्मा।

१६ उगणीस पदवी तो भाव २ (दोय) उदय परिणामिक, आत्मा अभेरी।

१ केवली महाराज की पदवी भाव दोय क्षायक परिणामिक आत्मा उपयोग।

२ साधुजी महाराज की पदवी भाव ४ (च्यार) उदय बरजी आत्मा चारित्र ।

१ श्रावक की पदवी भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामिक आत्मा देशचारित्र ।

१ समदृष्टी की पदवी भाव ४ च्यार उदय बरजी आत्मा दर्शन ।

उगणीस पदवी तो छवमें जीव नवमें जीव समदृष्टीकी अने केवली की पदवी छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा । साधु श्रावक की पदवी छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५२ बावनमें बोले नव तत्वका ११५ (एकसह पंदरह) बोल की ।

जीव कितना—जीव तो ७० सत्तर तेहनी बिगत जीवका १४, आस्रवका २० संबरका २०, निर्जराका १२, मोक्षका ४, एवं ७० ।

अजीव ४५, तेहमें अजीवका १४, पुन्यका ६, (नव,) पापका १८ (अठारा,) बन्धका ४ (च्यार,) एवं ४५ ।

सावद्य कितना निर्वद्य कितना ।

निर्वद्य तो ३६, तिणमें निर्जरा का १२ संबर का २०, मोक्षका ४, ए ३६ छत्तीस ।

सावद्य १६ तिणमें आस्रवका १६ (मन वचन काया योग ए च्यार टल्या) ।

दोनूं नहीं ५६ तिणमें ४५ अजीवका चवदे जीवका ए सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं ।

च्यार आस्रव मन वचन काया जोग ए सावद्य निर्वद्य दोनूं छै ।

आज्ञा मांही कितना—१६ ऊपर प्रमाणे ।

आज्ञा बाहर कितना—१६ आस्रवका ।

आज्ञा मांही बाहर कितना—४ च्यार मन वचन काया योग ए च्यार आस्रवका ।

५६ बोल आज्ञा मांही बाहर दोनूं नहीं ।

रूपी कितना ? अरूपी कितना ? ।

अरूपी तो ८० (अस्सी) तिणमें ७० सत्तर तो जीवका, १० अजीवका (पुद्गलाका च्यार टल्या) ९ (नव) पुन्यका, १८ (अठारा) पापका ४ (च्यार) बंधका । यह ३५ रूपी छै ।

एकसह पन्दरह बोलांमें छांडवा, आदरवा, जाणवा, योग कितना ।

जाणवा योग तो १२५ एकसह पन्दरह, आदरवा योग ३६, (छतीस) निर्वद्य कह्यो सो । अनें

छांडवा योग ७९ तिणमें अजीव का ४५, जीवका १४, आस्रवका २०, एवं ७९ थया।

॥ किसे भाव ॥

४५ अजीवका तो भाव एक परिणामिक १४ जीवका २० आस्रवका ए चौतीस बोल भाव दोय उदय परिणामिक।

संवरका २० (बीस) बोलामें से १५ पन्दरह तो भाव च्यार उदय बरजीनें, अनें अकषाय संवर भाव ३ (तीन) उपशम चायक परिणामिक, अयोग मन वचन काया ए च्यार भाव एक परिणामिक।

निर्जराका १२ बोल भाव ३ तीन चायक चयोपशम परिणामिक।

४ मोक्षका यामें से ज्ञान, तप, ए दोय तो भाव तीन चायक चयोपशम परिणामिक, अने दर्शन, चारित्र, ए दोय भाव च्यार उदय बरजीनें।

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

* अथ अल्पा बोहत *

१ सर्व थोड़ा गर्भज मनुष्य ।
२ तेहथी मनुष्यणी २७ गुणी ।
३ ,, बादर तेऊकाय का पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
४ ,, पांच अनुत्तरका देवता असंख्यात गुणां ।
५ ,, उपरला त्रिक का देवता संख्यात गुणां ।
६ ,, विचला त्रिक का देवता संख्यात गुणां ।
७ ,, नीचला त्रिक का संख्यात गुणां ।
८ ,, १२ मां देवलोकका संख्यात गुणां ।
९ ,, ११ मां देवलोकका संख्यात गुणां ।
१० ,, १० मांका संख्यात गुणां ।
११ ,, ९ मांका संख्यात गुणां ।
१२ ,, सातमी नरक का नेरिया असंख्यात गुणां ।
१३ ,, छट्ठी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।
१४ ,, आठमां देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।
१५ ,, सातमां देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।
१६ ,, ५ मी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।
१७ ,, छट्ठा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।
१८ ,, चौथी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।
१९ ,, पांचवां देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

२० ,, तीजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

२१ ,, चौथा देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।

२२ ,, तीजा देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।

२३ ,, दूजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

२४ ,, छिमोछिम मनुष्य असंख्यात गुणां ।

२५ ,, दूजा देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।

२६ ,, दूजांकी देव्यां संख्यात गुणां ।

२७ ,, पहला देवलोकका देवता संख्यात गुणां ।

२८ ,, पहलांकी देव्यां संख्यात गुणी ।

२९ ,, भवनपति देवतां असंख्यात गुणां ।

३० ,, भवनपती की देव्यां संख्यात गुणी ।

३१ ,, पहली नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

३२ ,, खेचर पुरुष असंख्यात गुणां ।

३३ ,, खेचरणी संख्यात गुणी ।

३४ ,, थलचर पुरुष संख्यात गुणां ।

३५ ,, थलचरणी संख्यात गुणीं ।

३६ ,, जलचर पुरुष संख्यात गुणां ।

३७ ,, जलचरणी संख्यात गुणी ।

३८ ,, वानव्यंतर देवता संख्यात गुणां ।

३९ ,, वानव्यंतर देवी संख्यात गुणी ।

४० ,, जोतषी देवता संख्यात गुणां ।

४१ ,, जोतषीनी देवी संख्यात गुणीं ।

४२ ,, खेचर नपुंसक संख्यात गुणां ।

४३ ,, थलचर नपुंसक संख्यात गुणां ।

४४ ,, जलचर नपुंसक संख्यात गुणां ।

४५ ,, चौइन्द्रीका पर्याप्ता संख्यात गुणां ।

४६ ,, पंचेन्द्रीका पर्याप्ता विशेषाईया ।

४७ ,, बेन्द्री पर्याप्ता विशेषाईया ।

४८ ,, तेइन्द्री पर्याप्ता विशेषाईया ।

४९ ,, पंचेन्द्री अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५० ,, चौइन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५१ ,, तेइन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५२ ,, बेन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५३ ,, बादर प्रत्येक वनस्पती पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५४ ,, बादर निगोद पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५५ ,, बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५६ ,, बादर अप्पकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५७ ,, बादर वायुकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

९५ „ छद्मस्थ विशेषाईया ।

९६ „ सजोगी विशेषाईया ।

९७ „ संसारी जीव विशेषाईया ।

९८ „ सर्व जीव विशेषाईया ।

अथः प्रतिक्रमण ।

अर्थ सहित ।

—:o—
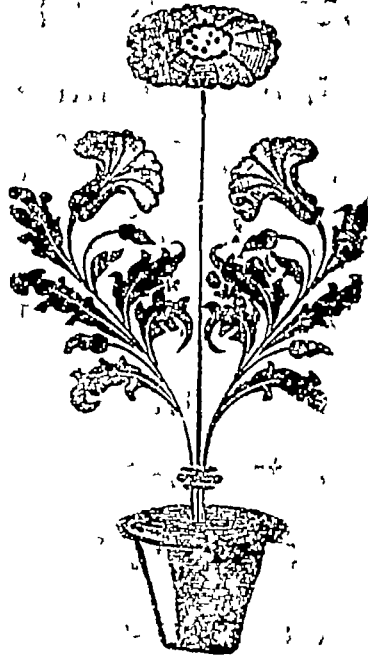
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो
नमस्कार थावो श्री अरिहन्त नमस्कार थावो श्री नमस्कार
भगवन्त नें सिद्ध भगवान नें थावो
आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए
श्री आचारज नमस्कार थावो श्री नमस्कार थावो
महाराज नें उपाध्याय महाराज नें लोक के विषै
सव्व साहुणं ।
सर्व साधु मुनिराजो नें ।

॥ अथ तिक्खुत्ता की पाटी ॥

❀ अर्थ सहित । ❀

—:o:—

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमं
तीन वार दाहिणा प्रदक्षिणा वंदना सत्कार नम
पासाथी देई करूं स्कार

सामी सक्कारेमी समाणेमी कल्लाणं मंगलं
करूं सत्कार देऊ सनमान करूं कल्याणकारी
मंगल कारी

देवयं चेईयं पज्जुवासामी मत्थएण वंदामी
धर्म देव चित्त प्रसन्न सेवना करूं मस्तके करी वंदना
कारी ज्ञान नमस्कार
वंत करूं

इच्छामि पड़िक्कमिओ इरिया वहियाए
इच्छूं, वाच्छूं प्रतिक्रमवो तें मार्ग नें विषें ज्यो
निवर्त्तवो

विराहणा ए गमणागमणे पाणक्कमणे
विराधना हुई जातां आतां प्राणी बेन्द्रियादि नो
होय आक्रमण करणूं ते
दवणूं

बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग
बीजको दावणूं हरि लीलीके ओसको कीडीका नीलण
दावणूं बिल फूलण

दग मट्टी मक्कड़ा संताणा संकमणे जे
पाणी को माटीका मकडी का जाला मर्दवो तो जो
दावलो जीव डयाहोय

मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया
में जीव विराध्यो होय एकेन्द्री जीव बेइन्द्री जीव

तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अभी
तेइन्द्री जीव चौइन्द्री जीव पचइन्द्री जीव सनमुख

हया वत्तिया लेसिया संघाइया संघ
आतांहण्यां धूलसे रगड्या घातन कस्या संघट्ट
वरती करी ढक्यां

ट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया
किया परिताप्या कीलामना उपजाई उपद्रव किया

ठाणा उठाणं संकामिया जीवियाओ वव
एक स्थानसे दूसरे स्थान पटक्या जीवत से

रोविया तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥
नासकिया तेहनो मिच्छामि दूकडं ।

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सउत्तरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं
तेहनो उत्तर करवो प्रायश्चित् करवो
प्रधान

विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं
विशुद्धि करवो सल्य रहित करवो

पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए
पाप कर्मका नास करवा निमित

ठामि करेमि काउसग्गं अन्नत्थ
स्थिर करूं छूं काय उत्सर्ग इण मुजब
हुई पतलो विशेष

ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
ऊंचाखास नीचाखास खांसी छींक

जंभाइएणं उड्डुएणं वाय निसग्गेणं भमलीए
उवासी डकार अधोवायु भंवल
पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं
पित्तकर मूर्छा सूक्षमपणे शरीरको हालवो
सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
सूक्षमपणें श्लेष्मको संचाल सूक्षम दृष्टी चलावो
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहो
इत्यादिक यह आधार से ध्यान भागे नहीं वीराधना
ऊ हुज्ज मे काउस्सग्गं जाव अरिहं
नहीं होज्यो मनें काउसगते ध्यान जिहां तक अरि
ताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं नपारेमि
हन्त भगवन्तने नमस्कार करीने नही पारूं
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
तठातांई शरीरसे स्थानसे मौनकरी ध्यानकरी
अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ॥
आतमां नें पापथकी वोसराऊं

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विषै उध्योतकारी धर्म तिर्थ करता जिन
अरिहन्ते कित्तइसं चउवीसंपि केवली
अरिहन्ताको कीर्ति करूं चोवीस वे केवली

उसभ मजियं च वंदे संभव मभिनंदणं च
ऋषभ अजित पुनः वंदु संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः

सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं
सुमति पुनः पद्म प्रभु सुपार्श्व जिन पुनः चंदा प्रभु
नाथजी

वंदे सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस
वंदु सुविध पुनः दूसरो ना सीतल श्रेयांस
पुष्फदंत

वासुपुज्जं च विमल मणं तंच जिणं धम्मं
वासुपूज्य पुनः विमलनाथ अनन्तनाथजिन धर्मनाथ

संतिं च वंदामि ३ कुंथु अरिहं च मल्लिं
शान्ति पुनः वंदु कुन्थु अर पुनः मल्लिनाथ
नाथ नाथ

वंदे मुंणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि
वंदु मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः वंदु

रिट्ठनेमि पासं तह वद्धमाणं च ४ एवं
अरिष्ठनेम पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान पुन वंदु यह

मये अभिथुया विहूय रयमला पहीणा जर
मैं स्तुति करि दूर किया कर्म रूप खीणभया जनम
रंजमेल

मरणा चऊ वीसंपि जिणवरा तित्थ, यरा मे
मर्णजिणाका एहवा चौबीस जिन राज तिर्थंकर म्हारे

पसीयं तु ५ कित्तिय वंदिए महिया जे ए
प्रसन्नथावो कीर्तिकरी वंदु मोटा प्रने तेह ए
पुज्या ध्याय

लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरोग्ग वोहिलाभं
लोकके विषे उत्तम सिद्ध छे रोग रहित समकित
बोध लाभ

समाहि वर मुत्तमं दिंतु ६ चंदेसु निम्मल
समाधि प्रधान उत्तम देवो चन्द्रमाथी निर्मल

यरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागर वर
घणा सूर्यथी अधिक प्रकाश करी समुद्र समान

गम्भीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ७
गंभीर एहवा सिद्ध सिद्धी मनैं देवो

॥ अथः नमोत्थुणं ॥

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं
नमस्कार थावो अरिहन्त भगवंत ने धर्म की आदि
करता

तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं
तीर्थ करता विना गुरू पोते प्रति पुरुषामें उत्तम
बोध पाम्यां

पुरिस सिंहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरि
पुरुषामें सिंह समान पुरुषां में पुंडरिक पुरुषा
कमल समान में

सवर गन्ध हत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं
गंध हाथी समान लोक मे उत्तम लोकका नाथ

लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोय गराणं
लोकमें हित लोकमें प्रदीप लोकमें उद्योत कारी
कारी समान

अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं
अभय दान ज्ञान चक्षु सुमार्ग दायक शरण दायक
दाता दायक

जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेश
संजम जीव्व बोध दायक धर्म दायक धर्म देशनां
दायक

याणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर
दायक धर्मका नायक धर्मका सारथी उत्तम धर्मकर

चाउरंत चक्कवट्टीणं दीवोताणं सरणगई पइठा
च्यार गतिका अंतकारी चक्र द्वीपा समान शरणागत नें
वर्त समान

अप्पडिहय वरनाणं दंसण धराणं विअट्टछउ
अप्रति हत प्रधानज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यों

माणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं
छद्मस्थ जीत्या अने जीतावे पोते तीरा दूसरानें
पणो दूजाने तारे

बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वनूणं
पोते प्रति दूजाने प्रति कर्मथी दूजाने सर्वज्ञान
बोध पाम्या बोधे मुकाव्या मुकावे

सव्वदरिसीणं शिवमयल मरुअ मणंत
सर्व दर्शण कल्याणकारी अचल अरुज अनन्त

मक्खय मव्वाबाह मप्पुणरावंती सिद्धिगइ
अक्षय अव्याव्याधि फेरु आवे नहीं इसी सिद्धगति

नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं ॥ इति ॥
नामवाला स्थान प्राप्त हुआ ज्यां जिनेश्वरानें नमस्कार थावो

अथ आवस्सही इछामिणं भंते ।

आवस्सही इछामिणं भंते तुब्भहिं अब्भणुं
अवश्य इच्छूं छूं मैं हे भगवान तुम्हारी आज्ञासे

नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणं ठाएमि देवसी
दिवस संबन्धी प्रति क्रमण करूं मैं दिवस संबन्धी

ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिंतवनार्थं
ज्ञान दर्शन चारित तप अतिचार चिन्तवना के अरथे

करेमि काउसग्गं ॥
करूं छूं मैं काऊसग ते ध्यान

अथ इच्छामि ठामि काउसग्ग ।

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिउ अइ
इच्छूं छूं ठाऊं काउसग ज्यो मे दिवसमे अति

थार कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुतो
चार कीनों शरीरसे वचनसे मनसे भूंडा सूत्र

उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दुव्वि
उन मार्ग अकल्पनीक नहीं करनो जोग दुर ध्यान खोटी

चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
चिन्तवना अणाचार नहीं इच्छवा जोग

असावगपावग्गो नाणे तहदंसणे चरिताचरिते
श्रावक के नहीं कर ज्ञान दर्शन देश वर्त
वा जोग पाप तें
व्रत भंगादि

सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीण चउण्हं कसायाणं
श्रुत सामायक तीन गुप्ती च्यार कषाय

पंचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुण वयाणं चउण्हं
पाच अणूव्रत तीन गुण व्रत च्यार

सिक्खावयाणं बारस्स विहस्स सावग धम्मस्स
सिखा व्रत बारे विधि श्रावक धर्म को

जं खंडियं जं विराहियं तस्समिच्छामि
ज्यो खंडणा करी ज्यो विराधना करी तेहनो मिच्छामि

दुक्कडं ॥
दुक्कड

॥ अथ खमासमणो ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
इच्छूं छू क्षमावन्त साधु वंदवा सचितादिछाडी निपापि
शरीरपणें हुई निर्जरा अर्थ

निसीहियाए अणुजाणह मेमि उग्गहं निस्सही

शरीर करी आज्ञा देवो मुजे मर्यादा, अशुभ जोग
माहीं निवर्त तो

अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो

चर्ण फर्शवाकी म्हारी कायासे खमज्यो हे भगवान किलामना
आज्ञा देवो तुमारा चर्ण
फर्शता

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसोवइक्कंतो

थोड़ी किलामना बहुत समाधि भावकर, दिवस वील्यो
हुई हुवेतें तुमारो

जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो

संयम रूप इन्द्रीनोइन्द्रीना आपकुं खमाऊं हे क्षमावंत
यात्राथी तुमारा, उपशम थकी छूं साधु
निरोग शरीर

देवसियं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि

दिवस सम्बन्धी व्यतिक्रम अवश्य करणी ना पडिकमूं छू
अतिचार थकी

खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए

क्षमावंत श्रमण दिवस संबन्धी आसातना

त ... जं किंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए

तेत्तीस माहिली ज्यो कोई किंचित् मिथ्या मनसे दुष्कृत
क्रियाकरी किया

बयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए

वचन से दुकृत काया से दुकृत क्रोधथी मानथी

मायाए लोभाए सबकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए

माया कपट लोभकरी सर्व कालमें सर्व मिथ्याउप

चारक्रिया

सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ

सर्व धर्म क्रियाका एहवी आसातनाउयो मे दिवस ने

उलंघन किया विखे

अइयार कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि

अति चार किया तेहनों हे क्षमावंत श्रमण निवर्तूं छूं

निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥

निन्दूं छूं गरहूं छूं आतमाथी वोसराउ छूं

अथः आगमें तिविहे पन्नत्ते ।

आगमे तिविहे पन्नत्ते तंजहा सुत्तागमे

आगम तीन प्रकारे प्ररूप्यो ते कहै छै सूत्र आगम

अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्रीज्ञान मे

अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनूं आगम

विषे अतिचार दोष लाग्यो होय ते आलोउ—

जंवाइधं वच्चामेलियं हिनक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं

जे कोई वचन मिलाया हीणअक्षर अधिक पद हीण

होय अक्षर

विणयहीणं जोगहिणं घोसहिणं सुट्ठुदिणं
विनय हीण ते मन वचन उच्चारण चोखो सूत्र
अविनय काया हीण दीनूं अवनीतने

दुट्ठुपडिच्छियं अकालेकाउ सिज्झाउ काले
खाटा सूत्रकी इच्छा विनाकाले सज्झाय करि सज्झा
करी यनां

न कउसिज्झाउ असिज्झाए सिज्झाए सिज्झाए
कालमें सज्झाय न असज्झाय में सज्झाय सज्झायमें
करी करी

न सिज्झाए भणतां गुणतां चितारतां चोखतां ज्ञानकी
सज्झाय न करो

ज्ञानवंत की आसातनां करी होवे तस्समिच्छामिदुक्कडं ।
तेहनो मिच्छामि दुकड

अथः दंसणश्रीसमकित ।

दंसणश्रीसमकित अरिहंतो महदेवो जावजीवं
शद्धश्रद्धना ते समकित, तेह अरिहन्त माहिरे, जाव जीव
दर्शन देव लग

सुसाहुणो गुरुणो जिणपन्नतं तत्तं इयसम्मत्तं
शुद्ध साधु गुरू जिन परूप्यो ते तत्व यह समिकत
धर्म

मए गहियं ।
मे ग्रहणकियो

एहवा समकितने विषे जे कोई अतिचार लाग्यो होय ते आलोउं, जिन बचन सांचा न सरध्या होय, न प्रतित्याहोय, न रुच्या होय, पर दर्शणारी आकांक्षा वंछा कीधी होय, फल प्रते संशय संदेह आण्यो होय, पर पाषण्डी की प्रशंसा करी हुवे साथ्वतो परिचय कीधो होय । एहवाश्री समकित रूपी रत्न उपरे मिथ्यात्व रूप रंज मेल खेह लागी होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

अथ बारे व्रत ॥

पढमे	अणुव्वए	थूलाउ	पाणाइवायाउ
प्रथम	देशथी व्रत	मोटको	प्राणाति पात को

विरमणं, व्रत पांच बोले करी उलखीजे, द्रव्यथकी
निवर्तवो व्रत

त्रस जीव बेईन्द्री तेईन्द्री चौइन्द्री पंचेन्द्री विन अपराधे आकुटी हणवानी विधि करीनें सउपयोग हणू नहीं हणाउ नहीं मनसा वायसा कायसा ॥ द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रां मांहि कालथकी जावजीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे

पहला व्रतनें विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोउं ।

जीवनें गाढे बन्धन बांध्या होय १ गाढा घाव घाल्या होय २ चामडी छेदन किया होय ३ अति भार घालया होय ४ भात पाणीनां विच्छोहा कीनां होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

बीए अणुव्वए थूलाउ मूसावायाउ विरमणं
बीजो अणू व्रत स्थुलथी झूट बोलवो निवर्तवो

पांचें बोलें करी ओलखीजे द्रव्यथकी कनालिक १
कन्याके तांई झूठ

गोवालिक २ भोमालिक ३ थापण मोसो ४
गाय भैंसादि कारण झूठ / भूमि निमित लेकर झूठ नटवो

कूड़ीसाख ५
झूठी साखी

इत्यादिक मोटको झूठ मर्याद उपरांत बोलूं नहीं बोलाउं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एही ज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रामें कालथकी जाव जीव लग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे दूजा व्रतमे विषे जे कोइ अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं ।

किणही प्रते कूड़ो आलदियो होय १

रहस्य छानी बात प्रगट करी होय २
स्त्री पुरुषनां मर्म प्रकाश्या होय ३
मृषा उपदेश दीधो होय ४
कूड़ो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं

तइये अणुव्वए थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमणं
तीजो अणूव्रत स्थूलथकी अणदीयो लेवो ते चोरीको निवर्तवो

पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्यथकी खात खणी गांठखोली तालो पडकूंचीकरी वाटपाड़ी पड़ीवस्तु मोटकी सधणियां सहित जाणी इत्यादिक मोटकी चोरी मर्याद उपरांत करूं नहीं कराउं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रां मे, कालथकी जाव जीवलगें, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे तीजाव्रतमे ज्यो कोई अतिचार लागो होय ते आलोउ।

चोरकी चुराई वस्तु लीधी होय १ चोरने सहाय दीधो होय २ राज विरुद्ध व्योपार कीधो होय ३ कूड़ा तोला कूड़ामापा कियाहोय ४ वस्तु मे भेल सभेल कीधा होय ५ सखरी दिखाय नखरी आपी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

चउत्थे अणुव्वए थूलाउ मेहुणाउ विरमणं

चौथो अणू व्रत स्थूलथकी मैथुनथकी निवर्तवो

पांचा बोलांकरी ओलखिजे द्रव्यथको तो देवता देवांगनां सम्बन्धिया मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं तिर्यंच तिर्यंचणी सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं, मनुष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवाकी मर्याद कीधी छै तिण उपरांत सेवूं नहीं सेवावूं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रांमे कालथको जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरे चौथा व्रतमे ज्यो कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोउ।

थोड़ा कालकी राखी परिग्रही सुंगमन कीधो होय १ अपरिग्रही सूंगमन कीधो होय २ अनेक क्रिड़ा कीधी होय ३ पराया नाता बिवाह जोड़्या होय ४ काम भोग तिव्र अभिलाषामे सेव्या होय ५

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति।

पंचम अणुवए थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं
पांचमूं अणूव्रत स्थूलथकी परिग्रह ते धनकी निवर्तवो
पांचां बोलां करी जलखीजै द्रव्य थकी खितु
उघाडी जमीन
वत्थु यथा प्रमाण हिरण सुवन्न यथा प्रमाण
ढकी जमीन जेह प्रमाण कीधो चादी सोनांको जे प्रमाण कीधो
धन धान यथा प्रमाण द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण
द्रव्य धाननों जेह प्रमाण कीधो दासदासी हाथी घोड़ा, जे प्रमाण
द्विक चोपद कीधो
कुंभी धातु यथा प्रमाण।
त्रावो पीतल लोहादि नो जेह प्रमाण

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, खेतथकी सर्व खेत्रांमें कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरा पांचवां अणुव्रतमें ज्यो कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं, खित्तु वत्थु रो प्रमाण अतिक्रम्यू होय १ हिरण्य सुवर्णरो प्रमाण अतिक्रम्यू होय २ धन धानरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ३ द्विपद चउपदरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ४ कुम्भी धातुरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय तस्समिच्छामि दुक्कडं।

इति।

छट्ठो दिशि व्रत पांचां बोलां ओलखीजै द्रव्य थकी तो उंची दिशारो यथा प्रमाण, नीची दिशारो यथा प्रमाण, तिरछी दिशारो यथा प्रमाण, यां दिशारो प्रमाण कीधो तेह उपरान्त जायकर पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मानसा वायसा कायसा द्रव्यथकी तो एहिज द्रव्य क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रां में कालथकी जाव जीवलग भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा मांहरे छट्ठा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोषलागो हुवे ते आलोउं ।

उंची दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय १
नीची दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय २
तिरछी दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय ३
एक दिशा घटाई होय एक दिशा वधाई होय ४
पंथमे आयो संदेह सहित चाल्यो चलायो होय ५
तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

इति ।

सातमूं उपभोग परिभोग व्रत पांचा बोलांकरी ओल-खीजै, द्रव्यथकी छव्वीस बोलांकी मर्याद ते वाहे छै

उल्लणीयां विहं १ दंतनविहं २ फल विहं ३
अंग पूछनादि विधि दांतन विधि फल विधि

अभिंगण विहं ४ उवट्टणविहं ५ मंजण विहं ६
तेलाभिंगादि उवटणादि की स्नानकी विधि
तेल मालिस विधि

वत्थ विहं ७ विलेवण विहं ८ पुप्फ विहं ९
वस्त्र विधि विलेपन विधि पुष्प विधि

आभरण विहं १० धूप विहं ११ पेज विहं १२
गहणा पहरवा विधि धूपकी विधि दूध आदि पीवाकी विधि

भक्खण विहं १३ उदन विहं १४ सूप विहं १५
सुखडी आदि भक्षण की विधि चावल की विधि दालकी विधि

विगय विहं १६ साग विहं १७ महुर विहं १८
विगयकी विधि सागकी विधि मधुर तथा वेलादि फल

जीमण विहं १९ पाणी विहं २० मुखवास विहं २१
जीमणकी विधि पाणीकी विधि मुखवास तांबूलादि की विधि

वाहण विहं २२ सयण विहं २३ पन्नी विहं २४
गाड़ी प्रमुखकी विधि सोवाकी विधि पाटा कुरसी आदिपर पगरखी की विधि

सचित्त विहं २५ द्रव्य विहं २६
सचित्त की विधि द्रव्यकी विधि

ए छवीस बोलांकी मर्याद करी, जिण उपरान्त भोगवूं नहीं मनसा वायसा, कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रांमें, कालथकी जाव

जीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा मांहरा सातमां व्रत की विषै जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं पच्चखाणां उपरान्त सचित्तरो आहार किनो होय १ पच्चखाणां उपरान्त द्रव्यरो आहार किनो होय २ पच्चखाणां उपरान्त गहिणां अधिका पहर्या होय ॥ ॥ ३ ॥ पच्चखाणां उपरान्त कपड़ा अधिका पहर्या होय ॥ ४ ॥

पच्चखाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिका भोगवा होय। तस्समिच्छामि दुक्कडं।

पंदरह करमादान जाणवा जोग छै पण आदरवा जोग नहीं ते कहै छै।

इंगालकम्मे १ — अग्नि करि लूहारादि कर्म

वणकम्मे २ — वन कर्म ते वनमें घास, दरखतादि काटवो

साड़ीकम्मे ३ — सकट कर्म ते गाड़ीप्रमुखनो कर्म

भाड़ीकम्मे ४ — भाड़ा कर्म

फोड़ीकम्मे ५ — लूपादि कर्म ते नारेल सुपारी पत्थर आदि फोडवो

दन्तवाणिज्जे ६ — दांतको विणज ते व्योपार

लक्खवाणिज्जे ७ — लाख को वाणिज्य

रसवाणिज्जे ८ — रस व्यापार ते घी, तैल सहतादि

केसवाणिज्जे ९ — वाल चमरादि व्योपार

विषवाणिज्जे १०   जन्तु पिलणियां कम्मे ११
जहरको व्यापार   कल घाणी-प्रमुख व्यापार

निलच्छणियां कम्मे १२ दवगीदावणियां कम्मे १३
कसी वधियादि कर्म ते   दावानलदेवो कर्म
ज्यानवराने वाधी कर्म

सर द्रह तलाव सोसणियां कम्मे १४ असइजण
सरोवर द्रह तलाव सोषाया ते कर्म   असंजतीनें

पोसणियां कम्मे १५ ॥ इति ॥
पोषावा नों कर्म

ए पन्दरे कर्मादान मर्याद उपरान्त सेव्या सेवाया होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥   ॥ इति ॥

आठमूं अनर्थ दंड बिरमण ब्रत पांचा बोलांकरी ओलखीजे, द्रव्यथकी अवज्झाणाचरियं १
भूंडा ध्यान नों आचरवो

पम्माय चरियं २ हंसपयाणं ३ पावकम्मोवएसं ४
प्रमाद करवो   प्राण हिन्सा   पाप कर्मको उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनरथ दंड आठ प्रकारका आगार उपरान्त सेउं नही ते कहै छै।

आएहिउवा १ नाएहिउवा २ आगारिहिउवा ३
आपणे हित   न्यातिके हित   घरके हित

परिवारहिउवा ४ मित्तहिउवा ५ नागहिउवा ६
परिवार के हित   मित्रके हित   नाग देवता निमित्त

भूतहिउवा ७ जक्खहिउवा ८
भूत देवता निमित्त — जक्ष देवता निमित्त

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रमें कालथकी जाव जीव लग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हांरा आठमां व्रत के विषै जे कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोउं।

कंदप्पेनी कथा कीधी होय १ भंडकुचेष्टा कीधीहोय२
काम क्रिड़ाकी कथा करवो — भांडनीपरै कुचेष्टाकरी होय

मुखमें अरि वचन बोल्या होय ३ अधिकरण
मुखसे खोटा वचन बोल्या होय — नाताजोड़कर

जोड़ मुकाया होय ४ उपभोग परिभोग
तुड़ाया तथा स्त्री भरतार नो विरह किया — एकवार भोग में आवै ते — वारम्वार भोग मे आवै ते

अधिका भोगव्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं
मर्याद उपरांत अधिक भोग्या होय ते — तो मिच्छामि दुकडं

इति ।

नवमो सामायक व्रत पांचां बोलांकरी ओलखोजै
करेमि भन्ते सामाईयं सावज्जं जोगं पच्चखामि
करूं मैं हे भगवंत सामायक सावद्य जोग पच्चखाण

नियम (मुहूर्त एक) पज्जवासामी दुविहेणं
यावत नियम एक मुहूर्त ते सेऊं छूं दोय करण
दोय घड़ी

तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा
तीन जोग नहीं करूं नहीं कराऊं मनसे वचन से

कायसा तसभंते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि
शरीरसे तिणसूं हे भगवान पड़िकमूं निन्दूं छूं ग्रहणा ते निषेदूं छूं

अप्पाणं वोसरामि ॥
पाप से आतमानेवोसराऊं छूं

द्रव्यथकी कनै राख्या ते द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रामे कालथकी एक मुहूर्त तांई भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा नवमां व्रतके विषै जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोउं ।

मन बचन कायाका माठा जोग प्रवर्ताया होय १ पाड़वा ध्यान प्रवर्ताया होय २ सामायक मे समता नहीं करी होय ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवो विसार्‍यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

इति ।

दशमों देशाविगासी व्रत पांचा बोलांकरी ओलखीजै द्रव्यथकी दिन प्रते प्रभातथी प्रारंभीनें पुर्वादि छव दिशिरी मर्याद करी तिण उपरान्त आई पांच आस्रव द्वार रुन्धं नहीं सेवाउं नहीं तथा जेतली भोमिका आगार राख्या तिणसे द्रव्यादिकरी मर्याद

करी तिण उपरान्त सेउं नहीं सेवाउं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज द्रव्य चौथकी सर्व चौदांसें कालथकी जेतलो काल राख्यो भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे दशमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लगोते आलोउं

नवी भूमिका वारली वस्तु अणाई होवे १ मुक लाई होवे २ शब्दकरी आपो जणायो होय ३ रूप देखाड़ आपो जणायो होय ४ पुद्गल न्हाखी आपो जणायो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

इती ।

इग्यारमूं पोषद व्रत पांचां बोलांकरी ओलखोजे द्रव्यथकी ।

असणं पाणं खादिम स्वादिमनां पच्चखाण
आहार पाणी मेवादिक पान सुपारीदिक को पचखाण

अबम्भनां पच्चखाण उमक्कमणी सुवन्ननां पच्चखाण
मैथुन सेवाका त्याग बोसरायो हुयो रत्न सोना का

माला वणग विलेवन नां पच्चखाण
। गुलाल रंगादि चंदनादिक नो विलेपनका त्याग

सत्थ मुसलादि सावज्ज जोगरा पच्चखाण
सस्त्र मूसलादिक सावद्य जोगका पचखाण

इत्यादि पच्चखाण, करने द्रव्यराख्या जिणा उपरान्त

पंच आस्रव द्वार सेउ नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथी एहिज द्रव्य क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रांमे कालथकी (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरे इग्यारमां व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोउं ।

सिज्जा संथारो अपड़िलेहाहोय दुपड़िलेहा
सोवाकी जगा बिसतरो पड़िलेहा नहीं होय आच्छीतरह नहीं
होय १ अप्रमार्ज्या होय दुप्रमार्ज्या होय २
पड़लेहना नहीं प्रमार्ज्या आच्छीतरह नही प्रमार्ज्या
करी

उच्चारपासवणरी भूमिका अपड़ि लेही होय दुपड़ि
छोटी वडी नीतकी जमीन नहीं पड़िलेही होय अथवा
लेही होय ३ अप्रमार्जी होय दुप्रमार्जी होय ४
पोषहमे निन्दा विकथा कषाय प्रमादकरी होय ५
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

इति ।

बारमूं अतिथि संविभाग व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजे द्रव्यथकी ।

समणे निगंथे फासू एसणीज्जेणं असणं १
श्रमण निग्रन्थ ने फासुक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ स्वादिमं ४ वत्थ ५ पड़िग्गह ६
पाणी मेवो लोंग सूपारी आदि वस्त्र पात्रो

कंबलं ७ पाय पुच्छणं ८ पाड़ियारा ९ पीठ
कांवलो पग पूंछणों जाचीनें पाछा पाट
भोलाय ते

फलग १० सेज्या ११ संथारो १२ औषद १३
बाजोटादि जमीन जायगां तृणादिक १ दवाई

भेषद १४ पड़िलाभमाणे विहरामि ॥
चूर्णादि प्रतिलाभ तो थको विचरूं
घणीं मिली

सूत्यादिक चवदे प्रकारनूं दान शुद्ध साधुनें देउं देवाउं देवतां प्रतेभलो जाणूं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज कलपतो द्रव्य, खेत्रथकी कलपे तके खेत्रमें, कालथकी कलपे जिन कालमें, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारा बारमां व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोउं सूजती वस्तु सचित पर मेली होय १ सचित्तथी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी वस्तु आपणी कीधी होय ४ भाणें बैठ साधु साध्वीयांकी भावनां नही भावी होय तो मिच्छामि दुक्कडं ।

इति ।

अथ संलेखणा की पाटी ।

इह लोगा संसह पउगो १ परलोगासंसह
इह लोकको जशकी तथा पर लोकमें सुखकी
द्रव्यादिक की इच्छा

पउगो २ जीविया संसह पउगो ३ मर्णाउ संसह
वाछा जीवत की इच्छा मरण की

पउगो ४ काम भोगा संसहपउगो ५ मामु
इच्छा काम भोगकी इच्छा ए मुजनें

ज्हुज्ज मरणान्तै ।
मर्णान्त तक मत होज्यो । ॥ इति ॥

अथ अठारे पाप ।

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्ता दान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४ पर परि वाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १७ मिथ्या दर्शन सल्य । इति ।

तस्स सव्वस देवसी यस्स आयारस्स दुचिन्तियं दुभासियं
ते सर्व दिवसमें अतिचार खोटी चिन्तवनां खोटी भाषा

दूचिट्ठीयं आलो यंते पड़िक्कमामि निंदामि
खोटी चेष्टा कायाकी आलोउ तेह पडिक्कमेंउ निन्दू

गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥
ग्रहणा करू पाप कर्मथी आतमां नें वोसराउ

॥ इति ॥

अथ तस्सधम्मस ।

तस्स धम्मस केवली पन्नत्तस्स अब्भुट्ठिएमि
तेह धर्म केवली परूप्यो तेहने विषै उट्यो छूं
आराहणाए विरउमि विराहणाए सव्वेतिविहेणं
आराधन निमित्त निवर्तूं छूं वीराधनाथी अतिचार सर्वे
त्रिविध करी
पडिक्कंतो, वंदामि जिन चौवीसं ॥
पडिकमूं वांदूं छूं जिन चौवीस ।
छूं राज

इति ।

अथ मंगलिक ।

चत्तारि मंगलं अरिहन्ता मंगलं सिद्धा मंगलं
च्यार मंगलिक अरिहन्त मंगल छै सिद्ध मगलकारि छै
साहु मंगलं केवली पन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥
साधु मंगळ केवली प्ररूप्यो धर्म ते मंगल
चत्तारिलोगुत्तमा अरिहन्ता लोगुत्तमा
ए च्यार लोकमें उत्तम अरिहन्त लोकमें उत्तम
जाणवा
सिद्धा लोगुत्तमा साहुलोगुत्तमा केवलि
सिद्ध लोकमें उत्तम साधु लोकमे उत्तम केवली
पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरणं
प्ररूप्यो धर्म ते लोक मे उत्तम च्यार शरणा

पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहणकरूं अरिहन्तों का शरणा ग्रहण करताहू सिद्धाका
सरणं पवज्जामि साहु सरणं पवज्जामि केवलि
शरणा लेता हूं साधुका शरण है केवली
पन्नत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि। च्यारों सरणा
प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हू
एसगा अवर न सगो कोय जे भव प्राणी आदरे
अक्षय अमर पद होय ।

इति ।

अथ देवसी प्रायश्चित ।

देवसो प्रायश्चित विसोद्धनार्थं करेमि काउसग्गं
दिवसनों प्रायश्चित शुद्ध करवाने अर्थे करूं छूं काउस्सग

॥ इति प्रतिक्रमणं ॥

अथ पडिक्कमणां करने की बिधि ।

प्रथम चौवीस्थो करणो जिणामे

१ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी । २ तस्सुत्तरीकी पाटी । ध्यानमें इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मनमें चितारकर एक नवकार गुणनों । ३ लोगस्सउज्जोगरे की पाटी । ४ नमोत्थुणं की पाटी ।

१ प्रथम आवसग्ग सामायक में ।

१ आवस्सई इच्छामिणं भंते ।

२ नवकार एक ।

३ करेमि भंते सामाईयं ।

४ इच्छामिठामि काउसग्गं ।

५ तस्सुत्तरी की पाटो ।

ध्यानमें ९९ नन्नाणवे अतिचार ।

आगमे तिविहे पन्नंते की पाटी तिणमें ज्ञानका चवदे अतिचार ।

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी तिणमें समकितका ५ अतिचार ।

बारे ब्रतांका अतिचार ६० साठ तथा १५ पंदरह कर्मदान ।

इह लोग संसह पउगोकी पाटी अतिचार ५ सलेखणांका ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि आलोउं जो में देवसी आयारकाउ ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कहे पारलेणो ।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समाप्त ॥

दूसरा आवस्सगकी आज्ञा ।

लोगस्सकी पाठी ।

॥ इति दूजो आवस्सग समाप्त ॥

तीजा आवस्सगकी आज्ञा ।

दोय खमा समणां कहणा ।

॥ तीजो आवस्सग समाप्त ॥

चौथा आवस्सगकी आज्ञा ।

उभाथकां ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा ॥

८ आठ पाटी बैठाथकां कहणी जिणांकी बिगत ।

१ तस्स सव्वस्सकी पाटी ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाईयं की पाटी ।

४ चत्तारि मंगलंकी पाटी ।

५ इच्छामि ठामि पड़िक्कमेउ जो मैं देवसी ।

६ इच्छामि पड़िक्कमेउ की पाटी ।

७ आगमें तिविहे की पाटी ।

८ दंसण श्री समकीत्त की पाटी ।

ए आठ पाटी कही, बारे ब्रत अतिचार सहित कहणा ।

पांच सलेखणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि पड़िक्कमेउ जो मैं देवसीकी पाटी कहणी तस्स धम्मस केवली पन्नतस्सकी पाटी, दोय खमासमणां कहणां ।

पांच पदांकी वंदना कहणी ।

सातलाख पृथ्वीकाय सातलाख अप्पकाय इत्यादि खमत खामणांकी पाटी ।

॥ चौथो आवस्सग समाप्त ॥

पंचमा आवसग्गकी आज्ञालई कहै ।

१ देवसी प्रायश्चित् बिसोइनार्थं करेमिकाउसग्गं ।

२ एक नवकार ।

३ करेमिभंते सामाईयं की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउसग्गं की पाटी ।

५ तस्सुतरीकी पाटी ।

ध्यानमें लोगस्स कहणांकी परमपराय रीतीसे ।

प्रभाते तथा सांझ वक्त ४ च्यार लोगस्सको ध्यान ।

पखीनें १२ बारे लोगस्स को ध्यान ।

चौमासी पखी नें २० बीस लोगस्सको ध्यान समत्सरीने ४० चालीस लोगस्सको ध्यान ।

ध्यान पारी लोगस्सकी एक पाटी प्रगट कहणी ।

२ दोय खमासमणां कहणा ।

॥ इति पचमूं आवस्सग समाप्त ॥

छठा आवसग्गकी आज्ञालेई कहणा तेहनी विगत ।

गयेकालनूं पड़िक्कमणों वर्तमान कालमें समता

आगमें कालका पच्चखाण यथा शक्ति करणां ।

समाई १ चौवीसत्थो २ वंदना ३ पड़िक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पच्चखाण ६ यां छऊं आवसग्गां में ऊंची नीची हिणो अधिको पाटो कह्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दोय नमोत्थुणं कहणां जिणमें पहिला में तो सिद्धिगई नाम धेयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं दूजा नमोत्थुणं में सिद्धिगई नाम धेयं ठाणं संपवेकामो नमो जिणाणं ।

अथगतागतका थोकड़ा।

जीवका ५६३ भेदकी विगत।

१४ सात नारकी का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४८ तिर्यंचका।

४ सूक्षम वादर पृथ्वीकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्षम वादर अप्पकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्षम वादर वाउकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्षम वादर तेउ कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ सूक्षम (वादर) प्रत्येक साधारण वनस्पति कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ तीन विकलेन्द्री का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

२० जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर ए पाँच प्रकार का तिर्यंच सन्नी असन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता

३०३ मनुष्यका—

२०२ सन्नी मनुष्य, १५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि, ५६ अन्तर द्वीप ए १०१ का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

१०१ असन्नी मनुष्य ते सन्नी मनुष्यका मल मूत्रादि चवदे स्थानक में उपजै ते अपर्याप्ता, अपर्याप्ता अवस्थामें मरै

१९८ देवताका—

भुवनपति १७, परमाधा मी १५, वानव्यंतर १६, त्रिभूमका १०, जोतषी १०, कल्विषिक ३, लोकान्तिक ६, देवलोक १२, ग्रैवेयक ६, अनुत्तर विमान ५, एह ६६ जातिका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

॥ इति ॥

भरतक्षेत्रमें ५१ पावे—

तिर्यंचका ४८ मनुष्य ३।

जम्बूद्वीप में ७५ पावे—

२७ भरतक्षेत्र १ एरभरत १, देवकुरु १, उत्तरकुरु १, हरिवास १, रम्यकवास १, हेमवय १, अरुणवय १, माहविदेह १, यह नव क्षेत्र का सन्नी मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता १८, तथा असन्नी मनुष्य ६

४८ तिर्यंचका

लवण समुद्रमें पावे २१६—

अंतरद्वीप ५६ का तो १६८, तथा ४८ तिर्यंचका

धातकी खंड में पावे १०२—

५४ मनुष्य का अठारह क्षेत्रों का त्रिगुण, ४८ तिर्यंचका

कालोदधि में पावे ४६—

तिर्यंचका ४८ में से बादर तेउका २ टल्या

अर्ध पुष्कर वर द्वीप में पावे १०२—

धातकी खंडवत् जाणवो।

ऊंचा लोक में पावे १२२—

७६ देवताका।

४६ तिर्यंचका।

नीचालोक में पावे ११५—

भवनपति २०, पर्माधामी ३०, नारकी १४, तिर्यंचका ४८, मनुष्यका ३ सर्व ११५।

तिर्छा लोक में पावे ४२३—

३०३ मनुष्यका ।

४८ तिर्यंच का ।

३२ वानव्यन्तर का ।

२० त्रिझूमका ।

२० जोतिष्यां का ।
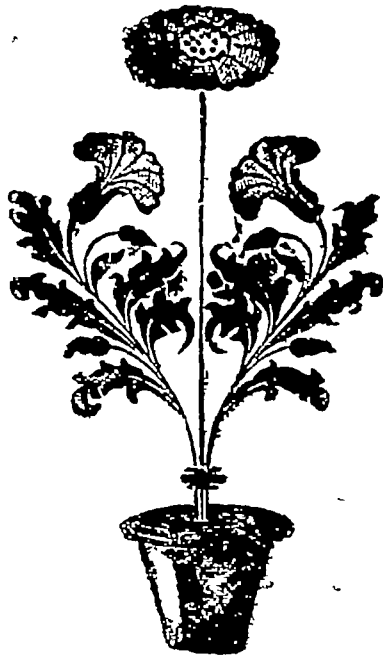
१	पहिली नारकी में	आगति २५	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्री ५ सन्नी ५ असन्नी पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्री ५ सन्नीका पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
२	दूजी नारकी में	आगति २०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४०	उपरवत्
३	तीजी नारकी में	आगति १९	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ४ सन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता भुज पर टल्यो
		गति ४०	उपरवत्
४	चौथी नारकीमें	आगति १८	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ३ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता (भुजपर १ खेचर २ टल्यो)
		गति ४०	उपरवत्
५	पांचवी नारकी में	आगति १७	१५ कर्म भूमि मनुष्य, १ जलचर, १ उरपुर का पर्याप्ता
		गति ४०	उपरवत्
६	छट्ठी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमि १ जलचर सन्नी का पर्याप्तो
		गति ४०	उपरवत्

७	सातमी नारकी मे	आगति १६	१५ कर्म भूमि, १ जलचर सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता स्त्री विना
		गति १०	५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता १०
८	१० भवनपति १५ पर्मा धामी १६ वानव्यंतर १० त्रिभूमका ए ५१ जातिकामें	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यंच कां पर्याप्ता १११
		गति ४६	१५ कर्म भूमि, मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच १ पृथ्वी १ अप्प, १ वनस्पति का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्षम साधारण विना
६	जोतषी पहिला देवलोक में	आगति ५०	१५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४६	उपरवत्
१०	दूजा देवलोक में	आगति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, अकर्म भूमि, का पर्याप्ता २० (५ हेमवय, अरुणवय, टल्या)
		गति ४६	उपरवत्
११	पहिला कल्विपिक में	आगति ३०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु का पर्याप्ता
		गति ४६	उपरवत्
१२	दूजा तीजा कल्विषिक तीजा से आठवां तांई का देवता में	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता अपर्याप्ता

१३	नवमांसे सर्वार्थ सिद्धिताईं	आगति १५	१५ कर्म भूमि, मनुष्य का पर्याप्ता
		गति ३०	१५ कर्म भूमि, का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१४	पृथ्वी पाणी वनस्पति में	आगति २४३	१०१ असन्नी मनुष्य, ४८ तिर्यंच, १५ कर्म भूमि, का, पर्याप्ता अपर्याप्ता ३० एवं १७९ लड़ी का और ६४ जाति का देवता एव सर्व २४३ थया
		गति १७९	लड़ीका
१५	तेऊ वाउ काय में	आगति १७९	लड़ीका
		गति ४८	तिर्यंचका
१६	तीन विकलेन्द्री में	आगति १७९	लड़ीका
		गति १७९	लड़ीका
१७	असन्नी तिर्यंच पचेन्द्री में	आगति १७९	लड़ीका
		गति ३९५	१७९ तो लड़ीका, ५६ अन्तरद्वीप ५१ जातिका देवता, १ पहली नारकी १०८ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २१६ सर्वमिली ३९५
१८	सन्नी तिर्यंच में	आगति २६७	१७९ तो लड़ीका, ८१ देवता ७ नारकी पर्याप्ता (नवमांसे सर्वार्थसिद्ध ताईं टल्या)
		गति ५२७	(नवमासे सर्वार्थ सिद्धताईका टल्या

१६	असन्नी मनुष्य में	आगति १७१	लड़ीका में से तेउ वाउका ८ टल्या
		गति १७६	लड़ीका
२०	सन्नी मनुष्य में	आगति २७६	१७१ तो लड़ीका में से , ६६ देवता ६ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२१	देवकुरु उत्तर कुरु का युगलिया में	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच
		गति १२८	१० भवनपति, १५ पर्माधामी, १६ वाणव्यंतर, १० तिर्भूमका, १० जोतषी, २ पहिलो दूजोदेवलोक, १ पहलो कल्विषिक एवं ६४ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२२	हरीवास रम्यकवास का युगलियां मे	आगति २०	उपरवत्
		गति १२६	६४ जातिका देवतां में से १ पहिलो कल्विषिक टल्यो
२३	हेमवय अरुणवय का युगलियां मे	आगति २०	उपरवत्
		गति १२४	६४ जातिका देवां में कल्विषिक १ और दूजो देवलोक टल्यों
२४	५६ अन्तरद्वीप युगलिया में	आगति २५	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी, ५ असन्नी, तिर्यंच
		गति १०२	५१ जातिका देवांका पर्याप्ता अपर्याप्ता

२५	केवल्यामें	आगति १०८	८१ देवता (पर्मा घर्म १५, कल्विषिक ३ टल्या) १५ कर्म भूमि, ४पहली से चोथीनर्क, ५ सन्नी तिर्यंच १ पृथ्वी १ अप्प वनस्पति
		गति ०	मोक्षकी
२६	तीर्थंकरा में	आगति ३८	३५ देवता वैमानिक, ३ नरक पहली से
		गति ०	मोक्ष
२७	चक्रवर्त में	आगति ८२	८१ जातिका देवता उपरवत्, १ पहली नरक
		गति १४	७ सात नारकी में जाय पदवी में मरेतो
२८	वासुदेव में	आगति ३२	१२ देवलोक, ६ नवग्रैवेयक, ६ लोकान्तिक तथा २ नारकी पहली दूजो
		गति १४	७ नारकी में जाय
२९	वलदेव में	आगति ८३	८१ जातिका देवता उपरवत्२, नारकी पहली दूजो
		गति ०	पदवी अमर छै
३०	सम्यक दृष्टिमें	आगति ३६३	१७१ लड़ीका (तेउ वाउका टल्या) ६६ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति २५८	६६ देवता, १५ कर्म भूमि, ६ नारकी ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता, ५ असन्नी, ३ विकलेन्द्री का अपर्याप्ता एवं २५८

३१	मित्थ्या द्रष्टिमें	आगति ३७१	१७१ लड़ीका, ६६ देवता, ८६ युगलिया, नारकी ७ एवं
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
३२	समभित्थया द्रष्टिमे	आगति २६३	समद्रष्टि जिम
		गति ०	तिजे गुणठाणें मरे नही
३३	साधु मे	आगति २७५	१७१ लड़ीका, ६६ देवता, ५ नारकी
		गति ७०	१२ देवलोक, ६ लोकान्तिक, ६ ग्रैवेयक ५ अनुत्तरका पर्याप्ता अपर्याप्ता
३४	श्रावक में	आगति २७६	१७१ लड़ीका ६६ देवता, ६ नारकी एवं
		गति ४२	१२ देवलोक, ६ लोकान्तिक, पर्याप्ता अपर्याप्ता
३५	पुरुष वेद में	आगति ३७१	मित्थ्याती जिमजाणवो
		गति ५६३	सर्व
३६	स्त्री वेद में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६१	सातमो नरक मे नही जाय
३७	नपुंसक वेदमें	आगति २८५	६६ देवता, १७६ लड़ीका, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व

इति पहिली गतागत सम्पूर्णम् ।

१	शुक्लपक्षी	आगति ३७१	१७९ तो लड़ोका, ९९ देवता, ८६ युगलिया ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२	कृष्ण पक्षी में	आगति ३६६	३७१ में ५ अनुत्तर टल्या
		गति ५५३	५ अनुत्तरका पर्याता अपर्याता टल्या
३	अचर्म में	आगति ३६६	उपरवत्
		गति ५५३	उपरवत्
४	चर्म में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
५	बाल वीर्य में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तरका १० टल्या
६	पण्डितवीर्य में	आगति २७५	१७१ लड़ोका में से, ९९ देवताका, ५ नारकी पहली से
		गति ७०	१२ देवलोक, लोकान्तिक, ९ नवग्रेवेयक ५ अनुत्तर वैमानका पर्याता अपर्याता

७	बाल पंडित वीर्य में	आगति २७६	१७१ तो लडीका में से, ६६ देवत, नारकी ६ पहिली से
		गति ४२	१२ देवलोक, ६, लोकान्तिक का पर्याप्ता अपर्याप्ता
८	मति श्रुति ज्ञान में	आगति ३६३	१७१ तो लडीका में से, ६६ देवता ८६ युगलिया, ७ नारकी एवं ३६३
		गति २५८	६६ देवता, १५, कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच ६ नारकी, एह १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २५० और ५ असन्नी तिर्यंच ३ विकलेन्द्री का अपर्याप्ता ८ सर्व २५८
९	अवधि ज्ञान में	आगति ३६३	उपरवत्
		गति २५०	६६ देवता का, १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, ६ नारकी एह १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१०	मतिश्रुति अज्ञान में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तरका पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
११	विभग अज्ञाने में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति २४२	६४ देवता (अनुत्तर टल्या) १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, ७ नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता
१२	चक्षु दर्शन में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६	सर्व

१३	निकेवल अचक्षु दर्शन में	आगति २४३	१७९ लड़ीका, ६४ जातिका देवता का पर्याप्ता
		गति १७९	लड़ीका
१४	समुचै अचक्षु दर्शन में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
१५	अवधि दर्शन में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति २५२	९९ देवता, १४ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच ७ नारकी एह १२६ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१६	सूक्षम एकेन्द्री में	आगति १७९	लड़ीका
		गति १७९	लड़ीका
१७	बादर एकेन्द्री में	आगति २४३	१७९ लड़ीका ६४ देवता
		गति १७९	लड़ीका
१८	सयोगी अणाहारिक	आगति ६७१	उपरवत्
		गति ०	

१९	तेजस कारमाण में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२०	वेक्रे शरीर मूलका में	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी ५ असन्नी
		गति ४६	१५, कर्मभूमि, ५ सन्नी पृथ्वी १ पाणी २ वनस्पति ३ ए २३ का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्म साधारण विना
२१	समुचैवेक्रे शरीर मैं	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२२	औदारिक शरीर में	आगति २८५	१७९ लड़ीका, ९९ देवता, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२३	कृष्ण लेश्याको कृष्ण लेश्यामें जावै तो	आगति ३१९	१७९ लड़ीका, ५१ जातिका देवता ८६ युगलिया ३ नारकी पांचवी छटी सातवी
		गति ४५९	५१ जातिका देवता ८६ युगलिया ३ नारकी, इनका पर्याप्ता अपर्याप्ता २८०, लडीका १७९ सर्व ४५९
२४	नील लेश्या को नीलमें जावे सो	आगति ३१९	१७९ लड़ीका, ५१ देवता, ८६ युगलिया ३ नारकी तीजी चौथी पाचमी
		गति ४५९	उपरवत् (नारकी तीजी चौथी पांचमी)

२५	कापोत लेश्याको कापोतमें जावेतो	आगति ३१६	उपरवत् पण नारकी पहली दूजी तीजी जाणो
		गति ४५६	उपरवत् (नारकी पहलीसे तीजी)
२६	तेज् लेश्या को तेजू मे जावे तो	आगति १६०	६४ जातिका देवता ८६ युगलिया का पर्याता ओर १५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंचका पर्याता अपर्याप्ता
		गति ३४३	१०१ सन्नी मनुष्य ५ सन्नी तिर्यंच ६४ जाति देवता, का पर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वी अप्प वनस्पति का अपर्याप्ता
२७	पद्मको पद्म लेश्या में जावे तो	आगति ५३	१५ कर्म भूमि मनुष्य ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता ६ नवग्रैवेयक १ दूजो कल्विषिक, ३ देवलोक (पहिलासे) का पर्याप्ता
		गति ६६	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच, ६ लोकान्तिक ४ देवलोक (तीजै से) का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२८	शुक्ल लेश्याको शुक्लमें जावे तो	आगति ६२	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता अपर्याप्ता ४० ओर २१ देवलोक (छठासे सर्वार्थ सिद्धताई: १ कल्विषिक का पर्याप्ता
		गति ८४	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच २१ देवलोक उपरवत् १ तीजी कल्विषिक का, पर्याप्ता अपर्याप्ता

इति दूजो गतागत को थोकड़ो

पूज्यजी महाराज श्रीश्री १००८ श्री भीक्षणजीकृत।

अथ जिन आज्ञा को चौढालियो

दुहा ॥ केइ पाषण्डी जैनरा । साधुनाम धराय ॥ ते पाप कहै जिनआज्ञा मझे । कुड़ा कुहेत लगाय ॥ १॥ आहार पाणी साधु भोगवे । ते श्रीजिन आज्ञा सहित ॥ तिणमें प्रमादने अब्रत कहै । त्यांरी श्रद्धा घणी बिपरीत ॥ २ ॥ वले वस्त्र पात्र कामलो । इत्यादिक उपधि अनेक ॥ ते जिन आज्ञा स्युं भोगवे । तिणमें पापकहै ते बिना विवेक ॥ ३ ॥ त्यां श्रीजिनधर्म नहीं ओलख्यो । जिन आज्ञा पिण ओलखी नांह ॥ तिणस्युं अनेक बोलां तणो पाप कहै । जिन आज्ञा रे मांह ॥ ४ ॥ कहै नदी उतरे तिण साधुने । आज्ञादे जिन आप ॥ आ प्रत्यक्ष हिन्सा देखल्यो । आज्ञाछे तोपिण पाप ॥ ५ ॥ इत्यादिक अनेक बोलां मझे । आज्ञा दे जिनराय ॥ जठे हिंसा हावेछे जीवरी । तठे पाप लागेछे आय ॥ ६ ॥ इम-कही ने जिन आज्ञा मझे। थापे पाप एकांत ॥ हिवे ओल-खिजिन आगन्यां । ते सुणज्यो मतिवंत ॥ ७ ॥

ॐ ढाल पहली ॐ

(भवियण सेवोरे साध सयाणा एदेशी ।)

जे जे कारज जिन आज्ञा सहितछे । ते उपयोग सहित करि कोय ॥ ते कारज करतां घात होवे जिवांरी । तिणरो साधुने पाप न होयरे ॥ भवियणजिनआगन्यांसुखकारी ॥ १ ॥ जीवां तणी घात हुइ साधुथी । त्यांरो साधुने पाप न लागे ॥ जिन आगन्यां पिण लोपी न कहिजे । वले साधु रो व्रत न भागेरे ॥ २ ॥ आ इचरज वाली वात उघाड़ी । काचांरे हिये कीम समावे ॥ ज्यां जिन आज्ञा ओलखी नही पूरी । ते जिन आज्ञा में पाप बतावेरे ॥ ३ ॥ नदी उतरे जव शुद्ध साधुने । आज्ञा दे श्रीजिन आप ॥ जो उ नदी उतरतां पाप होवेतो । आज्ञा दे त्यांने पिण पापरे ॥ ४ ॥ छद्मस्थ साधु नदी उतरे जव । त्याने केवली आज्ञा दे सोय ॥ पोते पिण केवली नदी उतरे छे । पाप हुसी तो दोयां ने होयरे ॥ ५ ॥ जे नदी उतरे छे केवलज्ञानी । त्यांने पाप न लागे लिगार ॥ तो छद्मस्थने पाप किण विध लागे । आ दोयांरो एक आचाररे ॥ ६ ॥ छद्मस्थने केवली नदी उतरे जव । दोयांसु होवे जीवांरी घात ॥ जो जीव मुआ त्यांरो पाप लागे तो । दोयां ने लागे

प्राणातिपातरे ॥ ७ ॥ केवलज्ञानी नदी उतरे त्यानें पाप न लागे कोय । तो छद्मस्थ साधु नदी उतरे जब । त्यांने पिण पाप न होयरे ॥ ८ ॥ कोई कहै केवली ने तो पाप न लागे । नदी उतरतां जोग रहै शुद्ध ॥ पिण छद्मस्थ ने पाप लागे नदीरो । आ प्रत्यक्ष वात विरुद्धरे ॥ ६ ॥ जिण विध केवली नदी उतरे जिम । छद्मस्थ जो उतरे नांही ॥ तो खामी छै तिणरे इर्या सुमति में । पिण खामी नहीं कर्तव्य मांहिरे ॥ १० ॥ ते खामि पड़े ते अजाण पणो छै । इरिया वहि पड़िक्कमणो थाप । वले अधिको खामि जाणे इर्या समिति में । तो प्राश्चित लें उतारे पापरे ॥११॥ साधु छद्मस्थ नदी उतरे ते कर्तव्य । सावज म जाणो कोय ॥ जो सावज होवे तो संजम भांगे । विराधक री पांत होयरे ॥ १२ ॥ आगे नदी उतरतां अनन्त साधाने उपनो छै केवल ज्ञान ॥ त्यां नदी मांहि आउषो पूरो-करीने । पहोंता पंचमी गति प्रधानरे ॥ १३ ॥ केइ कहै साधु नदी उतरे त्यांरे । इतरी हिन्सारो छै आगार ॥ तिणरो पाप लागे पिण व्रत न भांगे । इम कहै ते मूढ़ गिवाररे ॥ १४ ॥ जो साधुरे हिंसारो आगार होवे तो । नदी उतरतां मोक्ष न जावे ॥ हिंसा रो आगारने पाप लागे जब । चवदमों गुणठाणों न

थावेरे ॥ १५ ॥ कोई कहे नदी उतरे जब साधुने । लागे असंख्य हिन्सा परिहार ॥ तिणरो प्रायश्चित लियां विन शुद्ध नहीं छे । इम कहे तिणरे हिय छे अंधाररे ॥ १६ ॥ जो नदी उतस्यांरो प्रायश्चित विन लीधां । ते साधु शुद्ध नहीं थावे ॥ तो नदी मांहि साधु मरे ते अशुद्ध छे । ते मोक्ष मांहि क्युंकर जावेरे ॥ १७ ॥ साधु नदी उतस्यां मांहे दोष हुवे तो । जिन आगन्यां दे नाही ॥ जिन आगन्यां दे तिहां पाप नही छे । थे सोच देखो मन मांहिरे ॥ १८ ॥ नदी उतरे त्यारो ध्यान किसो छे किसी लेश्या किसा परिणाम ॥ जोग किसा अध्यवसाय किसा छे । भला भुंडा पिछाणों तामरे ॥ १९ ॥ ए पांचुं भला छै तो जिन आज्ञा छे ॥ माठा मे जिन आज्ञा न कोय ॥ पांचुं माठास्यूं तो पाप लागे छे । पांचुं भलास्यूं पाप न होयरे ॥ २० ॥ छद्मस्थ ने केवली नदी उतरे जब । लारे छद्मस्थ केवली आगे ॥ छद्मस्थ उतरे छे केवली री आज्ञा स्युं । त्यांने पाप किसे लेखे लागेरे ॥ २१ ॥ जिन शासण च्यार तीर्थ माहिं । जिन आगन्यां छे मोटी ॥ कोई जिन आगन्यां माहिं पाप वतावे । तिणरी श्रद्धा छे खोटीरे ॥ २२ ॥ दवरो दाधो जाय पड़े जल मांहि । पिण जल मांहि लागी लाय ॥ तो किसी

ठोड़ वो करै ठंडाइ। किसो ठोड़ साता होवे तायरे ॥ २३ ॥ ज्युं जिण आज्ञा मांहि पाप होवे तो। किणरी आज्ञा माहे धर्मों ॥ किणरी आज्ञा पाल्यां शुद्धगति जावे। किणरी आज्ञा स्युं कटे कर्मोंरे ॥
॥ २४ ॥ छांटां आवे छै तिण मांहि साधु। मातरो परठे दिसां जावै ॥ तिणरे छै पिण जिनजीरी आज्ञा। तिणसें कुण पाप बतावेरे ॥ २५ ॥ साधु राते लघु बड़ी नीत दोनूं हीं। परठण जावे अछांहि ॥ वले सिज्झाय वारे रातेथांनक वारे। जावे आवे अछायां मांहिरे ॥ २६ ॥ इत्यादिक साधु राते काम पड़े जब। अछायां आवेने जावै ॥ तिणने पिणछै जिनजीरी आज्ञा। तिणसे कुण पाप बतावेरे ॥ २७ ॥ राते अछायां अपकाय पड़े छै। तिणरी घात साधु थी थाय ॥ ओपिण न्याय नदी जिम जाणो। तिणने पाप किसो विध थायरे ॥ २८ ॥ नदी मांहिं बहती साधवी ने। साधु राखे हाथ संभावे ॥ तिण मांहिं पिण छै जिनजीरी आज्ञा। तिणमे कुण पाप बतावेरे ॥ २९ ॥ इर्या समिति चालतां साधु सुं। कदा जीव तणी होवे घात ॥ ते जीव मुआंरो पाप साधुने। लागे नही अंशमातरे ॥
॥ ३० ॥ जो इर्या समिति बिना साधु चाले।

कहा जीव मरे नवि कोय ॥ तो पिण साधुने हिन्सा कुउं कायरी लागे। कर्मतणो बंध होयरे ॥ ३१ ॥ जीव मुआ तिहां पाप न लागो। नमुआ तिहां लागो पाप ॥ जिण आज्ञा संभालो जिण आज्ञा जोवो जिण आज्ञामें पाप म थापोरे ॥ ३२ ॥ जव कोई कहे गृहस्थी हालयां चालयां विण, साधुने किम वहिरावे ॥ हालण चालणरी तो नही जिन आज्ञा। चालयांविण तो वहरावणो नाविरे ॥ ३३ ॥ वैठो होवे तो उठ वहरावे। उभो होवे तो वैठ वह-रावे ॥ वैठन उठणारी तो नही जिन आज्ञा। तो वारमों व्रत किम निपजावेरे ॥ ३४ ॥ जो जिन आज्ञा वारे पाप होवेतो। हालण चालणरो पाप थावे ॥ साधांने वहरायांरो धर्म ते चौवड़े। कोइड़-सड़ी चरचा लावेरे ॥ ३५ ॥ कोई कहे चालणरी तो जिन आज्ञा नाही। तोही चाल वहरायांरो धर्म ॥ जिण अगन्याविन चाल्या तिणने। लागो नही पाप कर्मरे ॥ ३६ ॥ इणविध कुहेत लगावे अज्ञानी। धर्म कहे जिन आज्ञावारे ॥ हिवे जिन अगन्यां मांहि धर्म श्रद्धणरा। थे जाव हिया मांहि धारोरे ॥ ३७ ॥ मन वचन कायारा जोग तीनूं हो। सावद्य निर्वद्य जाण ॥ निर्वद्य जोगांरी श्रीजिन आज्ञा। तिणरी

करजो पिछाणरे ॥३८॥ जोग नाम व्यापार तणों छै। तेभलाने भूंडा व्यापार ॥ भला जोगांरी जिन आज्ञा छै। माठा जोग जिन आगन्यां बाररे ॥ ३९ ॥ मन वचन काया भला ब्रतावो गृहस्थने कहै जिन रायो। ते काया भणी किण विध प्रवर्ता वे। तिणरो विवरो सुणो चित्त लायोरे ॥ ४० ॥ निर्वद्य कर्तव्यरी छै श्रीजिन आज्ञा। तिण कर्तव्यने काया जोग जाण ॥ तिण कर्तव्यरी छै श्रीजिन आज्ञा। तिण कर्तव्यने करो आगीवाणरे ॥ ४१ ॥ साधांने आहार हाथांस्यूं बहरावे। उठ बैठ बहरावे कोय। ते बहरावणरो कर्तव्य निर्वद्य छै। तिण मे श्री जिन आगन्यां होयरे ॥ ४२ ॥ निर्वद्य कर्तव्य गृहस्थी करे छै। त्याने आगन्यां दे जिनराय ॥ ते कर्तव्य तो काया स्यूं करसी। पिण न कहै थे चला वो कायरे ॥ ४३ ॥ निर्वद्य कर्तव्यारी आगन्यां दीधां। पाप न लागे कोय ॥ हालण चालणरी आगन्यां दीधां। गृहस्थ स्यूं संभोग होयरे ॥ ४४ ॥ बेसो सुवो उभो रहो ने जावो। गृहस्थ ने साधु न कहै आम ॥ दशवैकालिकरे सातमें अध्ययन। सैंतालीसमीगाथा में तांमरे ॥ ४५ ॥ उभारो कर्तव्य बेठारो कर्तव्य। करणों कहै जिन राय। पिण

बैठन उठन री नहीं कहे ग्रहस्थ ने। थे विचार देखो मन मांयरे ॥ ४६ ॥ निर्वद्य कर्तव्य री आगन्यां दीधां। निर्वद्य चालवो तेमांहे आयो। कर्तव्य छोड़ने चालणरी आज्ञा देवे तो ग्रहस्थरो संभोगी थायोरे ॥४७॥ ग्रहस्थरे द्वार पड्यो कप-ड़ादिक। जब साधु सुं जाणीनावे मांहि ॥ जब कोई ग्रहस्थ भेलो करे कपड़ादिक। साधुने मारग देवे ताहिरे ॥ ४८ ॥ साधांने मारग देवे जावण आवणरो। ते कर्तव्य निर्वद्य चोखो ॥ जो कपड़ादिक रे काम भेलो करे तो सावद्य काम छे देखोरे ॥ ४९ ॥ तिणसूं साधु कहे ग्रहस्थने। म्हांने जायगां दो जावां मांहि ॥ पिण कपड़ादिक भेलो करो सां वटने। इसड़ी न काढे वाहरे ॥५०॥ ग्रहस्थरो उपधि करे आगो पाछो। वैसायचा सोयवादिकरे काम ॥ ते पिण कर्तव्य निर्वद्य जाणो। नहीं उपधि उपर परि-णामरे ॥ ५१ ॥ केइ श्रीजिन आगन्यां बारे अज्ञानी। धर्म कहे छे ताम ॥ ते भोला लोकांने भ्रम में पाड़े। लेइ अनेक बोलांरो नामरे ॥ ५२ ॥ श्रावकरी मांहों मांहि करे वियावच। वलिसाता पूछे नें पुछावे। तिणमें श्री जिन आगन्यां नहीं दिसे। तिण मांहे धर्म बतावेरे ॥ ५३ ॥

श्रावकारी मांहीं मांहि वयावच कीधी। तिण दियो शरीररो साज। छवकायारो शसत्र तिखो कीधो। तिण स्यूं आज्ञा न दे जिनराजरे ॥ ५४ ॥ गृहस्थोरी वयावच कीधी तिणरे। अठाइसमुं अणाचार। साता पुछ्यांरो अणाचार सोलमुं। तिणसे धर्म नहीं छै लिगार रे ॥ ५५ ॥ शरीरादिक ने श्रावक पूंजे। मातरादिक ने परठैपूंजे। इत्यादिक कारजरी नहीं जिन आज्ञा। धर्म कहै त्याने सब लो न सूजेरे ॥५६॥ शरीरपुंजे मातरादिक परठै। तेतो शरीरादिकरो छै काज। जो धर्म तणोंए कार्य हुवे तो। आगन्यां देता जिनराजरे ॥ ५७ ॥ जो पुंजणों परठणो न करे जावक। तो काया थिर राखणी एक ठाम। पिण हस्तादिकने विण चलायां रहणी नावे तामरे ॥ ५८ ॥ लघु बड़ी नीत तणी अवाधा। खमणी ठमणी न आवे ताम। पूंजे परठे तोइ सावद्य कर्तव्य छै। जिन आज्ञारो नवि कामरे ॥५९॥ कदा थोड़ी बुद्धि त्यांने समज न पड़े। तो। राखणी जिण प्रतीत आगन्यां मांहे पाप आज्ञा बारे धर्म। इसड़ी न करणी अनितरे ॥६०॥ जिन आगन्यां मांहे पाप कहै छै। ज्यांरो मत घणो छै माठो। जिण आगन्यां बारे धर्म कहै छै

त्यांरे आइ अकल भाडी पाटीरे ॥ ६१ जिन आगन्यां मांहि पाप कहतां । मूरख मूल न लाजे । वले धर्म कहे जिन आगन्यां वारे । ते मणिडत पाखंडियां मे वाजेरे ॥ ६२ ॥ जिन आगन्यां मांहि पाप कहे छे । ते वुडि छे कार कर ताणों । वले धर्म कहे जिन आगन्यां वारे । तेतो पूरा छे मुढ अजाणोरे ॥ ६३ ॥ समत अठाराने वर्ष इकताले । जेठ शुद तीजने शुक्रवाररे । जिन आगन्यां उलखा वण काजे । जोड़ कीधी छे पर उपगाररे ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥ जिण शासणसे आज्ञा बड़ी । ओलखे ते बुद्धिवान । ज्यांजिण आज्ञा नविओलखी । ते जीव छे विकल समान ॥ १ ॥ दोय करणी संसार मे । सावद्य निर्वद्य जाण । निर्वद्यसे जिण आगन्यां । तिण सुं पामे पद निर्वाण ॥२॥ सावद्य करणी संसार नी । तिणमे जिन आगन्यां नहीं होय । कर्म बंधे छे तेहथी । धर्म म जाणों कोय ॥ ३ ॥ किहां २ छे जिण आगन्यां । किहां २ आगन्यां नांह ॥ वुद्धिवंत करो विचारणा । निरणों करो घट मांह ॥४॥

॥ ढाल दुजी ॥

(हूं बलिहारि हो श्री पूज्यजी रे नामरी पदेशी)

कोई करे पच्चखाण नौकारसी। तिणरी आगन्यां दो जिन आप हो ॥ स्वामीजी ॥ कोई दान दे लाखां संसारमें। पुछ्यां आप रहो चुपचाप हो ॥ स्वामीजी हूं बलिहारी हो। हूं बलिहारी हो श्री जिनजीरी आगन्यां ॥ १ ॥ जिण आज्ञा सहित नौकारसी। कोधां कटे सात आठ कर्म हो ॥ स्वा० कोइ दान दे लाखां संसारमें। तेतो आपरो भाख्यो नहीं धर्म हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २ ॥ अन्तर मुहूर्त त्यागे एक भूंगड़ो। तिणरी आगन्यां दो जिनराज हो ॥ स्वा० ॥ कोइ जीव छुड़ावे लाखां दाम दे। तठे आप रहो मौन साझ हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ३ ॥ अन्तर मुहूर्त त्यागे एक भूंगड़ो। तेतो आपरो सीखायो छै धर्म हो ॥ स्वा० ॥ तिणस्यूं कर्म कटै तिण जीवरा। उत्कृष्टोपामें सुख परम हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ४ ॥ कोइ जीव छुड़ावे लाखां दाम दे ॥ तेतो आपरो सीखायो नहीं धर्म हो ॥ स्वा० ॥ ओ तो उपकार संसार नों। तिणस्यूं कटता न जाण्यां आप कर्म हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ५ ॥ कोइ साधांने बहि-

रावे एक तिणकनो । तिणरी आज्ञा दो आप
माख्यात हो ॥स्वा०॥ कोइ श्रावक जिमावे कोडांगमे ।
तिणरी आज्ञा न दो अंशमात हो ॥ स्वा० ॥ हूं
॥ ६ । साधांने वहिरावे एक तिणकलो । तिणरे
बारमुं व्रत कह्यो आप हो ॥ स्वा० ॥ तिणस्युं आज्ञा
दीधी आप तेहने । वलि काटता जाण्यां तिणरा
पाप हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ७ ॥ कोइ श्रावक जीमावे
कोड़ां न्युंतने तेतो सावद्य कामो जाण्यो आप हो ।
स्वा० । उण छवकाय शस्त्र पोपियो । तिणने
लागो छे एकंत पाप हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ ८ ॥ कोइ
करे व्यावच श्रावकां तणी । तठे पिण आपरे छे
मोन हो ॥ स्वा० ॥ उण तीखा कीधा छे शस्त्र छव-
कायनो । ते कर्तव्य जाण्यो आप जबुन हो ॥ स्वा० ॥
हूं ॥ ९ ॥ कोइ उघाड़े मुख भणे छे सिधन्तने ।
कोडांगमे गुणे छे नवकार हो ॥ स्वा० ॥ तिणसे
आपतणी आगन्यां नहीं । तिणमें धर्म न सरधुं
लिगार हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १० ॥ उघाड़े मुख गुणे
छे नवकारने । तिण वाउकाय मार्या असंख्य हो
॥ स्वा० ॥ तिणमें धर्म कहे ते भोला घणा । त्यांरे
लागा कुगुरां रा डंक हो ॥ स्वा० हूं ॥ ११ ॥ जेणां
स्युं गुणे एक नवकार ने । तिणस्युं कोइ असंरा

कटे कर्म हो ॥ स्वा० ॥ तिणमें आप तणी छै आगन्यां ।
तिणरे निश्चे ही निर्जरा धर्म हो ॥ स्वा० ॥ हूं
॥ १२ ॥ कोइ साधु नाम धरायने । प्रशंसे छै सा-
वद्य दान हो ॥ स्वा० ॥ त्यांभेष भांड्यो भगवानरो
त्यांरे घट मांहे घोर अज्ञान हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १३ ॥
मौन कही छै साधुने सावद्य दानमें । तेतो अन्तराय
पड़तो जाण हो ॥ स्वा० ॥ तिणरो फल तो सूत्र
में बतावियो । तिणरी बुद्धिवन्त करसी पिछाण हो
॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १४ ॥ प्रदेशी राजा कहै केशी स्वाम
ने । म्हारे तो चढ़तो वैराग हो ॥ स्वा० ॥ म्हारे सात
सहंस गांव खालसे । तिणरा करूं च्यार भाग हो
॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १५ ॥ एक भाग राण्यां निमते करुं ।
दूजो भाग करूं खजान हो ॥ स्वा० ॥ तीजो भाग
घोड़ा हाथी निमत करूं । चौथो भाग करूं देवा दान
हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १६ ॥ च्यारूं भाग सावद्य कामों
जाणनें । मौन साझी रह्या केशी स्वाम हो ॥ स्वा० ॥
जो उवे किणहिक में धर्म जाणता । तो तिणरी
करता प्रशंसा ताम हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १७ ॥ सावद्य
कर्तव्य च्यारूं भाग राजरा । त्यामें जीवांरी हिंसा
अत्यन्त हो ॥ स्वा० ॥ तिणस्यूं च्यारू बराबर जाणने
मौन साझी रह्या मतिवन्त हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १८ ॥

दान देवा मंडाइदान शाल में। प्रदेशी नामे राजान हो ॥ स्वा० ॥ सात सहंस हुंता गांव खालसे तिणपी चौथी पांतीरो देवा दान हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ १६ ॥ च्यार भाग कर आप न्यारो हुवो। तिण जाण्यो संसार नो माग हो ॥ स्वा० ॥ तिण तिथ न कीधी तिण राजरी। रह्यो मुतास्यूं सन्मुख लाग हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २० ॥ ओ तो दान ओरांने भोलायने। तिण पूछी न दिसे वात हो ॥ स्वा० ॥ चवदे प्रकार रो दान साधने। तेतो राख्यो निज पोतारे हाथ हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २१ ॥ चौथो भाग दान तालके करो। नहीं राख्यो पोतारे हाथ हो ॥ स्वा० ॥ तीनूं भाग ज्युं दूजने पिण थापियो। छव काय जीवांरी जाणी घात हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २२ ॥ साढा सतरे सो गांव दान तालके। दिन २ प्रते सठेरा पांच गांव हो ॥ स्वा० ॥ त्यांरे हांसलगे धान रंधायने। दान शाला मंडाइ ठामठाम हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २३ ॥ टालवा गांव जाणीज्यो खालसे। तेतो चौथे पांतिरा छ गांव हो ॥ स्वा० ॥ हांसल पिण आवतां जाणज्यो घणा। नेपे पण हुंती घणी धमाम हो ॥ स्वा० ॥ हूं ॥ २४ ॥ हांसल आयो हुवे एक एक गांवरो। दश सहंस मणारे उन्मान हो

॥ स्वा० ॥ दिन २ प्रते मठेरा पांच गांव रो। ऊणो पचास हजार मण धान हो ॥ स्वा० ॥ ह्रूं ॥ ॥ २५ ॥ इण लेखे एक बरस तणो । पूंणां दोय क्रोड़ मण धान हो ॥ स्वा० ॥ अधिको ओछो तो आप जाणी रह्या । अटकलस्यूं कह्यो उन्मान हो ॥स्वा०॥ ह्रूं ॥ २६ ॥ पाणी पांच क्रोड़ मणारे आसरे । पूणां दोय क्रोड़ मण रांध्यां धान हो ॥ स्वा० ॥ अग्न एक क्रोड़ मण जाणज्यो । लूण छे लाखां मणारे उन्मान हो ॥ स्वा० ॥ ह्रूं ॥ २७ ॥ नित्य धान हजारां मण रांधतां । अगन पाणी हजारां मण जाण हो ॥ स्वा० ॥ मणा बंध लूण पिण लागतो । बाउकायरो बहोत घमसाण हो ॥ स्वा० ॥ ह्रूं ॥ २८ ॥ फवागादिक अनेक पाणी मझे । वले बनस्पति पाणी मांय हो ॥ स्वा० ॥ धान हजारां मण रांधता । तिहां अनेक मुआ त्रसकाय हो ॥ स्वा० ॥ ह्रूं ॥ २९ ॥ दिन २ प्रते मारे छवकायने । वले अनंतजीवारी करे घात हो ॥ स्वा० ॥ त्यारी हिंसारो पाप गीणे नहीं ॥ त्यारे हिंसा धर्मरो मिथ्यात हो ॥ स्वा० ॥ ह्रूं ॥ ३० ॥ एहवा दुष्ट हिंसा धर्मी जीवड़ा ॥ कोई जाणे छे अज्ञानी साध हो ॥ स्वा० ॥ तिणरे घट मांहि घोर अंधार छे ॥ तेतो नियमा निश्चे छे असाध हो ॥ स्वा०

॥ छ ॥ ३१ ॥ केइ जीव खुवायामें पुन्य कहे । केइ मिश्र कहे छै मुढ हो ॥ स्वा० ॥ ए दोनूं वूडा छै वापड़ा कर २ मिथ्यात री रूढ हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ॥ ३२ ॥ जीव खाधां खुवायां भलो जाणीयां । तीनूं हो करणां छै पाप हो ॥ स्वा० ॥ आ श्रद्धा प्ररूपी छै आपरी । ते पिण टेवे छै अज्ञानी उत्थाप हो ॥स्वा०॥ छ ॥ ३३ ॥ केइ जीव खुवावे छै तेहनां । चोखा कहे अज्ञानी प्रणाम हो ॥ स्वा० ॥ कहे धर्मने मिश्र हुवे नहीं । जिव खुवायां विण ताम हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ॥३४॥ जीव खावणरा प्रणाम छै अति बुरा । खुवावण रा पिण खोटा परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ युंही भोलाने न्हाखे भ्रममें । लिसे परिणामांरो नाम हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ३५ ॥ केइ कहे जीवांने मार्यां विना । धर्म न हुवे ताम हो ॥स्वा०॥ जीव मार्यांरो पाप लागे नहीं । चोखा चाहिजें निज परिणाम हो ॥स्वा०॥ छ ॥३६॥ केइ कहे जीवांने मार्यां विना । मिश्र न हुवे ताम हो ॥ स्वा० ॥ ते जीव मारणरी खांनी करे । लेले परिणामांरो नाम हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥३७॥ केइ धर्मने मिश्र करवा भणी । छकायरो करे घमसाण हो ॥ स्वा० ॥ तिणरा प्रणाम चोखा कह्यां थकां । पर जीवांरा छुटे प्राण हो ॥स्वा०॥ छ ॥३८॥ जिण ओलख

लीधी आपरी आगन्यां । ओलख लीधी आपरी मौन हो ॥ स्वा० ॥ लिण आपने पिण ओलख लिया तिणरे टलसी माठी माठी जून हो० ॥ स्वा ॥ ह्न ॥ ३९ ॥ तिण आज्ञा नवि ओलखी आपरी । ओलखी नवि आपरी मौन हो ॥ स्वा० ॥ तिण आपने पिण ओलख्या नवि । तिणरे बन्धसी माठी माठी जून हो ॥ स्वा० ॥ ह्न ॥ ४० ॥ कोइ जिण आज्ञा बारे धर्म कहै । जिण आज्ञा मांहि कहै पाप हो ॥ स्वा० ॥ ते दोनूं विध बुड़ा छै बापड़ा । कुड़ो करकर अज्ञानी बिलाप हो ॥ स्वा० ॥ ह्न ॥ ४१ ॥ आपरो धर्म आपरी अगन्यां मझै । नहीं आपरी आज्ञा बार हो ॥ स्वा० ॥ जिण धर्म जिण आगन्यां बारे कहै । तेतो पूरा छै मूढ़ गिंवार हो ॥ स्वा० ॥ ह्न ॥ ४२ ॥ आप अवसर देखने बोलिया । आप अवसर देखी साझी मौन हो ॥ स्वा० ॥ जिहां आपतणी आगन्यां नवि । ते करणी छै जावक जबून हो ॥ स्वा० ॥ ह्न ॥ ४३ ॥ भेष धारयां सावद्य दान थापियो । तिण दान स्यूं दया उत्थप जाय हो ॥ स्वा० ॥ वले दया कहै छवकाय बचावियां । तिणस्यूं दान उत्थपगयो ताय हो ॥ स्वा० ॥ ह्न ॥ ४४ ॥ छवकाय जीवानैं जीवां मारने । कोइ दान देवे संसाररे मांय हो ॥ स्वा० ॥

तिणरे घटमें छवकाय जीवांतणी । दया रही नहीं ताय हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ४५ ॥ कोइ दान देवे तिणने वरजने । जीव बचावे छवकाय हो ॥ स्वा० ॥ ते जीव बचायां दया उत्पपे । तिणस्यूं न्यारा रह्यां मुख थाय हो ॥ स्वा० ॥ ४६ ॥ छवकाय जीवांने मारी दान दे । तिण दान स्यूं मुक्त न जाय हो ॥ स्वा० ॥ वलि फिर बचावे छवकायने । तिणस्यूं कर्म काटे नहीं ताय हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ४७ ॥ सावद्य दान दियां स्यूं दया उत्पपे । सावद्य दयास्यूं उत्पपे असावद्यान हो ॥ स्वा० ॥ सावद्य दान दया छे संसार नां । यांने ओलखें ते बुद्धिवान हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ॥ ४८ ॥ त्रिविधे २ छवकाय हणावी नहीं । आ दया कही जिणराय हो ॥ स्वा० ॥ दान देणो सुपात्रने कह्यो । तिणस्यूं मुक्त मुक्ति मुखे जाय हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ४९ ॥ दान दया दोनूं मारग मोखरा । तेतो आपणी आज्ञा सहित हो ॥ स्वा० ॥ याने रुडीरीत आराधिया । ते गया जमारो जीत हो ॥ स्वा० ॥ छ ॥ ५० ॥ आप तणी आज्ञा ओलखायवा । जोड़ कीधी नयां शहर मझार हो ॥ स्वा० ॥ समत अठारे ने वर्ष पचावनीसे । महासुद सातम बृहस्पति वार हो । स्वामी जी हूं बलिहारी हो हूं बलिहारी हो थां जिनजीरा आगन्यां ॥ ५१ ॥

॥ दुहा ॥ श्रीजिन धर्म जिन आज्ञा मझे । आज्ञा बारे नहीं जिन धर्म ॥ तिणस्यूं पाप कर्म लागे नहीं । बले कटे आगला कर्म ॥ १ ॥ केइ मुढ मिथ्याती इम कहे । जिण आज्ञा बारे जिण धर्म ॥ जिण आज्ञा मांहे कहे पाप छे । ते भूला अज्ञानी भम ॥२॥ जिण आज्ञा बारे धर्म कहे । जिन आज्ञा मांहे कहे पाप ॥ तेकिण ही सूत्रमे छे नहीं । युहिं करे मुढ बिलाप ॥३॥ कहे धर्म तिहां देवां आगन्यां । पाप छे तिहां करां निषेध ॥ मिश्र ठीकाणे मौन छे । एह धर्मनों भेद ॥४॥ इसड़ी करे छे परूपणां । तेकरे मिश्ररोथाप ॥ तेबुडा खोटोमत बांधने । श्रीजिन वचन उत्थाप ॥५॥ केइ मिश्र तो माने नवि ॥ माने हिंसामें एकन्तधर्म ॥ तेपण बुडेछे बापड़ा ॥ भारी करेछे कर्म ॥६॥ जिन धर्म तो जिण आज्ञामझें । आज्ञा बारे धर्म नहीं लिगार ॥ तिणमें साख सूत्ररी दे कहुं । ते सुण ज्यो बिस्तार ॥७॥

ॐ ढाल तीजी ॐ

(जीव मारेतें धर्म आछो नवि पदेशी)

आज्ञामें धर्म छै जिनराजरो । आज्ञा बारे कहै ते मूढरे ॥ विवेक विकल शुद्ध बुद्ध विना । ते बुडे छै कर कर रूढरे ॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्यां तिशां ॥१॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ने तप । एतो मोक्षरा मारग च्याररे ॥ यां च्यारां में जिनजीरी आगन्यां । यांविनां नहीं धर्म लिगाररे ॥ श्री ॥ २ ॥ यां च्यारां मांहला एक एकरी । आज्ञा मांगे जिनेश्वर पासरे ॥ तिणने देवे जिनेश्वर आगन्यां । जब उ पामै मनमें हुंलासरे ॥श्री॥३॥ यांच्यारां विना मांगे कोइ आगन्यां । तो जिनेश्वर साझ मोनरे ॥ तो जिन आगन्यां विना करणी करे ते करणी छै आज्ञा अनुनरे ॥श्री॥४॥ बीसां भेदां रूंके आवे आसवां । यारे भेदे कटे बन्धिया कर्मरे ॥ त्याने देवे जिनेश्वर आगन्यां । ओतो जिन भाष्यो धर्मरे ॥ श्री ॥५॥ बारे भेदे निर्जरा करणीरी आगन्यां । कर्म कटे तिण करणी से आपरे ॥ यां दोयां करणी विना नवि आगन्यां । [illegible] विलापरे ॥श्री॥६॥ देव अरिहन्त ने शुद्ध साधु छै । केवली भाष्योते धर्मरे ॥ और धर्म नहीं जिन आगन्यां । तिणसूं लागे छै पापकर्मरे ॥श्री॥७॥ जिन भाष्यां जिनजीरी आगन्यां । और

भाष्यामें ओर जाणरे । तिणस्यूं जीव शुद्धगत जावे नहीं । बले पाप लागेछे आणरे ॥श्री॥८॥ केवली भाष्यो धर्म मंगलीकछै। ओहिज उत्तम जाणरे ॥ शरणो पिण ल्यो इूण धर्मरो । तिणमें श्रीजिन आज्ञा प्रमाणरे ॥श्री॥९॥ ठाम २ सूत्र मांहे देखल्यो । केवली भाष्योते धर्मरे ॥ मौन साक्षे तिहां धर्मको नहीं । मौन साक्षे तिहां पाप कर्मरे ॥श्री॥१० मौन साक्षणियो धर्म माठो घणो । भेष धार्यां परूप्यो जाणरे ॥ खांच २ बुडे छे बापड़ा । ते सूत्र रा मुढ अजाणरे ॥ श्री ॥ ११ ॥ धर्मने शुक्ल दोनूं ध्यानमें । जिण आज्ञा दीधी बारूं बाररे ॥ आर्त रौद्र ध्यान माठा विहुं । याने ध्यावे ते आज्ञा बाररे ॥ ॥श्री॥ १२ ॥ तेजु पद्म शुक्ल लेश्या भली । त्यांमें जिन आगन्यां ने निर्जरा धर्मरे ॥ तीन माठी लेश्यामें आज्ञा नही तिणस्यूं बन्धे छे पाप कर्मरे ॥ श्री ॥ १३॥ च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या । च्यार शरणा कह्या जिन रायरे ॥ एसगलाछै जिन आगन्यां मझे । आज्ञा विन आच्छी वस्तु न कायरे ॥ श्री ॥ १४ ॥ भला प्रणाम में जिन आगन्यां । माठा परिणामां आज्ञा वाररे ॥ भला परिणामां निर्जरा निपजे । माठा परिणामां पाप द्वाररे ॥श्री॥ १५ ॥ भला अध्यवसायमें आगन्यां । आज्ञावारे माठा अध्यवसायरे ॥ भला

अध्यवसायां सुं निर्जरा हुवे। माठा अध्यवसा यांसुं पाप बन्धायरे ॥ श्री ॥ २६ ॥ ध्यान लेश्या प्रणा म अध्यवसायछै। च्यारुं भला मे आज्ञा जाणरे ॥ च्यारुं माठामें जिन आज्ञा नहीं। यांरा गुणारी कर ज्यो पिछाणरे ॥ श्री ॥ २७ ॥ सर्वं मूल गुणने उत्तर गुण। देश मूल उत्तर गुण दोय रे ॥ दोयां गुणां मे जिनजीरी आगन्यां। आगन्यां बारे गुण नवि कोयरे ॥ श्री ॥ १८ ॥ धर्म परम अर्थ जिन धर्म छै। उववाई सूयगडांग मांयरे ॥ तिणमें तो जिन जोरी आगन्यां। शेष अनर्थमें आग्या नवि तायरे ॥ श्री ॥ १९ ॥ सर्वं व्रत धर्म साधां तणो। देशव्रत श्रावकरो धर्मरे ॥ यां दोयां धर्ममें जिनजीरी आग- न्यां। आग्या बार तो बन्धसी कर्मरे ॥ श्री ॥ २० ॥ उजलो धर्म छै जिनराजरो। तेता श्रीजिन आज्ञा सहित रे। सुगत जावा अजोग अशुद्ध कह्यो। ते तो जिन आग्या स्युं विपरीतरे ॥ श्री ॥ २१ ॥ आज्ञा लोप हुवे आलि आपरे। ते ज्ञानादिक धन सुं खाली थायरे ॥ आचारांग अध्ययन दूसरे। छठो उद्देशा मांयरे ॥ श्री ॥ २२ ॥ आज्ञा सुं हुवे ते धर्म सांपरो। एहवो चिन्तवे साधु मन मांयरे ॥ आज्ञा बिन करवो त्रिशाहिं रह्यो। कह्यो बीलवो दिव

भाष्यामें ओर जाणरे । तिणस्यूं जीव शुद्धगत जावे नहीं । वले पाप लागेछे आगरे ॥श्री॥८॥ केवली भाष्यो धर्म मंगलीकछे। ओहिज उत्तम जाणरे ॥ शरणो पिण ल्यो हूगा धर्मरो । तिणमें श्रीजिन आज्ञा प्रमाणरे ॥श्री॥९॥ ठाम २ सूत्र मांहे देखल्यो । केवली भाष्योते धर्मरे ॥ मौन साझे तिहां धर्मको नहीं । मौन साझे तिहां पाप कर्मरे ॥श्री॥१० मौन साझणियो धर्म माठो घणो । भेष धारयां परूप्यो जाणरे ॥ खांच २ बुडे छे बापड़ा । ते सूत्र रा मुढ अजाणरे ॥ श्री ॥ ११ ॥ धर्मने शुक्ल दोनूं ध्यानरे । जिण आज्ञा दीधी वारूं वाररे ॥ आर्त रौद्र ध्यान माठा विहुं । याने ध्यावे ते आज्ञा वाररे ॥ ॥श्री॥ १२ ॥ तेजु पद्म शुक्ल लेश्या भली । त्यांमें जिन आगन्यां ने निर्जरा धर्मरे ॥ तीन माठी लेश्यामें आज्ञा नही तिणस्यूं बन्धे छे पाप कर्मरे ॥ श्री ॥ १३॥ च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या । च्यार शरणा कह्या जिन रायरे ॥ एसगलाछे जिन आगन्यां मझे । आज्ञा बिन आच्छी वस्तु न कायरे ॥ श्री ॥ १४ ॥ भला प्रणाम में जिन आगन्यां । माठा परिणामां आज्ञा वाररे ॥ भला परिणामां निर्जरा निपजे । माठा परिणामां पाप द्वाररे ॥श्री॥ १५ ॥ भला अध्यवसायमें जिन आगन्यां । आज्ञाबारे माठा अध्यवसायरे ॥ भला

अध्यवसायां सुं निर्जरा हुवे। माठा अध्यवसा यांसुं पाप बन्धायरे ॥ श्री ॥ २६ ॥ ध्यान लेश्या प्रणाम अध्यवसायछै। च्यारुं भला में आज्ञा जाणरे ॥ च्यारुं माठामें जिन आज्ञा नहीं। यांरा गुणारी कर ज्यो पिछाणरे ॥ श्री ॥ १७ ॥ सर्व मूल गुणने उत्तर गुणे। देश मूल उत्तर गुण दोय रे ॥ दोयां गुणां में जिनजीरी आगन्यां। आगन्यां बारे गुण नवि कोयरे ॥ श्री ॥ १८ ॥ अर्थ परम अर्थ जिन धर्म छै। उववाई सूयगडांग मांयरे ॥ तिणमे तो जिन जीरी आगन्यां। शेष अनर्थमें आग्या नवि तायरे ॥ श्री ॥ १९ ॥ सर्व ब्रत धर्म साधां तणो। देशब्रत श्रावकरो धर्मरे ॥ यां दोयां धर्ममें जिनजीरी आगन्यां। आग्या बारे तो बन्धसी कर्मरे ॥ श्री ॥ २० ॥ उजलो धर्म छै जिनराजरो। तेतो श्रीजिन आज्ञा सहित रे। मुगत जावा अजोग अशुद्ध कह्यो। ते तो जिन आग्या सुं बिपरीतरे ॥ श्री ॥ २१ ॥ आज्ञा लोप छांदे चाले आपरे। ते ज्ञानादिक धन सुं खाली थायरे ॥ आचारांग अध्ययन दूसरे। जोवो छट्ठा उद्देशा मांयरे ॥ श्री ॥ २२ ॥ आज्ञा सुं रुके ते धर्म मांहरो। एहवो चिन्तवे साधु मन मांयरे ॥ आज्ञा बिन करवो जिहांहिं रह्यो। कडो बोलवो पिण

नवि थायरे ॥ श्री ॥ २३ ॥ आज्ञा मांहलो ते, धर्म मां
हरो। और सर्व प्रारको थायरे आचारांग छठा
अध्ययन में। पहले उद्देशे जोय पिछाणरे ॥ श्री ॥
२४ ॥ आगन्यां मांहि संजम नै तप । आगन्यां में
दोनूं परिणामरे । आग्या रहित धर्म आछो नवि ।
जिण कह्यो पराल समानरे ॥ श्री ॥ २५ ॥ आस्रव
निर्जरारो ग्रहण जूदो कह्यो। ते जाणसी जिन आ
ज्ञारो जाणरे । आचारांग चोथा अध्ययन में। पहले
उद्देशे जोय पिछाण रे ॥ श्री ॥ २६ ॥ निर्वद्य धर्म
चतुर बिध संघ छै। ते आग्या सहित बंछै अनु-
सन्तानरे । आचारांग चोथा अध्ययनमे । तीजे
उद्देशे कह्यो भगवान रे ॥ श्री ॥ २७ ॥ तीर्थंकर धर्म
कोभोतिको । मोक्षरो मारग शुद्धवेसरे ॥ और
मोक्षरो मारग को नहीं, पांचमे आचारांग तीजे उद्देशे
रे ॥ श्री ॥ २८ ॥ जिण आज्ञा बारली करणी तणो।
उद्यम करै आज्ञानो कोयरे ॥ आज्ञा मांहली कर-
णीरो आलस करे। गुरु कहै शिष्य तोने दोय
म होयरे ॥ श्री ॥ २९ ॥ कुमारग तणी करणीकारे ।
सुमारग रो आलस होयरे ॥ ए दोनूं हिं करणी
दुरगत तणी। आचारांग पांचमें अध्ययन जोयरे
॥ श्री ॥ ३० ॥ जिण मारग रा अजाणने। जिण

उपदेश नों लाभ न होयरे ॥ आचारांग रा चाथा अध्ययन से । तीजा उद्देशेमें जोयरे ॥ श्री ॥ ३१ ॥ ज्यां दान सुपात्र ने दियो । तिणमे श्रीजिन आग्या जाणरे ॥ कुपात्र दानमे आगन्यां नहीं । तिणरी बुद्धवंत करज्यो पिछाण रे ॥ श्री ॥ ३२ ॥ साध बिना अनेरा सर्वने । दान नहीं दे माठो जाणरे ॥ दीघां भ्रमण करे संसार मे । तिणसुं साध किया पच्च-खाणरे ॥ श्री ॥३३॥ सूयगडांग नवमा अध्ययन में । बीसमी गाथा जोयरे ॥ वलि दीधां भागे व्रत साध रो । जिन आगन्यां पिण नवि कोयरे ॥ श्री ॥ ३४ ॥ पात्र कुपात्र दोनूं नै दियां । विकल कहै दोयांमे धर्मरे ॥ धर्म हुसी सुपात्र दान में । कुपात्र ने दियां पाप कर्मरे ॥ श्री ॥ ३५ ॥ खेत्र कुखेत्र श्रीजिन वर कह्यो । चौथे ठाणे ठाणा अंग मांयरे ॥ सु खे-त्रमे दियां जिन आगन्यां । कुखेत्रमें आग्या नवि कायरे ॥ श्री ॥ ३६ ॥ आहार पाणीने वले उपधादि-क । साधु देवे गृहस्थने कोयरे ॥ तिणने चौमासी दण्ड निशीथमें । पनरमें उद्देशे जोयरे ॥ श्री ॥ ३७ ॥ गृहस्थने दान दे तिण साधुने । प्रायश्चित आवे कि धो अधर्मरे ॥ तो तेहिज दान गृहस्थ देवे । त्याने किण विध होसी धर्म रे ॥ श्री ॥ ३८ ॥ असंजम

छोड संजम आदखो । कुशील छोड हुवो ब्रह्मचार रे ॥ अणाकलपणीक अकार्य परहरे । कल्प आचार कियो अंगीकार रे ॥ श्री ॥ ३९ ॥ अज्ञान छोडने ज्ञान आदखो । माठी क्रिया छोडि माठी जाणरे ॥ भली क्रियाने साधु आदरी । जिण आज्ञा स्यूं चतुर सुजाण रे ॥ श्री ॥ ४० ॥ मिथ्यात छोड सम्यक्त आदखो । अबोध छोड आदखो बोधरे ॥ उन्मार्ग छोड़ सुनमार्ग लियो । तिणस्यूं होसी आतमा शुद्धरे ॥ श्री ॥ ४१ ॥ आठ छोड़े ते जिन उपदेस सुं । पाप कर्म तणो बंध जाणरे ॥ जिण आज्ञा स्यूं आठ आदखां । तिणसुं पामै पद निर्वाण रे ॥ श्री ॥ ४२ ॥ ठाम २ सूत्र में देखल्यो । जिण धर्म जिण आज्ञा में जाणरे ॥ ते मुढ मिथ्याती जाणे नही । युहीं बुड़े छै कर कर ताणरे ॥ श्री ॥ ४३ ॥ हुं कहि कहिने कितरो कहुं । आगन्यां बारे नहीं धर्म मूलरे ॥ आगन्यां बारे धर्म कहै तेहना । श्रद्धा कण बिना जाणो धुलरे ॥ श्री ॥ ४४ ॥

॥ दुहा ॥ भेषधारी बिमरायल जैनरा । ते कुड कापटरी खान ॥ ते आगन्यां बारे धर्म कहै । त्यांरे घटमें घोर अग्यान ॥ १ ॥ त्याने ठीक नहीं जिन धर्मरी । जिण आग्यारो पिण नवि ठीक ॥ त्याने

परिवार विवेक विकल मिल्या ॥ त्यामें बाजै पूज मेठीक ॥ २ ॥ ते बड़ा ऊंठज्युं आगे चले । लार चले जेमकतार ॥ बोहला बुडिके बापड़ा । बड़ा बुढा री लार ॥ ३ ॥ हिवे बले विशेष जिन आगन्यां । ओलखजो बुद्धिवान ॥ तिणरा भाव भेद प्रगट करूं । ते सुण जो श्रुत दे कान ॥ ४ ॥

❀ ढाल चौथी ❀

(जंबु कुंवर कहै परभव सुणो परदेशी)

साधु सामायक व्रत उचरे । तिणमें सावद्य रा पच्चखाण ॥ भविक जन हो ॥ तेहिज सावद्य गृहस्थ करे । तिणमे श्री जिण धर्म म जाण ॥ भविक जन हो ॥ श्री जिन धर्म जिन आगन्यां तिहां ॥ १ ॥ श्रावक सामायक पोसो करे । तिणमे पिण सावद्य रा पच्चखाण ॥ भ० ॥ तेहिज सावद्य कामो छुटे करे । तिणमे पिण जिण धर्म म जाण ॥ भ० ॥ २ ॥ श्री ॥ धर्म कहै साधु जिन आगन्यां मझे । आज्ञा बारे धर्म कहे ते मुढ ॥ भ० ॥ तिण श्री जिन धर्म न ओ-लख्यो । तिण झाली मिथ्यातरी रुढ ॥ भ० ॥ ३ ॥ श्री ॥ जिन धर्म री जिन आगन्यां देवे । जिण धर्म

सीखावे जिणराय ॥ भ० ॥ आज्ञा बारे धर्म किण सीखावियो । तिणरी आज्ञा देवे कुण ताय ॥ भ० ॥ ४ ॥ श्री ॥ केइ आगन्यां बारे मिश्र कहे । केइ धर्म पिण कहे आज्ञाबार ॥ भ० ॥ तिणने पूछिजे ओ धर्म किण कह्यो । तिणरो नाम तुं चौडे बताय ॥ भ० ॥ ५ श्री ॥ इण मिश्रने धर्मरो कुण धणी । तिणरी आज्ञा कुणदे जोड़्यां हाथ ॥ भ० ॥ देवगुरु धर्म सामा न्याबा हुवे । इणरी उत्पतरो कुण नाथ ॥ भ० ॥ ६ ॥ श्री ॥ कोइ वेस्यारा पुत्रने पूछा करे । थारी मा कुण ने कुण तात ॥ भ० ॥ जब उ नांव बतावे किण बापरो । ज्यूंआ मिश्रवालांरी छे बात ॥ भ० ॥ ७ ॥ श्री ॥ वेस्यारा अंग जात नो उपनों । तिणरो कुण हुवे उदेरिने बाप ॥ भ० ॥ ज्युं आज्ञा बारे धर्म ने मिश्ररी । जिण धर्मरी करसी कुण थाप ॥ भ० ॥ ८ ॥ श्री ॥ वेस्यारे अंग जातनो उपनो । उण लखणो हुवे उदेरिने बाप ॥ भ० ॥ ज्यूं जिन आगन्यां बारे धर्म ने मिश्ररी । केइ करे छे पाषराडी थाप ॥ भ० ॥ ९ ॥ श्री ॥ कोइ कहे म्हांरी माता छे बांझड़ी । तिणरो हुं छुं आतम जात ॥ भ० ॥ ज्युं मुरख कहे जिण आगन्यां बिना । करणी कीधां धर्म साख्यात ॥ भ० ॥ १० ॥ श्री ॥ बाप बिण

बेटो निश्चे हुवे नहीं ज्युं जिण आज्ञा बिना धर्म न होय ॥ भ० ॥ जिन आज्ञा होसी तो जिण धर्म छे। आज्ञा बिना धर्म न होय ॥ भ० ॥ ११ ॥ श्री ॥ मा बिण बेटारो जन्म हुवे नही। जन्मे ते बांझ ने होय ॥ भ० ॥ ज्युं जिन आज्ञा बिना धर्म हुवे नही। जिन आज्ञा तिहां पाप न कोय ॥ भ० ॥ १२ ॥ श्री ॥ गघु पंखो नै चोर दोनूं भणी। गमतो लागे अंधारी रात ॥ भ० ॥ ज्युं भारी कर्मा जीव तेहने। जिण आज्ञा बाहरलो धर्म सुहात ॥ भ० ॥ १३ ॥ श्री ॥ काग निमोली से रति करे। भगड सूराने मीठो आवे दाय ॥ भ० ॥ ज्यूं काग भगड सूरा जेहवा मानवी। रिझे आज्ञा बाहरली करणी मांय ॥ भ० ॥ १४ ॥ श्री ॥ चोर परदारा सेवणकुशी लिया। तेतो सेरी जोवे दिन रात ॥ भ० ॥ ज्यूं आज्ञा बाहर धर्म अद्धायवा। उंधो कर कर अज्ञानी वात ॥ भ० ॥ १५ ॥ श्री ॥ गुरुवादिकरी आज्ञा मांगे नही। तेतो अपछन्दा अवनित ॥ भ० ॥ ज्युं केइ जिण आगन्यां विण करणी करे। ते पिण करणी छे विपरीत ॥ भ० ॥ १६ ॥ श्री ॥ दुष्ट जीव मंजारी ने चितरा। छल सुं करे पर जीवांरी घात ॥ भ० ॥ एहवा दुष्ट मिथ्र अद्धा रा धणी। छल

ज्यूं वाले विकलांरे मिथ्यात ॥ भ० ॥ १७ ॥ श्री ॥
बिगरायल हुवां न्यात बारे करे । ते बिगरायल फिरे
न्यात बाहर ॥ भ० ॥ तेहवो धर्म जिन आगन्यां
बारलो । तिणमें कहे मत जाणो भलीवार ॥ भ०
॥ १८ ॥ श्री ॥ न्यात बारे ते न्यात मांहे नहीं ।
तिणने लवि बैसाणे एक पांत ॥ भ० ॥ ज्यूं जिण
आज्ञा बिना धर्म अजोग छै । कीधां पूरीजे नहीं
मन खांत ॥ भ० ॥ १९ ॥ श्री ॥ जो आज्ञा बिन
करणी में धर्म छै । तो जिन आज्ञारो काम न कोय
॥ भ० ॥ तो मन मानी करणी करसी तेहने । सग-
ली करणी कियां धर्म होय ॥ भ० ॥ २० ॥ श्री ॥
जिण आज्ञा बाहरली करणी कियां । पाप नहीं
लागे ने धर्म थाय ॥ भ० ॥ तो किण करणी सुं पाप
निपजे । तिण करणी रो तुं नांव बताय ॥ भ० ॥
२१ ॥ श्री ॥ ज्ञान दर्शन चारित तप । ए च्यारुंहिं
छै आज्ञा मांय ॥ भ० ॥ यां च्यारां मांहे तो धर्म
जिण कह्यो । यां बिना ओर नांव बताय ॥ भ० ॥
२२ ॥ श्री ॥ इम पूछ्यां रो जाब न उपजे झूठ बोले
बणाय बणाय ॥ भ० ॥ विकला ने विगोवण पापीया ।
जिण आग्या बारे धर्म अद्धाय ॥ भ० ॥ २३ ॥ श्री ॥
आगन्यां बारे धर्म कहे । ते पिण छै, आगन्यां बार

॥ भ० ॥ इण सरधा सुं बुडे छै बापड़ा । ते भव भवमें होसी खवार ॥ भ० ॥ २४ ॥ श्री ॥ जिण आगन्यां बारे धर्म कहे । ते बिगरायल जैनरा जाण ॥ भ० ॥ त्यांरो अभिन्तर फूटी छै आंहलो । ते अंधारे उगो कहै भाण ॥ भ० ॥२५॥ श्री ॥ श्रीजिन आगन्यां बिन करणी करे । तेतो दुरगतरा आगीवाण ॥भ०॥ जिण आज्ञा सहित करणी करे । तिणस्यूं पामेपद निरवाण ॥ भ० ॥ २६ ॥ श्री ॥ आज्ञा बारे धर्म कहे तेहनो । जोड़ कोधो छै खेरवा मझार ॥ भ० ॥ समत अठारे चालीसमे । आसोजबिद पांचम था वर वार ॥ भ० ॥ २७ ॥ श्री ॥ श्रीजिनधर्म जिन आगन्यां तिहां ॥

इति जिन आज्ञा को चोढालियो
समाप्त ।

अथ श्रीपूज्य भीखणजीको स्मरण

कोई अन्यमति इम कहै। भजन नहीं जैनकि मांय ॥ सूना घरको पाहुणों। ज्युं आवै ज्युं जाय ॥१॥ खेतमे खात गलायने। हल देवै जुतराय ॥ खेत खड़े चौकस करे। रुड़ी बाड़ बणाय ॥ २ ॥ जलस्यूं सिंचै खेतने। बीज नहो तिणमांय ॥ रुत आयां रोवै कृ-षणी। लुण तां देखै लोग लुगाय ॥३॥ दान दया तप जप घणो। जैन धर्मकि माय ॥ बीज भजन बिना कृषणो। करनै सब खप अहली जाय ॥ ४ ॥ कोइ २ भोला लोकने। बांगा दे बहकाय ॥ देवै द्रष्टान्त, प्रश्न कुड़ा। राले फंदकि मांय ॥५॥ जैन मति कोइ जैनमें। म्हांरी सुणो कृषण करतुत ॥ बीज बावै साख निपजाय वा। शिवपुर अंगासुत ॥६॥ खेत धणीको जीव छै। काया खेत समान ॥ तप रुपीयो हल जोतने। खात रुपीयो दान ॥ ७ ॥ सागड़ी रुपीया सतगुरु। सम्यक्त बीजज वाय ॥ दया रुपीयो जल पावतां। व्रतांरी बाड़ बणाय ॥ ८ ॥ खेत सीलु कर्म

काटवा ॥ चस्यां रुपणी कसोल्याय ॥ खाडू बाड़ संतोष ज्यूं ॥ पांन पोट ज्यूं पुन्य बंधाय ॥ ९ ॥ मेह अरिहंत ज्यूं ध्यान छे। ध्यान रुपीयो ग्यान ॥ चारे रुप उपर निपना सुख संसार ना विविध विविध असमान ॥ १० ॥ नाज रुपीया फल मुगतका। मोड़ा वेगा जास्यां मोख ॥ जैन जिस्यो क्रषण नही। म्हे घणां देख्या मत फोक ॥ ११ ॥ थे नहीं समजो बोधबीजमें म्हे भजां अरिहंत भगवान ॥ थारा गुरु महिमां कही में पिण लीधी जाण ॥ १२ ॥ गुरु गोबीन्द दोनूं खड़ा किसकै लागुं पाय ॥ वलिहारी सतगुरु तणी गोबिन्द दिया ओलखाय ॥ १३ ॥ अरिहंत गुण नही ओलख्या। सतगुरु दिया दर-साय ॥ कहुं भजन महिमां सत गुरु तणी। ते मुं गाज्यो चित्त लगाय ॥ १४ ॥

---

* ढाल *

श्री संत भिखणजी रो स्मरण करतां। भव दुःख जावै सर्वं भाज जी ॥ वासो बसै तो देव लोकां मांहि। पामै मुक्त पुरी नो राजजी ॥ श्रीपूजा भिखणजी को स्मरण कीजे ॥ १ ॥ भि कहेतां भिक्षु व्रत लीधा

त्र कहतां चौम्यारस पोधजी ॥ न कहेतां सावद्य काम निवार्या । जी कहेतां इन्द्रयां ने जीतजी ॥ श्री पूज्य ॥२॥ स्मरण चिन्तामण च्यार आखररो । तिणमें गुण अथागजी ॥ चक्रो निदान ज्यूं स्मरण साजे । तिणरो बीर कह्यो वड़ भागजी ॥ श्री ॥ ३ ॥ सूत्र सिद्धांतमें नवकार भाख्यो । दोय पदांमें आया स्वामजी ॥ आचार्य पदवीने सत गुरु साधु ॥ ज्यांरो रात दिवस रटो नामजी ॥ श्री पूज्य ॥ ४ ॥ च्यार मंगलीक उत्तम शरणा लेणा । श्री बीर गया छे भाखजी तीन प्रकारे बोलि स्वामी । जारो आवसग सूत्र में साखजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५ ॥ घणा बिघन भागे इण स्मरण स्यूं टल जावे दुःख होवे हगामजी ॥ कही कथा सूत्रकि मांहि लेउं थोड़ासा नामजी ॥ श्री पूज्य ॥ ६ ॥ लायमें बलतां सतगुरु समरया । नहीं बल्यो कुंज कंवार जी ॥ शिष्य हौस्यूं श्री नेम जिण दरो । तिणने देवता काढ्यो बाहारजी ॥श्रीपूज्य॥७॥ सेठ सुदर्शनमें संकट पड़ियो । जब समर लिया जगनाथ जी ॥ विघन टल्यो देखो अर्जनमालीरा । नहीं चाल्या तिण पर हाथजी ॥श्रीपूज्य॥८॥ सीता सतीने अंजणा ने वनमें । उपसर्ग उपनां कहरजी ॥ संकट पड्यां सती सत गुरु समरया । तिणरो देव विघन कियो दूरजी ॥

श्री पूजा ॥ ९ ॥ सेठ सुदर्शणने स्मरण करतां । अभिया दीनो आलजी ॥ सूली भाट सिंघासण रचीयो । इसड़ो स्मरण शील रसालजी ॥ श्री पूज्य ॥१०॥ सती सुभद्रा ने निज सासू । दियो अण हुंतो आल जी ॥ ते लो करीने सती सत गुरु समस्या । देवी आइ तत्काल जी ॥ श्री पूजा ॥ ११ ॥ राजुल रूप देखी रहनेमि चलिया । ध्यान चूकाने दियो धिक्कार जी ॥ ध्यान स्मरण मन पाछो धरीयो । पहुंता मुगत मझार जी ॥ श्रीपूजा ॥१२॥ अरणकने कामदेव दोयाने । देवता दुख दिधा अपारजी ॥ तोपिण सतगुरु स्मरण सेंठा । देव गया तिण स्युं हारजी ॥ श्री पूजा ॥ १३ ॥ नंन्दण मणीहारो डेडको हुंतो । तिणने चौथ्रो श्रेणि करे फिकाणजी ॥ संथारो करीने सतगुरु समस्या । उपनो दुधर विमाणजी ॥ श्री पूजा ॥ १४ ॥ दल मेल्या तिहां सात नर्कना । परसनचंद राजान जी ॥ ध्यान स्मरण मन पाछो धरीयो । पाम्यां केवल ज्ञान जी ॥ श्री पूजा ॥ १५ ॥ तीर्थंकर चक्रवर्ति इन्द्रादिक । ओहि स्मरण साध जी ॥ मुक्ति पधास्या तेहिज भाष्यो । ओही मन्त्र आराध जी ॥ श्री पूजा ॥ १६ ॥ मध्यम नर कोइ स्मरण साजे जांरे बध जावे आव जी ॥ मध्यम जायगां प्यारी लागे । जांगे क्यारी खि

जी गुलाबजी ॥ श्री पूजा ॥ १७ ॥ उत्तम मध्यम रो नहीं कोइ कारण। कुल ऊंच नीच ने मध्य जी॥ स्मरण साधे तिणरे घट में। जाणे चांदणो कर दीयो चंद जी ॥ श्री पूजा ॥१८॥ जिमकोइ जलने पय ओटावे। तिम २ चोखो होवे दुध जी ॥ कर्म पातक झड़े बुण स्मरण स्यूं। निर्मल चोखीजाणंरी बुधजी ॥ श्री पूजा ॥१९॥ कपड़े को मैल कटे साबुन स्यूं। रत्न काम लगे आगजी ॥ कर्मा रो मैल छुटे स्मरण स्यूं। मिट जावे भव भव दाग जी ॥ श्री पूजा ॥ २० ॥ सुल भ बोधी स्मरण साधे। अठेही पामे ग्यान जी। अठे नहीं पामे तो परभवमें पामे। इसड़ो स्मरण ध्यान-जी ॥ श्री ॥ पूजा ॥ २१ ॥ स्मरण करतां जाणे मुख में। मीश्री पीधी गालजी ॥ शरीर बेदनां ध्यान स्मरणस्यूं। जाणे बेठा सुखपालजी ॥ श्री पूज्य ॥२२॥ पूज्य सरीषो भरत खेतमे। बीजो नहीं कोइ चीज जी ॥ स्मरण बतामे समकित आपे। हलु कर्मी रह्या रीझजी ॥ श्रीपूजा ॥ २३ ॥ साध भिखणजीरो स्मरण करतां। पहुंचे भवजल पारजी ॥ जे नर नारीरा भाग्य बडाछे। बंदे सूरत दिदारजी ॥ श्री पूजा ॥ २४॥ परजानें प्यारा बासुदेव केशव। बीरबाला तीर्थं च्यारजी ॥ पतिब्रता विकमे पति देख्यां। ज्यूं

समदृष्टि गुरु:दिदारजी ॥ श्रीपूज्य ॥ २५ ॥ अलवरो जीव फूल डम्बरमें । सारंग ने सारंग करे कूकजी ॥ ज्यूं समदृष्टिने गुरु दर्शणकी । सदा लागी रहे भूख जी ॥ श्रीपूज्य ॥ २६ ॥ अमृतफल सुवटाने मीठा । मोती मीठा मरालजी ॥ समदृष्टि सत गुरु स्मरणस्यूं । कीधांहिं हर्ष अपारजी ॥ श्रीपूज्य ॥ २७ ॥ अमृत भोजन कीधां तृप्त । पछे किसी कुकसरी लगन जी ॥ समदृष्टि सतगुरु स्मरण स्यूं । मुनि ज्यूं रहे मगनजी ॥ श्रीपूज्य ॥ २८ ॥ मन वांछित फले इण स्मरणस्यूं । समरो भिखनजी साधजी ॥ हालत चालत उठत बैठत । चितमें रहो आराधजी ॥ श्रीपूज्य ॥ २९ ॥ बेल चिया कोइ निरफल थावे । निरफल थावे कोइ बीजजी ॥ सतगुरु स्मरण निरफल नाहीं । ज्यूं सीता सतीरो धीजजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ३० ॥ मध्यम बेल्यां मंत्र जपतां । तिणस्यूंई सुधरे काजजी ॥ साधु उत्तमको स्मरण कर्यांस्यूं । निश्चयही शिवपुर राजजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ३१ ॥ काल दुक्षम मे वहोल कर्मी । आय लियो अवतारजी ॥ सतगुरु स्मरणस्यूं केवल पामे । अटके होय प्रकारजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ३२ ॥ काल सूक्षम मे हलु कर्मी । आय लियो अवतारजी ॥ सत-गुरु स्मरणस्यूं केवल पामे । इसा भिक्षू अणगारजी

श्रीपूज्य ॥ ३३ ॥ अध्येन आठमें गीनाता सूत्रमें। गुरु गुणगावे दिन रातजी ॥ गोत तीर्थंकर तेहिज बांधे। केवल पिण उपजे साख्यातजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ३४ ॥ उंच पदवी देव मानव गतमे। आद तीर्थंकर देवजी ॥ सर्व सुख पामे इण स्मरणस्यूं ॥ सारो भिखणजी री सेवजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ३५ ॥ इण स्मरण स्यूं कटे भव भवरा। कर्म कटकदल फोजजी ॥ देखो सांवलिय मुनिराजरी सूरत। पूरो मनरी मोज जी ॥ श्रीपूज्य ॥ ३६ ॥ पाखंड पेलण हाराने बिड-दांरा भारा। वर्ण सांवल इघ दिदारजी ॥ लाली लोचन चाल हस्तीनी। पूज्य ओलखो इण उणीहार जी ॥ श्री ॥ ३७ ॥ पंच महाव्रत पाले दोषण टाले। शूरवीरने धीरजी ॥ मूल गुण आचारज पूरा। आगे हुवाज्यूं महावीरजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ३८ ॥ वीर स्मरणमें पूज्य स्मरणमें। फेर नहीं तिल मातजी ॥ वीररी गादी श्रीपूज्य विराज्या। सगली चोथे आरे-रीज्यूं बातजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ३९ ॥ तीर्थ प्रवर्ताव्या ज्ञानरा गाढा। हीरा रत्नांरी खाणजी ॥ भरत क्षेत्रमें सोजत्या नहीं लाधे भिखु सरीषा बुद्धिवानजी ॥श्रीपूज्य॥ ४० ॥ हुवाने वले होसी घणेरा। हिवडांतो दिसे नांयजी ॥ गुण घणां पिण एक जिभ स्यूं। कह्या कठा

लग जाय जी ॥ श्रीपूज्य ॥ ४१ ॥ तीर्थ प्रतीपालाने ज्ञान रसाला । भविकां भंजन भीरजी ॥ अमृतवाणी जगमें बखाणी । मीठी मिश्री खीरजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ४२ ॥ खीर खाइ चक्र वरत नी दासी । रत्न करे चकचूरजी ॥ खीरजा्ं समरण समदृष्टिने । वल ज्यूं चढे पौरस पूरजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ४३ ॥ गाल दियो गर्व श्रीदेवीनो । बलदियो तिण बारजी ॥ पौरस सम समदृष्टि धर्म दियो । अन्यमति नो गर्व गालजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ४४ ॥ खीर खाइ एक ब्राह्मण बांहगे । बधियो विषय विकारजी ॥ खीर ज्यूं कुजन ब्राह्मणरो साथी । कूताज्यूं कूडत गिवारजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ४५ ॥ सुवो मैनां पढ़ावे मानव गतमें । वाणी वोले विविध प्रकारजी ॥ साख्यात मैनाने कहै समरण कीजे । समझे नहीं मुढ़ गिवारजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५६ ॥ रात दिवस त्यांरो ध्यान लग रह्यो । अन्यमतरो भजन विशेषजी ॥ निरफल जाणे कोइ सत्य स्मरणने ॥ गाढी राखे टेकजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ४७ ॥ दृढ़पणो राखो भवि जीवां । राखो स्मरण टेकजी ॥ रखे स्मरणस्यूं ढीला पड़ ज्यावोतो । अन्यमति करसी थांरी ठेकजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ४८ ॥ भगवंत भजां अरिहंत सिद्ध प्रभु । आचार्य उवज्झाय मुनिरायजी । पांच पदांरो स्मरण

साभ्भां । थाने तो पिण खबर न कायजी ॥श्रीपूज्य॥४६॥ च्यार पदारो चौबुंगढ़ । सतगुरु पोल दुवारजी ॥ पोल पायां बिन गढ़ किम पामे । ज्यूंइम गुरांको अधिकारजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५० ॥ गुरु स्तुति सुणो भवि जीवां । धारो स्मरण शील रसालजी ॥ तिरया अनंता इण स्मरणस्यूं । दाख्या दिन दयालजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५१ ॥ एहवो महिमा गुरु स्मरणारो । देवांरो आगो विशेषजी । जैनमे भजन नहीं इम मत कहो ज्यो । छोड़दो कूड़ी टेकजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५२ ॥ अन्य-मतांरो जैन धर्मरो । नहीं भजन प्रमाणजी ॥ बानगी दीखाली एक जैन धर्मरो । अहो भजन पिछाणजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५३ ॥ रहो रहो पाषण्डी इण जैन धर्ममे । मुगते पहुंता अनन्त अनेकजी ॥ गुरुदेवांरे स्मरण विना । मुगतन पहुंता एकजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५४ ॥ मृगतृष्णा ज्यूं स्मरण थारो । कण बिना थोथो बावे नाजजी ॥ गुण बिना नांवस्यूं मुगत न पामे । ज्यांरा कदेइन सुधरे काजजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५५ ॥ घुघुने दिवस नहीं सूझे । पांव रोगीने मीठो लागे खाजजी ॥ नीम पान नहीं कड़वो जहर चख्याने । गुण बिना भजन कर्म वस गाजजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५६ ॥ भगत भिखन जीरो श्रावक शोभो ।

कीधी च्यार तीरथ मन धारजी ॥ माला मोत्यांज्यूं सतगुरु स्मरण । हीराज्यूं हिरदे धारजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५७ ॥ कुगत मिटावो सुगतजावो समरो भिखनजी साधजी ॥ श्रावक शोभो कीर्ति भाषि श्रीजीदुवार सुगामजी ॥ श्रीपूज्य ॥ ५८ ॥

इति सम्पूर्णम् ।

॥ अथ श्रद्धा उपर सझाय ॥

देशी आरसी की ।

देव गुरु धर्म शुद्ध आराध्यां । समकित होवे संत सारसी ॥ यथा तथ्य दिल मांहि दरसावे । जिम मुख देखे आरसी ॥ श्रद्धा विन प्राणी अेलो जनम यूंही हारसी ॥ श्रद्धा ॥ १ ॥ वरस छवमासी तप वहु कीधा । जघन्य पद नवकारसी ॥ सुर सुख भोग रुल्यो चिहुं गतमें । नहीं आयो धर्म विचारसी ॥ श्रद्धा ॥ २ ॥ संका कांखा दुरगति लेजावें ।

से नर दूर निवारसी ॥ साची श्रद्धा जी नर धारे । ते नर आतम तारसी ॥ श्रद्धा ॥ ४ ॥ कुगुरु संगत नर भव हारी । दुरगत मांय पधारसी ॥ भव भव मांहि रुले चिहुं गतमें । नहीं हुवे छुटकारसी ॥ श्रद्धा ॥ ५ ॥ पढ़ पढ़ पोथा रह गया थोथा । संस्कृतने फारसी । विना विचारी खोटी भाषा बोले । ते किम पार उतारसी ॥ श्रद्धा ॥ ६ ॥ शुद्ध साधाने आल देइने । डूब गया कालो धारसी ॥ कोइ शुद्ध साधारी कीर्ति बोले । ते नर जन्म सुधारसी ॥ श्रद्धा ॥ ७ ॥ शुद्ध साधांरी निन्दा कर कर आतम कीम उबारसी ॥ नरकां जावे महा दुःख पावे । परमा धामी मारसी ॥ श्रद्धा ॥ ८ ॥ इम सांभल उत्तम नरनारी । सीख सतगुरु की धारसी ॥ शुद्ध साधांरी कर कर सेवा । आतम कारज सारसी ॥ श्रद्धा ॥ ९ ॥ शुद्ध साधांरी सुधी श्रद्धा वसला नन्दण सारसी ॥ सुधी श्रद्धास्युं शिवगत जायां । आवागमन निवारसी ॥ श्रद्धा ॥ १० ॥ शुद्ध श्रावकरा व्रतज पालो । दुरगत दुःख विडारसी ॥ जन्म मरण जोख मिट जावे । पावे सुख अपारसी ॥ श्रद्धा ॥ ११ ॥ मत्सर साधांसुं राखे । वेगोइ पुन्य परवारसी ॥ इण भव मांहि निजरा देखो । बिटला हुवे बिकारसी ॥

श्रद्धा ॥ १२ ॥ गुण विना सेवा करे साधांरी । नहीं सरे गरज लिगारसी ॥ कोइ हीण आचारी आपही डूबे । तिहां तुज केम निस्तारसी ॥ श्रद्धा ॥ १३ ॥ सुर सुख सेवै जे नर पावै । तप कर देही गारसी ॥ पंच आस्रव परहरो प्राणी । ममता मनरी मारसी ॥ श्रद्धा ॥ १४ ॥ लिया लिरे ने तिरसी वाला । नहीं करे पाप लिगारसी ॥ उत्तम वयण धर शिर ऊपर । ते उतरे भव पारसी ॥ श्रद्धा ॥ १५ ॥ उगणीसे बीस विद चवदस । मास कातिक सुख कारसी ॥ शहर राजगढ़ दिपमालका जोड़ करी तंत सारसी ॥ श्रद्धा ॥ १६ ॥

॥ अथ अनाथी मुनिको स्तवन ॥

राय श्रेणिक वाड़ी गया । दीठो मुनि एकंत ॥ रूप देखी अचरज थयो । राय पूछेरे कुण वृतान्त ॥ श्रेणिक राय हूं रे अनाथी निग्रंथ । सेतो लीधोरे

साधुजी रो पन्थ ॥ श्रेणिक ॥ १ ॥ कोसम्बी नगरी हुंती। पितामुज प्रबल धन ॥ पुत्र परवार भर पूरस्यूं तिणरो हूं कुंवर रत्तन ॥ श्रेणिक ॥ २ ॥ एक दिवस मुज बेदना उपनी। सो म्यूं खमियन जाय। मात पिता झूर्या घणा। न सक्यारे मुझ बेदना वंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ३ ॥ पिताजी म्हारे कारणे। खरच्या बहोला दाम ॥ तो पिण बेदना गई नहीं। एहवोरे अथिर संसार ॥ श्रेणिक ॥ ४ ॥ माता पिण म्हारे कारणे। धरती दुःख अथाय। उपावतो किया घणा। पिण म्हारेरे सुख नहीं थाय ॥ श्रेणिक ॥ ५ ॥ बन्धु पिण म्हारेहुंता। एक उदरना भाय ॥ औषध तो बहु विध किया। पिण कारी न लागी काय ॥ श्रेणिक ॥ ६ ॥ बहिनां पिण म्हारे हुंती। वड़ी छोटी ताय। बहुविध लूण उवारती पिण म्हारेरे सुख नही थाय ॥ श्रेणिक ॥ ७ ॥ गोरड़ी मन मोरड़ी। गोरड़ी अबला बाल। देख बेदना म्हायरी न सकीरे मुझ वेदना वंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ८ ॥ आंख्यां बहु आंसु पड़े। सिंच रही मुझकाय ॥ खाण पाण बिभूषा तजी। पिण म्हारेरे समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥६॥ प्रेम विलुधी पदमणी। मुझस्यूं अलगी न थाय ॥ बहुविध वेदना मैं सही। वनिता रहीरे बिललाय

॥ श्रेणिक ॥ १० ॥ बहु राजवैद्य बुलाविया । किया अनेक उपाय ॥ चन्दन लेप लगाविया । पिणम्हारेरे समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥ ११ ॥ जगमे कोइ किणरो नहीं । तब मे थयोरे अनाथ ॥ वितरागजीरे धर्म बिना । नाही कोइरे मुगतिरो साथ ॥ श्रेणिक ॥ १२ ॥ वेदना जावे मांहरी । तो लेऊं संजम भार ॥ इम चिन्तवतां वेदना गइ प्रभातेरे थयो अणगार ॥ श्रेणिक ॥ १३ ॥ गुण सुण राजा चिन्तवे । धन २ एह अणगार ॥ राय श्रेणिक समकित लीवी बान्दी आयोरे नगर मझार ॥ श्रेणिक ॥ १४ ॥ अनाथी जीरा गुणगांवतां ॥ कटे कर्मांरी कोड़ गुण सुण सुन्दर इम भणे । ज्याने । वन्दुरे वेकरजोड़ ॥ श्रेणिक ॥ १५ ॥

अथ जिन कल्पी साधुकी ढाल लिख्यते .

—o—
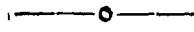
जिन कल्पी कष्ट उदेरिने लेवे । परिसाहा सहै सम परिणामोंरे ॥ आक्रोश बिबिध प्रकारना उपजै । तोइ उदेरि न जावे तिण ठामोरे ॥ शूरां वीरांरो ओशुद्ध मारग ॥ १ ॥ मास मास खमण कोइ करै निरन्तर । इतरा कर्म कटै एक .छिनमेंरे ॥ वचन कुबचन सहै सम भावे । राग द्वेष न आणे मुनि मनमेंरे ॥ शू० ॥ २ ॥ मास सवा नव जीव रह्यो गर्भमें । तो ए दुःख कितरा दिनकारे ॥ एम विचार सहै समभावे । शूर मुनि द्रढ मनकारे ॥ शू० ॥ ३ ॥ लाभ अलाभ सहै समभावे । वलि जीतव मरण समानोरे ॥ निन्दा स्तुति सुख दुःख समचित । समगिणे मान अपमानोरे ॥ शू० ॥ ४ ॥ बाइस तेतीस सागर तांइ । जीव बसियो नरक मझारोरे ॥ तो किंचित दुःखस्यूं सुंदलगिरी । एम विमासे अणगारोरे ॥ शू० ॥ ५ ॥ मेघ सरिषा मोटा मुनिश्वर । कियो पादुप गमण संथारोरे ॥ खोलीसे जीव छतां तन त्याग्यो । एक मास पहलो गुण धारोरे ॥

शू ॥ ६ ॥ सालिभद्र ने धनें. सरीषा । ज्यांरो सुख
माल लन श्रीकारोरे ॥ त्यांपिण मास मास खमण
तप कीधा । वले पादुप गमण संथारोरे ॥ शू० ॥७॥
रोग रहित तीर्थंकरनो तन । ते पिण लेवे कष्ट
उदिरोरे ॥ तो सहजांही रोगादिक उपना आइ ।
तो सम परिणामां सहे शूर बीरोरे शू० ॥ ८ ॥
इत्यादिक मुनि स्हामों देखो । ते कष्ट पड्यां नहीं
काचारे ॥ अल्पकालमें शिव सुख पामें । शूर
शिरामणी साचारे ॥ शू० ॥ ९ ॥ नरकादिक दुःख
तिव्र वेदना । जीव सह्ि अनन्ती बारोरे ॥ तो किंचित
वेदना उपना महामुनि । सहे आणी मन हर्ष
अपारारे ॥ शू ॥ १० ॥ ए वेदनाथी हुवे कर्म निर्जरा
ए वेदना थी कटे कर्मोंरे ॥ पुन्यरा थाट बंधे शुभ
जोगे । वले हुवे निर्जरा धर्मोंरे ॥ शू० ॥ ११ ॥
समचित वेदम सुखरो कारण । ए वेदनथी कटै
कर्मोंरे ॥ सुर शिवना सुख लहे अनोपम । वले हुवे
निर्जरा धर्मोंरे ॥ शू० ॥ १२ ॥ सम भावे सह्यां होवे
निर्जरा एकंत । असम भावे सह्यां होवे पाप
एकंतोरे ॥ ठाणा अंग चौथे ठाणे श्रीजिन भाष्यो ।
इम जाणी समचित सहे संतोरे ॥ शू ॥ १३ ॥

इति सम्पूर्णम् ।
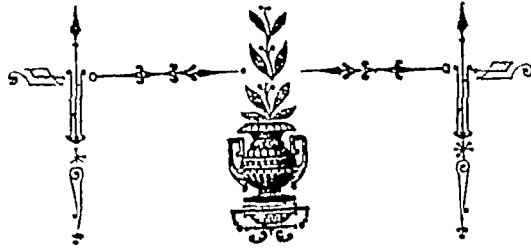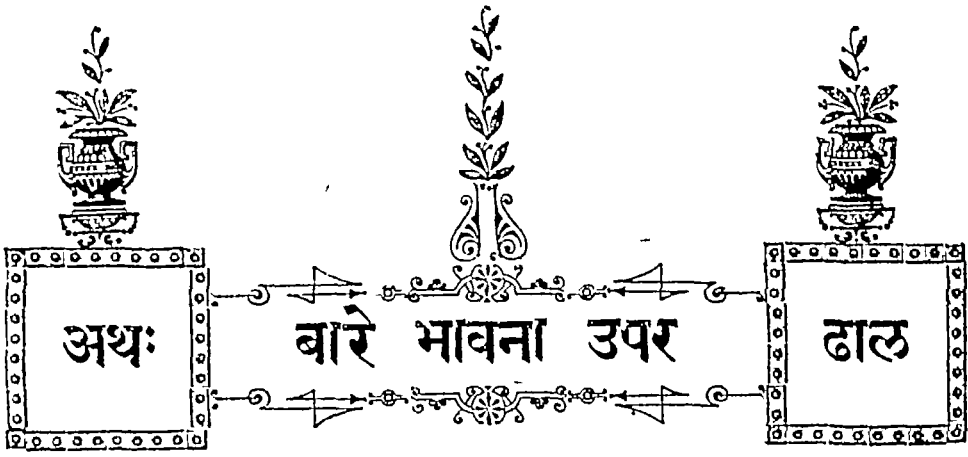
(नमिनाथ अनाथांरो नाथोरे एदेशी)

आदिनाथ अरिहन्त आख्यातोरे । बड़ो पुत्र भरत विख्यातोरे ॥ अनित्य भावना भाइ साख्याती । महामुनि मोटका नित्य वन्दोरे ॥ १ ॥ गढ़ मढ मंदिर पोल प्रकारोरे । नर इन्द्र सुरेन्द्र सारोरे ॥ नित्य नहीं सहु नर नारी ॥ महा ॥ २ ॥ अशरण भावना ऋषि अनाथीरे । एक जिन धर्म जीवरो साथीरे ॥ संयम पाली मुगत संघाती ॥ महा ॥ ३ ॥ संसार भावना सालिभद्र भाइरे । अधिक वैराग मन आइरे ॥ संयम लेइ सर्वार्थ सिद्धि पाइ ॥ महा

॥ ४ ॥ नमिराय ऋषेश्वर जागीरे । एकत्व भावना उर आणीरे ॥ मुनि जाय पहुंता निरवाणी ॥ महा ॥ ५ ॥ पंखीनो पर भावना भल भाइरे । कुंवर मृगापुत्र उर आइरे ॥ संयम लियो परवार समझाइ ॥ महा ॥ ६ ॥ चौथा चक्री सनत कुमारोरे । अशुच भावना भाइ अपारोरे ॥ राज छाड़ि संयम व्रत धारो ॥ महा ॥ ७ ॥ समुद्र पाल एलाची दोइ रे ॥ आस्रव भावना जोइरे ॥ दोनूं मुगत गया कर्म खोइ ॥ महा ॥ ८ ॥ वागणी केशी हर केशीरे ॥ संवर भावना उर बेसीरे ॥ हर केशी मुगत वरेसी ॥ महा ॥ ९ ॥ निर्मल निर्जरा भावना भाइरे । छव मासे कर्म खपाइरे ॥ अरजन माली अनन्त सुख पाइ ॥ महा० ॥ १० ॥ लोक सार भावना लीव लागीरे । शिवराज ऋषेश्वर जागीरे ॥ प्रभुपे संयम लेइ वैरागी ॥ महा ॥ ११ ॥ अठाणवे पुत्र आयारे । आदेश्वरजी समझायारे ॥ बोध दुर्लभ भावना भाया ॥ महा ॥१२॥ धर्मरुचो ऋषिरायोरे । धर्म भावना ते भायोरे ॥ दया पाली सर्वार्थ सिद्धि पायो ॥ महा ॥ १३ ॥ एवारे भावना जे भावेरे । ते नर महा सुख पावेरे ॥ वेगो मुगत नगरमे जावे ॥ महा ॥ १४ ॥ समत लेगवे वरस अठारोरे ।

कातीवद नवमी भोमवारोरे । जोड़ कीधी मालवा गांव सम्भारो ॥ मह्य ॥ १५ ॥

श्री सतगुरु पाय नमी करी । श्रीजिनवरनी वाणीरे ॥ उत्तराध्ययन सोलमे अध्ययन । ब्रह्मचार्यांगी वाड़ वखाणीरे ॥ ब्रह्मचारी नव बाड़ विचारो ॥ १ ॥ स्त्री पशु पंडक तिहां थानक । ब्रह्मचारी तिहां टालेरे । मुसा मंझारी ने दृष्टांते । प्रथम बाड़ इम पालेरे ॥ ब्र० ॥ २ ॥ स्त्री कथा करे नही मुनिवर । सुर नर नो मन डोलेरे ॥ जीर चले निंबुरी बात सुणंता । दूजी बाड़ इम बोलेरे ॥ ब्र० ॥ ३ ॥ पीढ फलग सिज्यां नहीं बैठे । नारी बैठे तिण ठामोरे ॥ बाक टूटन्ता ओसगला घाटो । वडकाचर नामोरे ॥ ब्र० ॥ ४ ॥ नेह धरी नारी रूप निरखै । फर्शे अंग उपंगोरे ॥ निजर आव्यो

सुरजथी देख्यां । चोथी वाड़ व्रत भंगोरे ॥ व्र० ॥५॥ न रहे शीलवन्त भीतर अन्तर । न सुणे जांझरनो झमकोरे ॥ हांस विलास रुदन सेवत । दृष्टन्त गाजे मोर ठमकोरे ॥ व्र० ॥ ६ ॥ पूर्वला काम भोग मति चितारो । तिणस्यूं आरत उपजे अधिकोरे ॥ अग्न वधे इंधणारी संगत । छाछ वटाउ दृष्टन्तोरे ॥ व्र० ॥ ७ ॥ सरस आहार विगय बलि अधिको । भोगव्यां विषय थाय वधतोरे ॥ सनिपात वधे दुध मिश्री पीधां । तिणस्यूं विगे लीजे तुं सदतोरे ॥ व्र० ॥८॥ अति मात्र अधिको जीमे । काम भोग विषय रस जागे रे । सेरग ठांवमें होय सेर उरे । तो आठमी वाड़ इम भागेरे ॥ व्र० ॥ ९ ॥ चावा चंदन चरचे अंगा । आभुषण अति रंगोरे ॥ छगन मगन हुवे वेस वणावे । नवमी वाड़ व्रत भंगोरे ॥ व्र० ॥१०॥ रत्तन अमोलक अधिक अनोपम । जिण तिणने देखा-वेरे ॥ रांकारे हाथस्यूं खोसी लेवे । ज्यूं शील रतन न गमावेरे ॥ व्र० ॥११॥ शील पालेते सुखिया होसी । अखी होसी नर नारीरे । सूत्र वचन जो श्रद्धे सांवला । तो मुगत जासी व्रत धारीरे ॥ व्र० ॥ १२ ॥ इति ॥

जयाचार्य कृत

श्रीभिखणजी स्वामीके गुणाकी ढाल।

स्वाम भिक्षु प्रगटे । जग मांहि कीर्ति थइरे ॥ श्रीजिन आणा शिर धरी । वर न्याय वाता कहीरे कहीरे स्वाम साचा अद्भुत वाचा कहीरे ॥ १ ॥ आगु'च उत्तराध्ययनमें । दूण आर पंचम मंहिरे । जिन बिना शिवपंथ होसी । संत तंत सहीरे ॥ सहीरे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ समत अठारा तेपना पछे । सूत्र संघ वृद्धि थइरे । बंक चुलिया मांहि बारता । तूं जोय प्रत्यक्ष सहीरे ॥ सहीरे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ द्वादश मुनि आगे हु'ता त्यां पछै वृद्धि थइरे । हेम चरण सुबुद्धि कारण प्रत्यक्ष वयण मिलइरे ॥ मिलइरे ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ स्वाम पारश सारिषा । चिन्तामणी कर लहीरे ॥ भवदधि पोत उद्योत करवा । स्वाम सूरज सहीरे ॥ सहीरे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ स्वाम भिक्षू सम- रिया । उगणीस चवदे मंहिरे । बीदासर चौमास मे जय जश कीर्ति थइरे ॥ थइरे ॥ स्वा० ॥ ६ ॥

जयाचार्य कृत

श्रीभिखणजी स्वामीके गुणाकी ढाल् ।
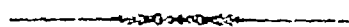
नन्दण वन भिक्खू गणमें वसोरी । हेजी प्राय जावे तोड़ पग म खोमोरी ॥ नन्दण ॥ १ ॥ गण मांहि ज्ञान ध्यान शोभेरी । हेजी दीपक मंदिर मांहे जिसोरी ॥ नन्दण ॥ २ ॥ अवनीतको देशना न दीपेरी । हेजी गणिका तणे शिणगार जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ३ ॥ टालोकड़रो भणवो न शोभेरी । हेजी नाक विना ओतो मुखड़ो जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ४ ॥ दुःखदाइ खुद्र जोवा सरीषोरी । हेजी नंदक टालो कड़ वमण जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ५ ॥ शासण मे रङ्ग रत्ता रहोरी । हेजी सुर शिव पद मांहि वास वसोरी ॥ नन्दण ॥ ६ ॥ भागवले भिखु गण पायोरी । हेजी रत्तन चिंतामण पिण न इसोरी ॥ नन्दण ॥ ७ ॥ गणपति कोप्यां गाढा रहोरी । हेजी समचित शासण मांहि हुलसोरी ॥ नन्दण ॥ ८ ॥ आड डोड चितमें म आणोरी । हेजी मोह कर्मरो तज दो न सोरी ॥ नन्दण ॥ ९ ॥ खिल खोलाव्यांरा याद करोरी । हेजी अचल रहो पिण मतिरे मुसोरी ॥ नन्दण

॥ १० ॥ बार बार सुं कहिथ तुनेगे । हेजी अडिग पणो थेतो गणामे बसोरी ॥ नन्दण ॥ ११ ॥ उगणीसे गुण तीस फागुणरी । हेजी जयजश आणामें सुख बिलसोरी ॥ नन्दण ॥ १२ ॥

श्रावक शोभजी कृत

श्रीभिक्षूगणिके गुणाकी ढाल ।

मोटो फंद दूण जीवरेरे । कनक कामणी दोय ॥ उलझ रह्यो निकल सकूं नहीरे । दर्शणरो पड़्योरे बिछोय ॥ स्वामीजीरा दर्शण किण बिध होय ॥ १ ॥ कुटम्ब ऋद्धिस्यूं राचियोरे । अन्तराय सुजोय ॥ मंगलीक दर्शण श्रीपूज्यनारे । सुगत पहुंचावे सोय ॥ स्वा० ॥ २ ॥ संसाररो सुख दुःख भोगव्यांरे । कर्म तणो बंध होय ॥ दर्शण नन्दण बन जिसोरे । कर्म चिन्ता देवे खोय ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ दान दया बोध बीजनेरे । हिरदे में दीज्यो पोय । परदेशां गुण बिस्तरे रे । ज्यूं सोनेमें रत्तन जड़ोय ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ चोरी जारी आद ओगण तजोरे । दूण भव परभव दोय ॥ खरची पुरब भव तणीरे । श्रीपूज

विना कुण पूणाय ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ साच मोतीज्यूं वायक श्रीपूज्यनारे । हिरदे मे लीज्यो पोय । ज्ञान सागर आयां विनारे । जीव मैल किम धोय ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ सोम दर्शण श्रीपूज्यनारे । हिरदेमे लीज्यो पोय ॥ सागर ज्यूं गुण पूजनारे । गागर ज्यूं किम टालीय ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ गुण विना दर्शण भेषनारे । क्रार २ डूवे सोय ॥ पूज विना दर्शण किंरा करूंरे । आप समो नही कोय ॥ स्वा० ॥८॥ पाषण्ड जाडो इण भरतमे रे । भिक्षणजी दियो रे विगोय ॥ भिनो चीरज्यूं जुवान मरोड़नेरे ज्यूं चरचा मे लिया रे निचोय ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ धुंवों असर घासनोंरे । कस्तुरी संग लिपटोय ॥ ज्यूं चित दर्शण मांहिरो । आप इसो लियोजी मनमोय ॥ स्वा० ॥ १० ॥ मीन कादे मे तड़ फोड़रे । काद सिलसी मुष्क तोय ॥ ज्यूं तड़ फड़े तुज आविकारे । कमल जेम कमलोय ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ कृषणीरो मन मेहथीरे । वादल वरसे सोय । पपईया मोर पुकारता । ज्यूं म्हे वाट रह्या सर्व जोय ॥ स्वा० ॥ दर्शण श्रीजी दुवारमेंरे । सेवक दीपक जोय ॥ भाग भलो जद ऊगसी । शोभो चरणा स्यूं कमल लगोय ॥ स्वा० ॥ १२ ॥

॥ जयाचार्य कृत ॥

अथ मुनिगुण वर्णनकी ढाल ।

मुणिन्द मोरा । भिक्षुने भारीमाल । वीर गोयम री जोड़ीरे । स्वामी मोरा ॥ अति भलीरे । मोरा स्वाम ॥ १ ॥ मुणिन्द मोरा । आप मांहि तथा गणमें जाण । शुद्ध संजम जाणोतोरे ॥ स्वा० ॥ रहिवो सहीरे ॥ मोरा ॥ २ ॥ मुणिन्द मोरा । ठाणास्यूं रहिवाण पच्चखाण । बलि अनन्त सिद्धारी साखेरे ॥ स्वा० ॥ समसद्दिरे ॥ मोरा० ॥ ३ ॥ मुणिन्द मोरा । अवगण बोलणरा त्याग । गणमें अथवा बाहिररे ॥ स्वा० ॥ बिहु तणेरे मोरा० ॥४॥ मुणिन्द मोरा । मुनिवर जे महा भाग्य । एह मर्याद आराधेरे ॥ स्वा० ॥ हित घणोरे मोरा० ॥ ५ ॥ मुणिन्द मोरा ॥ तीजे पट ऋषराय । खेतसीजी सुख कारीरे ॥ स्वा० ॥ मुनि पितारे ॥ मोरा० ॥ ६ ॥ मुणिन्द मोरा ॥ समदम उदधि सुहाय । हेम हजारी भारीरे ॥ स्वा० ॥ गुण रत्तारे मोरा० ॥ ७ ॥ मुणिन्द मोरा । जय जशकरण जिहाज । दीपगणी दीपकसारे ॥ स्वा० महामुनिरे ॥ मोरा० ॥

६ ॥ मुणिन्द मोरा । गणपतिमे शिरताज । विदेह क्षेत्र प्रगटियारे ॥ स्वा० ॥ महाधुनीरे ॥ मोरा० ॥ ७ ॥ मुणिन्द मोरा । अमियचंद अणगार । महातपस्वी वैरागीरे ॥ स्वा० ॥ गुणनिलोरे ॥ मोरा० ॥ ८ ॥ मुणिन्द मोरा । जीत सहोदर सार । ओम जवर जयकारीरे ॥ स्वा० ॥ अतिभलोरे ॥ मोरा ॥ ११ ॥ मुणिन्द मोरा । कोदर तपस्वी करूर । रामसुख ऋषि रुड़ोरे ॥ स्वा० ॥ राजतोरे ॥ मोरा० ॥ १२ ॥ मुणिन्द मोरा । शिवदायक शिवशूर सतीदास सुख-कारीरे ॥ स्वा० ॥ गाजतोरे ॥ मोरा० ॥ १३ ॥ मुणिन्द मोरा । उभय पिथल वर्द्धमान । साम राम युग वंधवरे ॥ स्वा० ॥ नेमस्यूंरे ॥ मोरा ॥ १४ ॥ मुणिन्द मोरा । हीर वखत गुण खाण । थिरपाल फतेसु जपीयरे ॥ स्वा० ॥ प्रेमस्यूंरे ॥ मोरा ॥ १५ ॥ मुणिंद मोरा । टोकरमे हरनाथ । अखय राम सुख रामजरे ॥ स्वा० ॥ इश्वररे ॥ मोरा० ॥ १६ ॥ मुणिंद मोरा । राम शम्भु शिव साथ । जवान मोती जाचारे ॥ स्वा० ॥ दमोश्वररे ॥ मोरा० ॥ १७ ॥ मुणिंद मोरा । इत्यादिक बहु संत । वले समणी सुखकारीरे ॥ स्वा० ॥ दीपतीरे ॥ मोरा० ॥ १८ ॥ मुणिंद मोरा । कलु महा गुणवंत । तीन वम्भव नी

मातारे ॥ स्वा० ॥ जीपतीरे ॥ मोरा० ॥१९॥ मुणिंद मोरा। गंगा नै सिणगार। जैतां दोलां जाणीरे ॥ स्वा० ॥ महासतीरे ॥ मोरा ॥ २० ॥ मुणिंद मोरा। जोतां महा जश धार। चम्पा आदि सयाणीरे ॥स्वा०॥ दीपतीरे ॥ मोरा० ॥ २१ ॥ मुणिंद मोरा। शासण महा सुखकार। अमर सुरी अदष्टायकरे ॥ स्वा० ॥ दायकारे ॥ मोरा० ॥ २२ ॥ मुणिंद मोरा। दववन्ती जैयन्ती सार। अनुकूल बली इन्द्राणीरे ॥ स्वा० ॥ सहायकारे ॥ मोरा ॥ २३ ॥ मुणिंद मोरा। उ-गणीसै पनरे उदार। फागुन सुदि तिथि दशमीरे ॥ स्वा० ॥ गाइयोरे ॥ मोरा० ॥ २४ ॥ मुणिंद मोरा जय जश सम्पति सार। बीदासर सुख सातारे ॥ स्वा० ॥ पाइयोरे ॥ मोरा० ॥ २५ ॥

॥ छोगजी कृत ॥

श्रीपूज्यगणिके गुणाकी ढाल।

(देशी असवारीकी)

गादी बीर गणेश्वर गहरा। भिक्षू सम अधिकारी ॥ समयांबुज दधि सार विलोञो। प्रगट कियो सम सारीजी ॥ महाराजा थांरी शोभत गण वन क्यारी ॥

शासण पति जिन इन्द्र तणीपर । लागत छिव भवि प्यारी ॥ १ ॥ धर्म नागेन्द्र सभीवर सखरो । आपथया असवारी ॥ आण समीकर झाल अनोपम । पाषण्ड मत दियो पारीजी ॥ महा ॥ २ ॥ गण वृद्धि करण वरण शिव वांधो । वर मर्याद उदारी ॥ एक गणपतिनी आणांमे रहिवो । मुनि मग लग इकतारीजी ॥ महाराजा थारी मर्यादा सुखकारी ॥ वर भिक्षु ना वयण आराध्यां उभय भवे हितकारी ॥ ३ ॥ कर्म जोग गण बाहिर निकसे । एक वे चण जे अविचारी ॥ तेह भणी साधु नहीं गीणवो । वले नही तीर्थ मझारी जी ॥ महा ॥ ४ ॥ इम वहु लिखत लिखी दीर्घ मालं । थाप्या गण शिणगारी ॥ गुण जश परिमल महक रही वर । गणि सुधर्म जिम थांरीजी ॥ महा ॥ ५ ॥ शीतांशुसादृश शीतलता । सांत दांत सुखकारी ॥ जंवु स्वाम जिसा पट तीजे । राय गणि ब्रह्मचारी जी ॥ महा ॥ ६ ॥ पाट चतुर्थं जवर गणि जय । अधिक कियो उजियारी ॥ वर मर्याद स्यूं कोट कोट कर । ऊपम करी दिपतारीजी ॥महा॥७॥ मुनि अर्ज्या पुस्तक गण वृद्धि । दिन २ अधिक तुमारी ॥ आदेज वयण अधिक फुन अतिशय । अरिहन्त ज्युंइण पारीजी ॥ महा ॥ ८ ॥ जो जिन देखन हुं सहुवे दिल

तो देखो मी जय दीदारी जो मन खंत कारण प्रसरी । तो गणि श्रुत केवल धारीजी ॥ महा ॥ ६ ॥ वीर गोयमरी जोड़ निरखणारी । हुवे भवि मन मझारी ॥ तो जय गणपति मुनि मघवा वर । पेखल्यो नयन नि-हारीजी ॥ महा ॥ १० ॥ सहु मुनि मंडन कारण आणन्दन । मुनि मघराज नितारी ॥ वर गुण वृन्दण मुखकी कान्दण । पद युगराज प्रकारीजी ॥ महाराजा थारा । शिष्य बड़ा सुखकारी ॥ मतिवन्ता युगराज मुणिन्दरी जोग मुद्रा छवि प्यारी ॥ ११ ॥ विनय बि-वेक बिचक्षण बारु । मुनि अज्याहितकारी ॥ सतिय गुलाब तणी वर महिमां । सतियांमें शिणगारीजी ॥ महाराजा थारी । शिष्यणी महा सुखकारी ॥ पद युग राज तणी वर बहनी । गण बत्सल गुणसारी ॥ १२ ॥ उगणीसे बर्ष तीस माहाघ वर । शुक्ल सप्तमी सारी ॥ वर गणीराज मर्याद हढ़ावत । लोग हर्ष हुंसि-याणीजी महाराजाथारी मर्यादा सुखकारी ॥ वर भिक्षुना वयण आराध्यां । उभय भवे हितकारी ॥

॥ इति ॥

---o---

श्रीपूज्य गणिके गुणाकी ढाल ।

(धोडाम धोडमें क्या बिगाड्या तेरा परदेशी)

महावीर गादी धर सोहे । भिक्खु गणि गुण वृन्दा ॥ जो निर्मल मणी युग नाण आणासा । प्रगट्या जेम जिणन्दा ॥ भिक्खुगणीराज धर्‌या तंत पंथ तेरा ॥ लेवा शिवराज निरणाय किया भलेरा । जो विविध मर्यादा वर बहु बांधी आगम न्याय नवेडा ॥ भिक्खु ॥१॥ एक बे त्रण जे आद टोलाथी । निकसे दुरगति वरणा । जो वेमुख नन्दक टालोकर चिन्हुं तीरथसे नहो गिणना ॥ ज्ञानी गुणवन्ता न करणा तास प्रसंगा ॥ सुगुणा मतिवन्ता जाणे तास भुयंगा ॥ २ ॥ कलुष भाव गणपतना गणथी । आणे निपट निरलजा ॥ जो कुरव कायदो सवही खोवे । बांधे अपयश ध्वजा ॥ पुद्गल सुख वरवा समकित चरण गमावे ॥ लागे फल कड़वा जगमें फिट फिट थावे ॥ ३ ॥ गणपतने गण धी गुणवन्ता । अनुकूल लीन सुचंगा ॥ जोमुक्ता हल भल माल सरीषा लागे विनय प्रसंगा ॥ गणनन्दन वन रमीयां मिटे जन्म मृत्यु फेरा ॥ गणी आणांमे वहियां देखे मुगत गढ डेरा ॥४॥ भिक्खु भारिमाल नृप इन्दु । चौथे जय महाराजं ॥ जो पाछी जिनमग खोप

चढाद्ू महावीर सम आजं ॥ गणाधिप गणपत तुम चरणे चितमेरा ॥ दीजे शिव सम्पत शरण लियामैं तेरा ॥ ५ ॥ शशि सम सोम प्रकृति सुखमालं । अतिशय धर युगराजं । जी सतियां मांहि सती शिरोमणि । गुलाब कुंवर शिरताजं ॥ मुनिराज सतियां धरो शीश जय सीको ॥ युगराज मुणिन्द मघराज तणो अहो सीखो ॥ ६ ॥ उगणीसे गुण तीस महाग सुद । बीदासर रंगरेला । जो मर्यादा महोत्सव दिन नीका चिहुं तीरथां ना मेला ॥ भिक्षु गणिराज धर्या तंत पंथ तेरा ॥ ७ ॥

इति ॥

॥ मोतीजी स्वामी कृत ॥

श्रीपूज्य गणिराजके गुणाकी ढाल ।

पंचम आरे मझार ॥ हो सुखकारीरे सुगुणा ॥ भिक्षु प्रगटे भविजन ॥ भवो दधि तारवारेलोय ॥ आगम वच अनुसार ॥ हो सुखकारी रेसुगुणा ॥ मानुं जिन जिम जाहिर ॥ जगत उद्धारवारे लोय ॥ १ ॥ तुम वाणी है जाणो अमिय समान ॥ हो० । सु० ।

सु० । गुण खाणी हित आणीरे । धार्यां हिया मझेरे लोय ॥ अजर अमर सुखदान ॥ हो० । सु० । सु० । मन वंछित कारज । सारे ते सहु सझेरे लोय ॥ २ ॥ रटतां जिह्वां तुम नाम ॥ हो० । सु० । सु० । कटता पातिक दटतारे । फटता कर्म रिपुरे लोय ॥ पटता शिव सुख धाम ॥ हो० । सु० । सु० ॥ हटता पुद्गल प्यासारे । घटता जे वपुरे लोय ॥ ३ ॥ साठे भिक्खु कियोहै संथार ॥ हो० । सु० । सु० । सात पोहर लग पालीरे । परभव पांगर्यारे लोय ॥ तसु पट गरु मल सार ॥ हो० सु० । सु० । जंबु स्वाम तणी पर । नृपशशि संचर्यारे लोय ॥ ४ ॥ चतुर्थथये जय जयवन्त ॥ हो० । सु० । सु० । मघराजा युगराजारे । सरद शशि जिसोरे लोय ॥ सतिय गुलाबांजी गुण तंत ॥ हो० ॥ सु० सु० । भाद्रवे शुक्ल त्रयोदशी । मन आणन्द हुसोरे लोय ॥ ५ ॥

स्वामी भिषणजी कृत ।
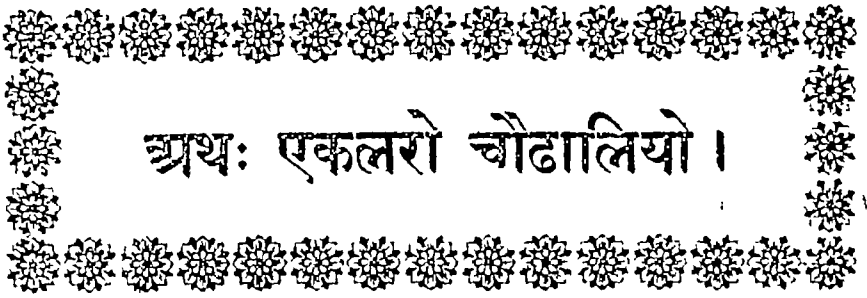
अथः एकलरो चौढालियो ।

दोहा । आरम्भ जीव गृहस्थी फिरै त्यांरी लेश्याय ॥ अन्य तीरथी पासत्थादिक । तेपिण तेहवा थाय ॥ १ ॥ बैरागे घर छोड़ने । राचै विषय रस रंग ॥ रागद्वेष व्याकुल थका । करे ब्रतनो भंग ॥ २ ॥ ते रति पामे पाप कर्ममें । सावद्य सरणो मान गण छोडी हुवै एकला । कूड़ कपटरी खान ॥ ३ ॥ न्यात लजावै पाछली । वलि भेष लजावणहार । एहवा मानव एकल फिरै । धिग त्यांरो जमवार ॥ ४ ॥ ते घणा भेलो रहै सकै नहीं । ते एकलड़ा थाय ॥ कुण २ दोष तिणमे कह्या । ते सुणज्यो चितलाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

(कर्म जोगे गुरमाठा मिलीया एदेशी)

केइ आप छांदे फिरे एकला । ते जिन मारगमें नही भला ॥ साध श्रावक धर्म थकी टलिया । संसार समुद्र मांहे कलिया ॥ १ ॥ एकलो देख लोक पूछा

करै । तीवणो क्रोध करीने तिणस्युं लड़ै ॥ वली वांदे नहीं जव मान वहै । करड़ा वचन तिणमेरे कहै ॥ २ ॥ कपटाइ घणीछे एकलतणी । सूत्रमे भाष्यो त्रिभुवन धणी ॥ वली लोभ घणोछे वहुल पणे । श्रीवीर कह्योछे एकल तणे ॥ ३ ॥ वहु आरंभने विषे रक्त घणो । संचोकरै बद्ध पाप तणो ॥ नटवी चर्य भोगतणो । वहु भेषधर महा गृधपणो ॥ ४ ॥ घणा प्रकारे करे धूर्तपणो । संकै नहीं करतो कर्मरिणो । अध्यवसाय मनरो अतहो घणो । माठो वर्तेछे एकल तणो ॥ ५ ॥ वहु कोहे माणे माया लोभ पणो । रते नरे सढ़े संकए घणो ॥ ए आठ ओगण घटसे वरतो । हिंसादिक आस्रवनो भरयो ॥ ६ ॥ वली साधुनो लिंग लियां वहै । कर्म ए वांध्यो इम कहै ॥ हुं छुं धुर धारतियो आचारी । सतरे भेद संजम धारी ॥ ७ ॥ रखे कोई देखे अकारज करतो । आजीवका अर्थी रहै डरतो ॥ अज्ञान प्रमाद स्युं दोष भर्यो । निरंतर मुढ मोह कुप पर्यो ॥ ८ ॥ निजधर्म न जाणे पाप फंदे रह्यो । त्यांने कर्म वांधपने पंडित कह्यो ॥ पाप कर्म स्युं अलगा रहै नहीं । त्यांने संसारमे भमणो कही ॥ ६ ॥ आचारंग पांचमें अध्येन भाख्यो । पहले उद्देशे जिनदाख्यो ॥ ए चिरत कह्या छे एकल

तणा । दूण अनुसारे अतही घणा ॥ १० ॥ एहवा अपछंदा अवनीतो । त्यां छोडी जिनधर्म तणी रीतो ॥ निरलज भागल विपरीत । किम आवे त्यांरी प्रतीत ॥ ११ ॥ उसन्नादिक पांचुरे भणी । सूत्रमे वरज्याछे त्रिभुवनधणी ॥ ए तो मोक्षमारग रा छै फन्दा । एहवाछे जैन तणा जिन्दा ॥ १२ ॥ त्यां छोडी लोकिक तणी लजिया । शंका नहीं आणे करता कजिया दोषण काव्यां तो तपता रहे । आया परिसा ते किम सहे ॥ १३ ॥

दोहा ॥ ठाणा अंग मांहि कह्यो । एकलरो बिव-हार ॥ आठ गुणा कर सहितछे ते सुणज्यो विस्तार श्रद्धामें संठोघणो नसके देव डिगाय । सत्यवादी प्रगन्या शूरछे । वलि बोले नहीं अन्याय ॥ २ ॥ सूत्र अहवा सक्त घणी । मर्यादावन्त बखाण ॥ बहु श्रुत्ति नवमा पूर्वतणो । तीजो आचार वत्थु नो जाण ॥ ३ ॥ पांचमें पांचु समर्थो । शरीर तप एकल पणो जाण । सबे करी संठो घणो । समर्थ शरीर बखाण ॥ ४ ॥ कलहकारी छठे नहो । सातमें धीरज ताह ॥ अनुकूल प्रतिकूल उपसर्ग सहे । आठमें वीर्य उछाह ॥ ५ ॥ ए आठगुणा सहितछे । तो करणो उग्र विहार ॥ ते पिण गुरु आज्ञा दियां । फिरे एकल मल अणगार ॥ ६ ॥ आठगुणा

त्रिन एकल फिरे । ते अगत्त मूढ अयाण ॥ वली आचारंगमें निषेधियो । ते सुणज्यो चतुर सुजाण ॥ ७ ॥

ढाल २ जी

(त्याने पाषंडि नीदुवे जिन कह्यारे ए देशी)

एकलमें मुनिवर रो भाव निषेधियोरे । अव्यक्तने कह्योछे गण विगाड़रे ॥ दुष्ट प्राक्रमरो थानक तेह-मेरे । दुष्ट कह्यो तिणरो विवहाररे ॥ अव्यक्तने रहवो निषेध्यो एकलोरे ॥ १ ॥ धुर सुं तो लोग्गे अरिहन्त भागन्यांरे । एक तो आहिज मोटी खोड़रे ॥ वले नांव धरावे एकल साधरोरे । तेतोछे जिन शासणमें चोररे ॥ अ० ॥ २ ॥ सूत अव्यक्त ने वय अव्यक्त पणोरे । तिणरी चौभंगी मनमें धाररे ॥ यां दोनूंही बोलांमें काचो नहीरे । तो नचित रहो एकल अणगाररे ॥ अ० ॥ ३ ॥ कोइगण मांहि रहता पड़ियो फूकमेरे । तिणमेगुरु हितस्युं दोधी सीखरे । अव्यक्त क्रोध तणे वश आयनेरे । वचन न बोले गुरुने ठीकरे । ५० ॥ ४ ॥ सगला साधु तो इमहिज चालतारे । त्याने सीखावण न दे कांयरे । हुं वणा मांहि तो रहमकुं नहीरे । औवट घाट घणो मनमांयरे ॥ अ० ॥ ५ ॥ अभमानी आपणपो मोटा मानतारे । प्रबल

मोह मांहि मुझायरे ॥ कार्य अकार्य शुद्ध सूझै नहीरे । विवेक विकल ते एकल थायरे ॥ अ० ॥ ६ ॥ ग्रामाणुं गाम विचरतां तेहनेरे । घणी अबाधाउपजै आयरे ॥ अबाधा एकलने खमणी दोहेलीरे । खमवारा जाणे नहीं उपायरे ॥ अ० ॥ ७ ॥ वीर कह्यो म्हांरा उपदेशथीरे । तेने शिष्य एकल पणो म होयरे ॥ आतो अज्ञा तिर्थङ्कर देवनीरे ; गमण मत छोड़ो सूत्र जोयरे ॥ अ० ॥ ८ ॥ आचारंग पांचमा ध्ययनमेंरे चोथे उद्देशे एहवा भावरे ॥ उपसर्ग थी आबाधा उपजै तेहनेरें । विवरो कहुं छूं तिणरोन्यायरे ॥ अ० ॥ ९ ॥

दोहा । श्वास खांस ताव तेजरो । रोगउपजै अनेक बिध थाय । वले गरढा पणो आयां थकां । विविध पणे दुःख थाय ॥ १ ॥ वले प्रणाम चल विचल हुवै । किणरी हटक न थाय ॥ ज्यां एकल पणो आदर्यो । त्याने परभव चिन्त न काय ॥ २ ॥ जो साधांरी संगत रहै । तो बधै घणो बैराग ॥ आप छांदे एकल फिरै । जाय संजम थी भाग ॥ ३ ॥ भागणारा उपाय छै अतिघणा । तेपूरा कह्या न जाय ॥ पिण कहुं थोड़ोसी बानगी । ते सुण ज्या जित लाय ॥ ४ ॥

ढाल ३ जी ।

धिग २ मोह विडम्बणा उद्देशो ।

साव चढ़े काटे चाकरी । वाचा कवि बोलयो न विजायोरे । हवा अतुलवाय भडकियो । उणारे कुण सखाइ थायोरे । धिग २ चव्यक्त एकलो ॥ १ ॥ कदा कर्म जोगे कुतड़ो डसे । तो ठले मातर कुणजायोरे । डामरू जानव वालादिक हुवां । उणारे कुण आहार पाणी ल्यायोरे । धि० ॥ २ ॥ जब कोइ कायर सिधावता । पाप छांडि करे मन जाणयोरे । भूख तृषागा पीड़िया खावै गृहस्थीरो आणयोरे ॥ धि० ॥ ३ ॥ केइ आर्त ध्यान मांहि मरै । नरक तिर्यंचमे जायोरे । उत्कृष्टो अनन्ता भव भमै । चिहुं गतगोताखायोरे ॥ धि० ॥४॥ स्त्री आय वकारियां । लाग ज्यावे तिण चालेरे । विटल हुआ ने डोसोघणा । जिणवीलज्या शील पालेरे ॥ धि० ॥ ५ ॥ विषे अत्यन्त पिछांयसा । वेश्यादिकने घरे जायोरे ॥ माठी भावना आनियां । कुण पाछो तिणने ठायोरे ॥ धि० ॥ ६ ॥ पचायें करतो संके नहीं । घोड़ा सुखरे काजेरे ॥ वात चाली हुवां लोकमे । पाने वैसण वाला पिधनाजेरे ॥ धि० ॥ ७ ॥ समजावी नरनारिया । एकान्त टूर राखीजेरे ॥ घर हाथ हांसी हुवै लोकमे । इणड़ो काम न कीजेरे ।

धि० ॥ ८ ॥ क्यां स्युं प्रकृत पाछी मिले नहीं । क्यां स्युं न मिलै सभावोरे ॥ दुःख वांधी हुवे एकला । केइ करे घणा अन्यायोरे ॥ धि० ॥ ९ ॥ क्यां स्युं पोते आचार पले नहीं । बले कूड़ कपटरो चालोरे ॥ ते गणछोड़ी हुवे एकला । ओरां शिर दे आलोरे ॥ धि० ॥ १० ॥ क्यां स्युं पोते आचार पले नहीं । पिण समकित राखे चोखोरे ॥ गण छोडी हुवे एकला । नहीं काढे ओरांमे दोषोरे ॥ धि० ॥ ११ ॥ पछे मोह कर्मउदै हुवां । कुड़ कपट चलावेरे । फिरतो भाषा बोले घणी । अणहुंता अवगुणगावेरे ॥ धि० ॥ १२ ॥ गामां नगरां विचरतां । लोक पूछै हर कोइरे ॥ थे साधां मांस्युं निकली । आतमा कांय विगोइरे ॥ धि० ॥ १३ ॥ जब केइक बोलै पाधरा । केइ बोले आल पंपालोरे ॥ केइ क्रोध करी महा प्रजले । केइ मुंह करे बिकरालोरे ॥ धि० ॥ १४ ॥ केइ दोषण ढाके आपणा । औरांसे बतावे चूकोरे ॥ पूछ्यां न बोले पाधरा । पुजाश्लाघा भूखोरे ॥ धि० ॥ १५ ॥ केइक लाला लोलो करे । आहारादिकरा लपटोरे ॥ पूरो निकाल काढे नहीं । एसा छे एकल कपटोरे ॥ धि० ॥ १६ ॥ आय साधाने बनणा करे । महा माठा परिणामोरे ॥ विनो नर्माइ करे घणी । एक पेट

भरणरे कामारे ॥ धि० ॥ १७ ॥ समभु नरनार वान्दे नहीं । आज्ञा लोप एवालो देखीरे ॥ आहार पाणी न दे भावस्युं । तो हुवे साधांरो द्वेषीरे ॥ धि० ॥ १८ ॥ तेछल छिद्र जोवतो रहै । दुष्ट प्रणामा दिन काढेरे ॥ च्यार तीर्थं स्युं तपतो रहै । मोख-तणी व्रत वाढेरे ॥ धि० ॥ १९ ॥ दग्ध बीजकरे आकरो । ओरांरे घाले संकोरे ॥ भर्ममें नाखे लोकने । एमोछै एकल बंकोरे ॥ धि० ॥ २० ॥ चितभरमो फिरतो रहै । तिण साची समकित नावे रे ॥ कदाच ज्यो आइ हुवी । तो थोड़े मांहे गमा-वैरे ॥ धि० ॥ २१ ॥ मांगने खाणो पारको । वले कमे साधुको भेषोरे ॥ श्रद्धा राखे निर्मली । केइक विरला देखोरे ॥ धि० ॥ २२ ॥ च्यार तीर्थमे ओर लोकमें । फिट २ सगले कहाणोरे ॥ जो अवगुण आणे आपमें । साची श्रद्धारा ए अहनाणोरे ॥ धि० ॥ २३ ॥ वले अपगुण काढे तुरत तेहनो । तोही कलुष भाव नहीं आणेरे ॥ आभन्तर समकित परगमी । तेतो मोटा उपगारी जाणेरे ॥ धि० ॥ २४ ॥ वोध सम्यक्त पायो ज्यांकने । त्याने दिठां हर्षत थायोरे ॥ विनै भगत करे घणी । तो साची श्रद्धा दिसे तिण-मांयोरे ॥ धि० ॥ २५ ॥ साध साधवी ने श्रद्धा तणा ।

पूठ पाछे गुण गावेरे ॥ एहवा धारा बोलतां । प्रतीत हुवा विध आवेरे ॥ धि० ॥ २६ ॥

दोहा ॥ भला कुलरी बिगड़ी तिका । नोवे बिराणा साथ ॥ ज्यूं साधु बिगड्यो आचार थी । किण विध आवे हाथ ॥ १ ॥ आज्ञा लोपी सतगुरु तणी । तिणनें ओपमा छे गलिहार ॥ आप छन्दे एकला फिरे । ज्यूं ढोर फिरे कलिहार ॥ २ ॥ बिगड़्या धा-नरो पारखती । बैठां दुर्गंध आय ॥ ज्यूं एकल री संगल कियां । बुद्ध अकाल पत जाय ॥ ३ ॥ जो एकल ने आदर दिये । तो बधे घणो मिथ्यात ॥ फूट पड़े जिनधर्म में । ते सुणज्यो विख्यात ॥ ४ ॥

ढाल चौथी ।

(धन्य २ मेतारज मुनि परदेशी)

जिण शासणमें आगन्यांवडी । आतो बांधिरे श्री भगवन्तपाल ॥ ए तो सजन असजन मेला रहे । छांदे चालेरे प्रभु बचन संभाल ॥ बुद्धिवन्ता एकल संगत न कीजिये ॥ १ ॥ छांदो रुध्यां बिण संजम न पजे । उत्तराध्ययनरे चौथा अध्ययन मांह ॥ गाथा ीमांहे कह्यो । एतो जोवोरे चौड़े सूत्ररो न्याय ॥ बु० ॥ २ ॥ छांदो रुंध्यां बिण संजम न निपजे । तो

कुल चालेरे परनी आज्ञा मांय ॥ सहु आपमती हुवी एकला । खिणमें भेलारे खिणमें बिखर जाय ॥ बु० ॥ ॥३॥ जो आपमते हुवे एकला । तो शासणसेंरे पड़जाय घमडोल ॥ एहवा अपछंदारी करे थापना । ते भेद न पायोरे भूलां रह गई भोल ॥ बु० ॥ ४ ॥ वैराग घटै तिणरी पाखली । की उणरी संगतरे आवे मूल मिथ्यात ॥ की साधां सुं उतर जाय आसता । साची श्रद्धारे एकलरी बात ॥ बु० ॥ ५ ॥ भिड़कावे साधांरी समुदायथी । आपसमें रे बोले विरूवा वैण ॥ वले छिद्र दावे एक एकने । साध दिठांरे वले अंतर नयण ॥ बु० ॥ ६ ॥ नकटादिक चोर कुशीलिया । बधी चाहवेरे आप आपणी न्यात ॥ ज्युं भाव लगे भागल मिले । घणो हर्षरे करे मनोगत बात ॥ बु० ॥ ७ ॥ चोरी जारी खून अकारज कियां । राजा पकड़ेरे शिर छेदे खोड़ ॥ वले देशनिकालादे काढियां । त्याने राखेरे भील मैणादिक चोर ॥ ॥ बु० ॥ ८ ॥ ते बिगाड़ करे तिण देश नो । भील मैणारे त्यासे आणी साथ । दुःख उपजावे रेत गरीबने । धन लेज्यावेरे त्यांरी कर कर घात ॥बु०॥ ६ ॥ त्याने असणादिक आदर दियां । लफरो लागेरे भाग्यां राजारी आण ॥ कदा राय कोपे तो धन खो

सले। जीवां आरेरे तिणारा एफल जाण ॥ बु० ॥१०॥ कुगाली दिष्टंते साधांरे समुदायमें। दोष सेव्यांरे साध आठे गणनार ॥ ते आप छांदे एकला रहे। घे भाग सरे आगे पाछे फिरे लार ॥ बु० ॥ ११ ॥ तेतो साधांरा ओगण बोलता फिरे। मुख मीठोरे खिले अंत रघात ॥ ओछी बुद्धवालाने विगोवता। कुड़ीकथ थीरे कुड़ीकर कर बात ॥ बु० ॥ १२ ॥ त्यांरी भाव भगत संगत कियां। तिण भांगीरे श्रीजिनवर आण। तेतो दुःख पामे डूण संसारमें। उत्कृष्टोरे अनन्ता जन्म मर्णं जाण ॥ बु० ॥ १३ ॥ चोरने आहार आदर दियां। इहलोकरे धनजीवरो विणास ॥ भेषधारी भागल एकल तणो। संगत कीधांरे बंधे कर्म्म तणोरास ॥ षु० ॥ १४ ॥ उसन्ना कुशील्याने पासत्था। अपछंदारे संसतादिक जाण ॥ त्याने तीरथमें गिणवा नहीं। कर लीज्योरे जिन वचन प्रमाण ॥ बु० ॥ १५ ॥ एतो हेलवा निन्दवा जोग छै। खोट करणोरे त्यांरी ज्ञातामे साख ॥ त्यांरो संग परचो करणो नहीं। सूतमेंरे भगवन्त गया भाख ॥ बु० ॥ १६ ॥ आतो अनन्त संसारे आरे कियो इह लोकरे परलोक हुसी भंड ॥ त्याने आहार पाणी उपधि दियां। तिणने आवेरे चौमासीरो दंड ॥

वु० ॥ १७ ॥ भेला बैठ सज्झाय करणी नहीं । नहीं करणोरे त्यांरे साथ विहार ॥ यांरो संग परचो करतां थकां । ज्ञानदर्शणरे चारित्ररो विगार ॥ वु० ॥ १८ ॥ एती चरित्र कह्यो एकलणो । भवजीवानेरे प्रतिबोधण काज ॥ इम सुणरने नर नारिया । सतगुर सेव्यांरे पामे मुगत नो राज ॥ वु० ॥ १९ ॥

इति श्री एकलरो चौढालियो समाप्त ।
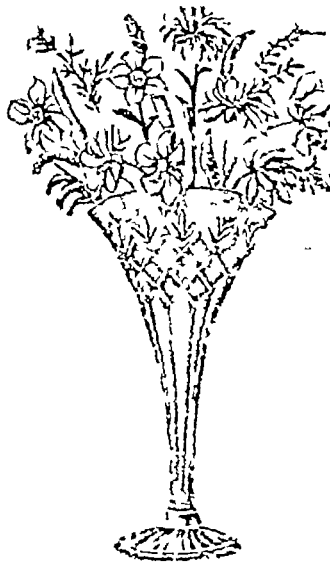
* दोहा *

महावीर प्रणमी करी, आराधना अधिकार ॥
अन्त्य समय नें जोग्य ए, आखूं तसु दश द्वार ॥ १ ॥

प्रथम आलोयण मन शुद्ध, करवी तज कपटाय ॥
व्रत अतिचार आलोवियां, आतम निरमल थाय ॥ २ ॥

उच्चरवा वली व्रत शुद्ध, ऊंचे शब्द उचार ॥
अंतकरण हर्ष आण नें, शांति पणो मनधार ॥ ३ ॥

सगला जीव खमावणा, प्रतिकूल जे नरनार ॥
जूजूआ नाम लेइ करी, कलुष भाव परिहार ॥ ४ ॥

अष्टादश जे पाप प्रति, वोसिरावे धर प्रीत ॥
चोथो द्वार कह्यो इसो, छांडे सर्व अनीत ॥ ५ ॥

अरिहंत सिद्ध साधु तणो, केवली भाषित धर्म ॥
पडिवजवा ए शरण चिहुं, पंचम द्वार सु मर्म ॥ ६ ॥

दुःक्रत नी करवी निंदा, छट्ठा द्वार मझार ॥
अशुभ कार्य पोते किया, तसु निंदा दिलधार ॥ ७ ॥

सुकृत नी अनुमोदनां, सप्तम द्वार उदार ॥
शुभ करणी पोते करी, तसु अनुमोदन सार ॥ ८ ॥
भावन रूड़ी भाववी, धर्म शुक्ल वर ध्यान ॥
अष्टम द्वार कह्यो इसो, संवेग रस गल तान ॥ ९ ॥
नवमे अणसण आदरै, करै आहार परिहार ॥
अनंत मेरु सम भोगव्या, पिणतृप्तिनहुवोलिगार ॥१०॥
दशमे श्री नवकारनो, समरण सहाय करंत ॥
मनवंछित वस्तु मिलै, सुर शिव फल पावंत ॥११॥
इण विध दश द्वारे करी, तन मन वशकर सोय ॥
आराधनां पद पामियै, निर्भय चित अवलोय ॥१२॥
हिव विस्तार करी कहूं, जूजूआ दशूं स्वरूप ॥
प्रथम आलोयण विधप्रवर, सांभलज्यो धर चूंप ॥१३॥

* ढाल १ *

(अनित्य भावना भाइ भरेतशर पदेशी)

ज्ञान दर्शण चारित तप वीर्य। पंच आचार पिछाणी ॥ अतिचार आलोवै उत्तम मुनि। समता रस घट आणीरा ॥ मुनीश्वर आलोयणां इम कीजे। समता रस घट पीजैरा। मुनीश्वर। आतम वश कर लीजे ॥ १ ॥ काल विनय आदि आठ प्रकारे। ज्ञान आचार विध कहीजे ॥ ते आठ प्रकार रहित

ज्ञान भणियो तो। मिच्छामि दुक्कडं दीजैरा ॥ मु० ॥ २ ॥ आ० ॥ सूत्रपाठ अर्थ विरुद्ध कह्यो हुवै ॥ अक्षर हीणाधिक आख्यो ॥ जोग घोष हीण खोट तणो सहु ॥ मिच्छामि दुक्कडं भाख्योरा ॥ मु० ॥ ३ ॥ आ० ॥ विनय करी नें रहित ज्ञान भणियो। मूल अकालि गुणियो ॥ असिझाइमे सझाय करी हुवै। तो मिच्छामि दुक्कडं थुणियोरा ॥ मु० ॥ ४ ॥ आ० ॥ ज्ञानतणो तथा ज्ञान वंतनी। अवज्ञा आशातना कीधी ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं। हिव निंदा तज दीधीरा ॥ मु० ॥ ५ ॥ आ० ॥ ते ज्ञान तणा पंच भेद कह्या छै। त्यांरा करी निषेधणा जाणी ॥ ज्ञान तणो वलि उपहास्य कीधो तो। मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मु० ॥ ६ ॥ आ० ॥ ज्ञान निन्हविशोनें ज्ञान गोपवियो। इम ज्ञानातिचार आलोवै वली दर्शण ना अतिचार आलोवी ॥ कर्मरूप मल धोवैरा ॥ मु० ॥ ७ ॥ आ० ॥ दर्शण आचार नि शङ्कता प्रमुख। अठगुण सहित कहीजै ॥ ते गुण सम्यक् प्रकारे न धार्‌या तो। मिच्छामि दुक्कडं दीजैरा ॥ मु० ॥ ८ ॥ आ० ॥ सूत्र साधुनें छकाय मांहे। जे काइ शङ्का आणी ॥ तेहनो पिण सहु मिच्छामि दुक्कडं ॥ त्रिविध २ कर जाणीरा ॥ मु० ॥ ९ ॥ आ० ॥ गहन बात काई देखी

सिद्धंतनी । शङ्का भ्रम मन आख्यो ॥ तेहनो मिथा सहु मिच्छामि दुक्कडं । हिव म्हें सत्य कर जाख्योरा ॥ मु० ॥ १० ॥ आ० ॥ छ काय जीवां मांहि शङ्का राखी । अथवा सिद्ध संसारी ॥ भ्रमजाल पड्यो तुच्छ लेखाकर । मिच्छामि दुक्कडं विचारीरा ॥ मु० ॥११॥ आ० ॥ आचार्यादिक साध साधवी । गण समुदाय गुणोजै ॥ त्यांमै साध पणारी शंका राखीतो । मिच्छामि दुक्कडं दीजैरा ॥ मु० ॥ १२ ॥ आ० ॥ अनंत गुणो फेर कह्यो चारितमे । पज्जवा हीण वृद्धि देखी ॥ संयमरी मन शङ्का आणी तो । मिच्छामि दुक्कडं विशेषीरा ॥ मु० ॥ १३ ॥ आ० ॥ एकम चवदश पूनम चंद सम । मुनि कह्या यति धर्म धारी ॥ त्यांमे साध पणां री शङ्का राखी तो । मिच्छामि दुक्कडं उदारीरा ॥ मु० ॥ १४ ॥ आ० ॥ चोमासी क्षमामी डंड वाला सुं । कलुष भाव कोई आयो ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं । हिवमे भ्रम मिटायोरा ॥ मु० ॥ १५ ॥ आ० ॥ शील अनें चरित सहित मुनि कोई । चरित सहित सुशील न कोई ॥ एहवी प्रकृति वालासे संयम नहीं सरध्यो । तो मिच्छामि दुक्कडं होइरा ॥ मु० ॥ १६ ॥ आ० ॥ आचार्यादिकनां अवगुण बोली । घालीचोगांरै भंको ॥ तेहनो पिण मुझ

मिच्छामि दुक्कडं ॥ हिव म्हें मेल्यो वंकोरा ॥ मु० ॥
॥ १७ ॥ आ० ॥ देव गुरु धर्म रतन तीनूंमे । देश सर्व
शंक धारी ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं । हिव म्हें
शंक निवारीरा ॥ मु० ॥ १८ ॥ आ० ॥ कंखा ते अन्य
मतनी वांछा । तथा पासत्था बुगल ध्यानी ॥ बाह्य
क्रिया देखी त्यांरी वंछा कीधी तो । मिच्छामि दुक्कडं
पिछाणीरा ॥ मु० ॥ १९ ॥ आ० ॥ वितिगिंछा ते संदेह
फलनो । प्रशंसा पाषंडी नी कीधी ॥ पोत भाव परचो
कियो तेहनो । मिच्छामि दुक्कडं प्रसिद्धिरा ॥ मु० ॥
॥ २० ॥ आ० ॥ इम दर्शण अतिचार आलोवै । हिव
चारित्र अतिचारो ॥ सुमति गुप्त सहित व्रत न पाल्या
तो । मिच्छामि दुक्कडं विचारोरा ॥ मु० ॥ २१ ॥ आ० ॥
इर्य्या सुमति पूरी नहीं सोधी । चालंता चिंतवणा
कीधी ॥ अथवा चालंतां बातां करी हुवै । तो मिच्छामि
दुक्कडं प्रसिद्धिरा ॥ मु० ॥ २२ ॥ आ० ॥ क्रोध मान
माया लोभ तणै वश । वचन काढ्यो मुख बारै ॥ हास
कितोल करी हुवै किण सूं तो । मिच्छामि दुक्कडं म्हा-
रैरा ॥ मु० ॥ २३ ॥ आ० ॥ भय वश बोल्यो नें मुख
नो अरिपणो । बलि करी विकथा विवादो ॥ तेहनो
पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं । हिव मुझ हुइ समाधोरा
॥ मु० ॥२४॥ आ० ॥ एषणां सुमति गवेषणां न करी ।

शङ्का सहित आहार लीधो ॥ राग द्वेष आण्यो सरस निरस पर । मिच्छामि दुक्कडं दीधोरा ॥ मु० ॥२५॥ आ० ॥ वस्त्र पात्रादिक लेतां मेलतां । रूड़ी रीत न जोयो ॥ अथवा परठतां करी अजैणा तो । मिच्छामि दुक्कडं होयोरा ॥ मु० ॥ २६ ॥ आ० ॥ मन गुप्ति मांहि दोष लगायो । अशुद्ध मन वरतायो ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं । हिव हूं आणंद पायोरा ॥ मु० ॥ २७ ॥ आ० ॥ वचन गुप्ती विराधना कीधी । सावज्य वचन उचार्‍यो ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं । हिवे समता रस धार्‍योरा ॥ मु० ॥ २८ ॥ आ० ॥ काय गुप्तिमें करी खंडना । काय अशुद्ध वरताई ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं । हिव काय गुप्ति सवाइरा ॥ मु० ॥ २९ ॥ आ० ॥ विणजोयां विण पूंज्यां कायासूं । उटिंगणां-दिक लीधा ॥ पसवाड़ो फेर्‍यो पगादि पसार्‍या । तो मिच्छामि दुक्कडं दीधारा ॥ मु० ॥ ३० ॥ आ० ॥ पृथवी अप तेउ वाउ वनस्पति । वेन्द्री चूरणियादिक जाणो ॥ अलसिया नें पूंहरादिक हणिया । तो मिच्छामि दुक्कडं पिछाणोरा ॥ मु० ॥ ३१ ॥ आ० ॥ तेइन्द्री जूं लीख मांकण आदि । चोइन्द्री माखी आदि कहीजे ॥ पचेंद्री जलचरादिक हणियातो । मिच्छामि

दुक्कड' दीजैरा ॥ मु० ॥ ३२ ॥ आ० ॥ सलूकिं
अभंज प्रमुख सहु हणिया । सहल गिणी तथा जाणी ॥
प्रमाद वशे तथा शरीरादि कारण । तो मिच्छामि
दुक्कड' पिछाणीरा ॥ मु० ॥ ३३ ॥ आ० ॥ क्रोध
लोभ भय हास परवश पणे । मूर्खं पणे मृषावादो ॥
शङ्काकारी भाषा निश्चे कही हुवे । तो मिच्छामि
दुक्कड' समाधोरा ॥ मु० ॥ ३४ ॥ आ० ॥ देव १
गुरु २ साधर्मीनी ३ चोरी । राज ४ गाथापति ५
अदत्तो ॥ आज्ञा लोपी कोई कारज कीधो । तो मि-
च्छामि दुक्कड' सुदत्तोरा ॥ मु० ॥ ३५ ॥ आ० ॥
आज्ञा विना आहार पाणी वस्त्रादिक । लियो दियो
हुवे कोई ॥ आचार्य नी आज्ञा विराधी । तो मि-
च्छामि दुक्कड' होइरा ॥ मु० ॥ ३६ ॥ आ० ॥
आचार्यनी आज्ञा विना दीक्षा दीधी हुवे । विन
आज्ञा दीक्षा नो उपदेशो । त्रिविध २ तिण दोष नें
निंदूं ॥ मिच्छामि दुक्कड' विशेषोरा ॥ मु० ॥ ३७ ॥
आ० ॥ देव मनुष्य तिर्यंच ना मैथुन । काम स्नेह
दृष्टि रागे ॥ मन वचन काया कर सेव्या तो । मिच्छामि
दुक्कड' सागेरा ॥ मु० ॥ ३८ ॥ आ० ॥ आल जञ्जाल
सुपन स्त्रियादिक ना । हस्त कर्मादिक कीधा ॥ हांस
रामत ख्याल सर्व लहरनो । मिच्छामि दुक्कड' दीधा

रा ॥ मु० ॥ ३६ ॥ आ० ॥ सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्यनी मूर्छा । वस्त्र पात्र आहार पाणी ॥ साध गृहस्थ ऊपर ममत भावनो । मिच्छामि दुक्कडं पिछाणी रा ॥ मु० ॥ ४० ॥ आ० ॥ मर्यादा उपरंत वस्त्रादिक राख्या । तथा शरीर ऊपर मूर्छा आणी ॥ शोभा विभूषा नी लहर आई हुवे तो । मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मु० ॥ ४१ ॥ आ० ॥ रात्री भोजन लागो हुवे कोई । दिन उगां पहिलो वस्त लीधी ॥ पाणी औषध आदि मोड़ो चूकायो तो ॥ मिच्छामि दुक्कडं प्रसिद्धिरा ॥ मु० ॥ ४२ ॥ आ० ॥ दुजा दिन रे अर्थं औषदादिक । अधिक जाच्यो हुवे जाणी ॥ ते और घरे मेहलो नें भोगवियो तो । मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मु० ॥ ४३ ॥ आ० ॥ इत्यादिक चारित्र विषे । अतिचार निंदुं आत्म शाखे ॥ गीर्हा करुं देव गुरुनी शाखसूं । त्रिविध २ कर दाखेरा ॥ मु० ॥ ४४ ॥ आ० ॥ तप आचार ते बारे प्रकारे । अभिग्रह त्याग अनेको ॥ ते तप विषे अतिचार लाग्यो हुवे । तो मिच्छामि दुक्कडं विशेषोरा ॥ मु० ॥४५॥ आ० ॥ मोक्ष साधक व्रत पालण विधसे । बल वीर्य गोपवियो ॥ वीर्य आचार विराधना कीधी । तो मिच्छामि दुक्कडं उच्चरियोरा ॥ मु० ॥ ४६ ॥ आ० ॥

सलो याद करी २ करै आलोयण । नाना मोटा अति-चारो ॥ पाप पंक पखालीनें निशल्य हुवै । मुक्ति लाछमी इष्टी धारोरा ॥ मु० ॥ ४७ ॥ आ० ॥ पञ्च सु-मति तीन गुप्ति विशेषे । पञ्च महाव्रत माह्यो ॥ अतिचार लागो हुवै कोई । तो मिच्छामि दुक्कडं लाह्योरा ॥ मु० ॥ ४८ ॥ आ० ॥ गणपतिनै वा संत सत्यांरा । अथवा गणना कोई ॥ अवर्णवाद बोल्या हुवै तो । मिच्छामि दुक्कडं जोईरा ॥ मु० ॥ ४९ ॥ आ० ॥ स्वार्थ अणपूगां गणपतिसूं । आण्या कलुष परिणामो ॥ ऊतरतो जो बचन कह्यो हुवै तो । मि-च्छामि दुक्कडं तामोरा ॥ मु० ॥ ५० ॥ आ० ॥ सम-कितनें चारित्र ना दाता । गणपति महा उपगारी ॥ अणगमतो ज्यो त्यांसुं प्रवर्त्यो । तो मिच्छामि दुक्कडं विचारीरा ॥ मु० ॥ ५१ ॥ आ० ॥ भिक्षुगण श्री जिन शासण म्हें । आसतालास उतारी ॥ शंका कंखा घालो औररैतो । मिच्छामि दुक्कडं विचारीरा ॥ मु० ॥ ५२ ॥ आ० ॥ पाप अठारे जाण अजाणे । सेव्या से वाया होई ॥ सेवतानें अनुमोद्या हुवै तो । मिच्छामि दुक्कडं जोईरा ॥ मु० ॥ ५३ ॥ आ० ॥ अतिचार मूल उत्तर गुणसें । लाग्यो ते संभारी संभारी ॥ माया रहित आलोई लिये दण्ड । कपट प्रपञ्च निवारीरा ॥ मु० ॥

५४ ॥ आ० ॥ भोला बालक जेम आलोवे । आचार्या-दिक पासो ॥ न्हाय धोयनें निमल हुवै जिम । आतम उज्जल जासोरा ॥ मु० ॥ ५५ ॥ आ० ॥ इह विधि आलोवण करै मुनि । ते उत्तम जीव सधीरा ॥ परभव री अति चिंता जेहनें । कर्म काटण वड वीरा रा ॥ मु० ॥ ५६ ॥ आ० ॥ असाता वेदनीनुं अति भय जसु । नरक निगोद थी डरिया ॥ आतमीक सुखनी अति वाञ्छा । ते आलोवण करी तिरियारा ॥मु०॥५७॥ आ० ॥ विनां आलोई मूआं विराधक । आभिउग सुर होई ॥ सूत्रे आख्यो तेह संभारी । करै आलोवण सोइरा ॥ मु० ॥ ५८ ॥ आ० ॥ आलोवण करी मूआं आराधक । अनाभोगिक सुर होइ ॥ ए पिण सूत्रनो वचन संभारी । करै आलोवण सोइरा ॥ मु० ॥ ५९ ॥ आ० ॥ आलोयां विण उत्कृष्ट भांगे । काल अनंत रुलीजे ॥ नरक निगोदमे भोका खावे । इम जाण आलोवण लीजैरा ॥ मु० ॥ ६० ॥ आ० ॥ जातिवन्त कुलवन्त आलोवे । कह्यो ठाणांग मझारो ॥ ए पिण सूत्रनो वचन संभारी । करै आलोवण सारोरा ॥ मु० ॥ ६१ ॥ आ० ॥ छोटा मोटा दोष आलोवे । पिण लाज शरम नहीं ल्यावै ॥ उत्तम जीव कहीजे तेहनें । इम जिनेंद्र सरावैरा ॥ मु० ॥ ६२ ॥ आ० ॥ दश ठाणांमे

प्रथम द्वार ए। आलावणानो आख्यो ॥ शुद्ध मनसुं आलोवै तेहनो। सुजश सिद्धांते दाख्योरा ॥ मु० ॥ ६३ ॥ आ० ॥

॥ इति प्रथम द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम द्वार आख्यो प्रवर, आलोयण अधिकार।
व्रत उच्चरवानो हिवै, दाखूं दूजो द्वार ॥ १ ॥

॥ ढाल २ ॥

(माथो धोई माल सुमारै। दरपणमें मुख देखैजोरे ॥ एदेशी)

पूर्वे गणि आज्ञा थी धास्या। पंच महाव्रत जाणी जीरे ॥ हिवड़ां पिण सिद्ध अरिहंत गणिनी। शाख करी पड़िक्काणीरे ॥ सैणां थइयैजीरे ॥ १ ॥ सर्व प्राणातिपाप प्रति पच्खूं। त्रस थावरना प्राणीजीरे ॥ मन वचन काय करी हणावाना। जाव जीव पचखाणीरे ॥ सै० ॥ २ ॥ इमज हणावा तणां त्याग मुझ। वलि हणतो हुवे कोईजीरे ॥ ते अनुमोदण तणा त्याग वलि। जाव जीव अवलोईरे ॥ सै० ॥ ३ ॥ मृषावाद

सर्वथा पचखूं । क्रोधादिक दिल आणोजीरे ॥ मन वच काय करी मृषा वच । बोलणरा पचखाणोरे ॥ सै० ॥ ४ ॥ इमज बोलावण तणा त्याग मुझ । अणुमोदण ना एमोजीरे ॥ त्रिविध २ वच अलिक तणा इम । जाव जीव लग नेमोरे ॥ सै० ॥ ५ ॥ सर्व अदत्ता दानज पचखूं । अदत्त लेअणरा त्यागोजीरे ॥ अदत्त लिवावण तणा त्याग फुन । द्वितीय करण एमागोरे ॥ सै० ॥६॥ अदत्त लिये तसु अणुमोदणरा । छै मुझ त्याग सुजाणोजीरे ॥ मन वच काया तिविधि जोग करी । जाव जीव पचखाणोरे ॥ सै० ॥ ७ ॥ फुन सहु मिथुन प्रति हूं पचखूं । सुर नर तिरि त्रिय फंदोजीरे ॥ मिथुन सेवणरा त्याग अछै मुझ । ए धुर करण प्रबंधोरे ॥ सै० ॥ ८ ॥ मिथुन सेवावण तणा त्याग फुन । अणुमोदणनां आमोजीरे ॥ मन वच तनु करी जाव जीव लग । त्याग अछै मुझ तामोरे ॥ सै० ॥ ९ ॥ सर्व परिग्रह प्रति फुन पचखूं । प्रथम करण पहिछाणोजीरे ॥ ममत्व भाव करी परिग्रह प्रतिज । ग्रहिवारा पचखाणोरे ॥ सै० ॥ १० ॥ परिग्रह ग्रहण करावणरा फुन । छै मुझ त्याग सदीवोजीरे ॥ अणुमोदण ना त्याग इमज विहूं । जोग करी जाव जीवोरे ॥ सै० ॥ ११ ॥ फुन रात्रि भोजन प्रति पचखूं । निशि भोजन

णा नेमोजीरे ॥ तीन करण नें तीन जोग करी । जाव जीव लग एमोरे ॥ सै० ॥ १२ ॥ पंच महाव्रत फुन व्रत छठो । अंत्य समय अणगारोजीरे ॥ इह विधि उच्चरै सम भावे करि । आणी हर्ष अपारोरे ॥ सै० ॥ ॥ १३ ॥

॥ इति द्वितीय द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

इम व्रत उच्चरिवा तणो, आख्यो दूजो द्वार ।
तृतीय द्वार कहियै हिवै, खमायवूं तज खार ॥ १ ॥

॥ ढाल ३ ॥

(सीता आवैरे धर राग पदेशी)

सप्त लक्ष जे जाति पृथ्वीनी । सप्त लक्ष अपकाय ॥ इत्यादिक चउरासी लक्ष जे । जीवा योनि खमाय ॥ ॥ १ ॥ सुगुणां खमावियै तज खार ॥ एआं० ॥ गण में संत सती गुणवंतां । सगलां भणी खमाय ॥ निज आतम प्रति नरम करीनें । मच्छर भाव मिटाय ॥सु०॥ ॥ २ ॥ किणहिक संत सती सुं आया । कलुष भाव जो ताम ॥ कठण बचन तसु कह्या हुवे तो । खामै

लेलि नाम ॥ सु० ॥ ३ ॥ इमहिज श्रावक अनें श्राविका। सगलां भणी खमाय ॥ कलुष भाव करि कटु वच आख्या। तो नाम लेइनें ताहि ॥ सु० ॥ ४ ॥ द्रव्यलिंगी वा अन्य दर्शणी। खामें सरल पणेह ॥ क्रोधादिक करी कटु वच भाख्याती। नाम लेई पभणेह ॥ सु० ॥ ५ ॥ वडा संतनी करी आशातन। तिहुं जोगे करी ताम ॥ सर्व खमावे उजल भावे। लेई जुजूआ नाम ॥ सु० ॥ ६ ॥ चिहुं तीर्थ अथवा अन्य जन प्रति। राग द्वेष दिल आण ॥ वचन कह्या हुवे तास खमावुं। इम कहे मुनि सुजाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ रेकारा तुंकारा किणनें। राग द्वेष वश दीध ॥ तेहथी खमत खामणा म्हारा। एम वदे सुप्रसिद्ध ॥ सु० ॥ ८ ॥ कठिण शीख दीधी हुवे किणनें। लहर वैर मन आण ॥ खमत खामणा म्हारा तेहथी। वदे नरम इम वाण ॥ सु० ॥ ९ ॥ महा उपकारी गणपति भारी। सम्यक्त चरण दातार ॥ वारम्वार खमावे त्यांनें। अविनय कियो किवार ॥ सु ॥ १० ॥ स्वामी अणपुगां गणपतिनां। बोल्या अवर्णवाद ॥ ते पिण वारम्वार खमावे। मेटी मन असमाध ॥ सु० ॥ ११ ॥ विनयवन्त गणपतिना त्यांथी। धरया कलुष परिणाम ॥ वारम्वार खमावे तेहनें।

लेइ जूजूआ नाम ॥ सु० ॥ १२ ॥ च्यार तीर्थ अथवा अन्य जन थी । मेटी मच्छर भाव ॥ इह विधि खमत खामणा करतो । ते मुनि तरणी न्याव ॥ सु० ॥ १३ ॥ परम नरम इम आतम करणी । धरवी समता सार ॥ ए विधि बाकु रीत बताई । तीजा द्वार मझार ॥ सु० ॥ १४ ॥

॥ इति तृतीय द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

खमत खामणानो कह्यो, तीजो द्वार उदार ।
हिव अष्टादश अघ प्रते, वोसिरावे अणगार ॥ १ ॥

॥ ढाल ४ ॥

(नीकी सीख डलिरे लहिये एदेशी)

प्राणाति पात प्रथम अघ आख्यो । दूजो मृषावाद ॥ अदत्ता दान तीजो अघ कहिये । चोथो मिथुन विषाद ॥ सुगुणा पाप पंक परहरिये । पाप पंक परहरिये दिलसु ॥ बोसिरावे अघ भार । इहविधि निज आतम निस्तार ॥ सु० ॥ १ ॥ पञ्चम पाप परिग्रह मता । क्रोध माया लोभ ॥ दशमो रागए कादशमो कुन । द्वेष करै चित छोभ ॥ सु० ॥ २ ॥ बारमो

कलह अभ्याख्यां न तेरम । ते पर शिर आल विषाद ॥ चवदमो पिशुन तिको खाय चुगली । पनरमो पर परिवाद७॥ सु० ॥ ३ ॥ जेह असंयम मे रति पामें । अरति संयम रे मांय ॥ रति अरति ए पाप सोलमो । दाख्यो श्रीजिनराय ॥ सु० ॥ ४ ॥ सतरमो कपट सहित झूठ बोले । माया मोसो तेह ॥ मिथ्या दर्शन शल्य पाप अठारम । तेहथो बंधो अछेह ॥ सु० ॥ ५ ॥ मोक्ष नुं मारग संसर्ग तिहांही । विघ्न भूत कहिवाय । फुन दुर्गति ना कारण छै ॥ ए पाप अठारे ताय ॥सु०॥ ६ ॥ ते अष्टादश पाप प्रते मुनि । वोसिरावे वर खंत ॥ संजम तप कर भावित आतम । सहा रूपी मतिवंत ॥ सु० ॥ ७ ॥ इह विधि पाप प्रते वोसि-रावो । भावे भावन सार ॥ परभव री चिन्ता तसु पूरी । ए कह्यो चउथो द्वार ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ इति ४ द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

अथ वोसिरावा नुं कह्युं, तूर्य द्वार तंत सार ॥
पंचम द्वारे पडिवजे, चारू शरणा च्यार ॥ १ ॥

---

७ देवनूं पराया अवर्णवाद बोले तेने गमनार नूं द्रढिमो वन्तु बोलनारे ने पर परिवाद पाप कह्यो ।

॥ ढाल ५ ॥

(जगवाल्हा २ जिनंद पधारिया परदेशी)

चउतीस अतिशय युक्तहो। अष्ट महा प्रति हार्यं हो ॥ वर शोभा अति शोभा अशोकादिक तणी। समवशरण शोभे रह्या। ते देव जिनेन्द्र सु आर्यं हो ॥ मुझ शरणो मुझ शरणो थावो। अरिहंत नो, सुख करणं भव तरणं शरण भगवंत नो ॥ १ ॥ च्यार कषाय तजी तिणै। चिहुं दिशी मुख दीसंत हो ॥ तसु अतिशय वर अतिशय श्री जिनराजना। चिहुं विधी धर्म कथा कही। करै चिहुं गति दुःखनो अंत हो ॥ मुझ शरणो २ एहवा अरिहंत नो। सुख करणं भव तरणं शरण भगवंतनो ॥ २ ॥ दग्ध बीज जिम तरु तणो। अंकुर प्रगट न होयहो ॥ तिम स्वामी तिम० कर्म बीज दग्धहो। भव अंकुर प्रगट हुवै नहीं। तिणसुं अरुहंत कहिये सोयहो ॥ मुझ शरणो २ थावो अरुहंतनो। शिवकरणं भव तरण शरण भगवंतनो ॥३॥ अंतरंग अरि जीपवे करि। अरिहंत कहिये तासहो ॥ मुझ शरणो मुझ शरण थावो ते अरिहंत नो। पूजा जोग्य त्रिण जगतनें ॥ वाले अर्हंत कहिये विमासहो। मुझ शरणो मुझ शरण थावो ते अर्हंत नो सुख करणं शिव वरण शरण भगवंतनो ॥ ४ ॥ दुर्लंघ्य संसार समु-

द्रतिरी । जिके शिव सुख पाम्या सारहो ॥ अविनासी २ लही गति अच्चरी । सुख आतमीक अति चोपता । रह्या आवागमण निवारहो ॥ मुझ शरणं मुझ शरण थावो ते सिद्धां तणो । सुख शाश्वत सुख० २ सुर थी अनन्त गुणो ॥५॥ निबिड़ कठिन जे कर्महो । भांजी तप मुद्गर करी तामहो ॥ थई आतम थई० २ शीतली भूतहो । लोक ना अग्र विषे रह्या ॥ अबाबाध चेम शिव ठामहो ॥ सुभ० २ ॥ ६ ॥ बंध्या कर्म रूप इंधण प्रते । शुक्ल ध्यान रूप अनलेह हो ॥ दग्ध कीधा २ ते सिद्ध कहो-जियै । मल रहित सुवर्ण सरीयहो ॥ जसु आतम निर्मल अधिकेरहो ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिहां जन्म जरा मरण नहीं । वलि रोग सोग दुःख नाहिं हो ॥ इक समये २ लोकांत जई रह्या । वारु अष्ट गुणे करी सहित हो ॥ जसु प्रणमे श्रीजिनरायहो ॥ सु० ॥ ८ ॥ जे दोष बयालीस रहितहो । जिवे भ्रमर तणी पर आहारहो ॥ मतिवंता ॥ म० २ मुनि महिमा निला । मंडलाना पञ्च दोष परहरी ॥ आहार भोगवे समचित्त सारहो ॥ मुझ शरणो मुझ शरण थावो ते साधु तणुं । भवतरणं भव तरण संतोषनुं सुख घणुं ॥८॥ पंच इन्द्रिय दमण विषे जिके । अति तत्पर छ स्वपिरायहो ॥ नग धोधो २ दुष्ट अश्व मन जिके । जीत्यो कंदर्प ना जे

दर्पनें ॥ सिद्धांत ने वच करी तायहो ॥ मुझ ॥ १० ॥ मेरू समा पंच महाव्रत तणो । भार बहिवा वृषभ समानहो ॥ पंच समिते पंच समित करी समिता सदा । पञ्च आचार सु पालता ॥ पञ्चम गति अनुरक्त पिछाणहो ॥ मु० ॥ ११ ॥ छांड्या सर्व संग स्त्रियादिक तणां । ज्यांरे शत्रु नें मित्र समानहो ॥ तृणमणी सम २ सुख दुःख सम वली । ज्यांरे निंदा प्रशंसा समानहो ॥ सम मान अनें अपमानहो ॥ मु० ॥ १२ ॥ सप्तवीस गुणे करी शोभता । समता दमता निश दीहहो ॥ शुद्ध किरिया २ मुक्ति पन्थ साधता । डरिया नरक निगोद ना दुःख थकी ॥ मुनि लोपै नहीं जिन लीहहो ॥ मु० ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी परूपियो । बारू तेहिज धर्म विचारहो ॥ हितकारी सुखकारी सुगति तेहथी लहै । वलै दुर्गति-पड़ता जीवनें ॥ धार राखे ते धर्म उदारहो ॥ मुझ० मुझ शरण जिनाज्ञा धर्मनो । भवतरणं भवतरण बरण शिव शर्मनो ॥ १४ ॥ वीस भेद संवर तणा । वलै निर्जरा ना भेद बारहो ॥ जिन आणा २ जि० विषै ए सर्वहो । कर्म रुकै कटै तेहथी ॥ आख्यो तेहिज धर्म उदारहो ॥ मु० ॥ १५ ॥ सूत्र धर्म प्रभु आखियो । बलि चारित्र धर्म उदार । ॥ हलुकर्मी २ जीव तसु ओलखे । ए दोनं ही

जिन आज्ञा मझे ॥ तिणसु धर्म कहीजै सारहो ॥मु०॥ १६ ॥ संयमनें तप शोभता। वर संजम थी रुके कर्म हो ॥ तपसेती २ बंध्या अघ निर्जरै। ए दोनूं ई जिन आज्ञा मझे। तिणसुं धर्म कहीजे पर्महो ॥ मु० ॥ १७ ॥

॥ इति पंचम द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

इह विधि पञ्चम द्वारमें, शरण पडिवज्जतो च्यार।
दुकृत नी निन्दा हुवे, छट्ठा द्वार मझार ॥ १ ॥

॥ ढाल ६ ॥

(सुग कारण भवियण पदेशी)

भव मांहि भमते। उंधो श्रद्धा धारी ॥ मिथ्या मत सेव्यो। ते निंदू इह वारी ॥ १ ॥ वले उंधी परूपी। घाली परोरे शंक ॥ सगलां री शाखसुं। ते निंदुं तज वंक ॥ २ ॥ कुतीर्थिक सेवा। अथवा तेहना देव ॥ तसु प्रीत प्रशंसा। ते निंदु स्वयमेव ॥ ३ ॥ गण थी निकलिया। टालो कर गण बार ॥ तसु वंदा पूज्या। ते निंदु इह वार ॥ ४ ॥ पञ्च आस्रव सेव्या। कीधा च्यार कषाय ॥ सहु शाख निंदु। दुर्गति

हेतु ताय ॥ ५ ॥ वीतराग नो मारग । मैं ढांक्यो त्रिह वार ॥ प्रगट कियो कुमारग । ते निंदुं धर प्यार ॥ ६ ॥ यंत्र घरटी ऊंखल । मूसल घाणी आदि ॥ कीधा में कराव्या । ते निंदुं तज व्याधि ॥ ७ ॥ वलि कुटम्ब पोष्या । दियो कुपात्रे दान ॥ सहु शाखि निंदुं । पाप हेतु पहिछान ॥ ८ ॥ इत्यादिक दुक्रत । त्रिहुं जोगे करि कीध ॥ तेहनी करे निंदा । ए छट्ठो द्वार प्रसिद्ध ॥ ९ ॥

॥ इति छट्ठा द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

दुक्रत नी निंदा कही, छट्ठा द्वार मझार ।
हिवे सुक्रत अनुमोदना, दाखूं सप्तम द्वार ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ ॥

(प्रभवो मन चिंतवै, सीता सति सुत जनमिया एदेशी)

ज्ञान दर्शण चारित तप भला । भव दधि मांही जिहाज ॥ सम्यक् प्रकारे सेविया । ते अनुमोदुं आज ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध ने आयरिया । उवज्झाया अणगार ॥ तसु नमस्कार वंदना करी । ते अनुमोदुं सार ॥ २ ॥ सामायिकादिक जे भला । छउं आवश्यक

मार ॥ उद्यम तेह विषे कियो । अनुमोदुं इहवार ॥ ३ ॥ सूत्र सझाय कीधो वली । ध्यायो वारू ध्यान ॥ जती धर्म ७ दश विध धर्यं । ते अनुमोदुं जान ॥४॥ पंच समित तीन गुप्ति हो । महाव्रत वलि पञ्च ॥ रूड़ो रीत आराधिया । ते अनुमोदुं सुसंच ॥ ५ ॥ वलि वैयावच ७ दश विधि करी । साधु श्रावक नो धर्म ॥ अदरायो उपदेश दे । ते अनुमोदुं पर्म ॥ ६ ॥ दान शील तप भावना । कहि सेव्या धर चित्त ॥ दृढ़ समकित धरी आसता । अनुमोदुं पवित्त ॥ ७ ॥ शासण एक दिढावियो । गणपति ना गुण गाम ॥ अविक अरप धर उचर्या । ते अनुमोदुं ताम ॥ ८ ॥ कृत्यादिक सुकृत तणी । अनुमोदन सुविचार ॥ मान अहंकार तजी करैं सप्तम द्वार मझार ॥ ९ ॥

॥ इति सप्तम द्वारम् ॥

॥ ढाल ८ मी ॥

(साहजी कठै पोढे किण जागां सोवेरे परदेशी)

पुन्य पाप पूर्व कृत । सुख दुःख ना कारणरे ॥ पिण अन्य जन नहीं । इम करै विचारणरे ॥ भावे भावना ॥ १ ॥ पूरव कृत अघ जे । भोगवियां मुकाइरे ॥ पिण वेद्यां विनां । नहीं छुटको थाइरे ॥ भा० ॥ २ ॥ जे नरक विषे म्हैं । दुःख सह्यो अनंतोरे ॥ तो ए मनुष्य नो । किंचित दुःख हुंतोरे ॥ भा० ॥ ३ ॥ जे समकित विण म्हैं । चारित्र नी किरियारे ॥ बार अनंत करी । पिण काजन सरिया रे ॥ भा० ॥ ४ ॥ हिव समकित चारित्र । दोनुं गुण पायोरे ॥ वेदन सम पणै । सह्यां लाभ सवायोरे ॥ भा० ॥ ५ ॥ अोलो अल्प कालमे । तूटे अघ जालोरे ॥ भगवती सूत्रमें । कह्यु परम कृपालोरे ॥ भा० ॥ ६ ॥ सूको त्रिण पूलो । जिम अग्नि विषे होरे ॥ शीघ्र भस्म हुवे । तिम कर्म दहेहोरे ॥ भा० ॥ ७ ॥ जिम तप्त तवे जल । बिंदु विललावैरे ॥ तिम दुःख समचित्ते सह्या । अघ क्षय थावैरे ॥ भा० ॥ ८ ॥ दुःख अल्प कालमें । मुनि गजसुकमालोरे ॥ सम भावे करी । लही शिव पद्द शालोरे ॥ भा० ॥९॥ अति तीव्र वेदना । बहु वर्ष विचारोरे ॥ सही शिव

संचस्या। चक्री सनतकुमारोरे ॥ भा० ॥ १० ॥ जिन कल्पिक साधु। लिये कष्ट उदीरोरे ॥ तो आव्यां उदय। किम थाय अधीरोरे ॥ भा० ॥ ११ ॥ सह्यो चरम जिनेश्वर। बेदन असरालोरे ॥ सम भावे करी। तोड़्या अघ जालोरे ॥ भा० ॥ १२ ॥ कष्ट अल्प कालरो। पछे सुर पद ठामोरे ॥ काल असंख्य लगी। दुःख रो नहीं कामोरे ॥ भा० ॥ १३ ॥ सह्या बार अनंती। दुःख नर्क निगोदोरे ॥ तो ए बेदना। सहुँ आण प्रमोदोरे ॥ १४ ॥ रह्यो गर्भावासे। सवा नव मासोरे ॥ तो या बेदनां। सहुं आण हुलासोरे ॥ भा० ॥ १५ ॥ अति रोग पीडाणां। जग दुःख बहु पावे रे ॥ ते संभरी सहे बेदन सम भावेरे ॥ भा० ॥ १६ ॥ शूली फांसी फुन। भालांसुं भेदेरे ॥ बहु जन जग विषे। अति बेदन बेदेरे ॥ भा० ॥ १७ ॥ ते तो जीव अज्ञानी। हुं तो ज्ञान सहितोरे ॥ सम भावे सहुं। बेदन धर प्रीतोरे ॥ भा० ॥ १८ ॥ ए तो सुख नो हेतु। सहियां सम भावेरे ॥ बहु अघ निर्जरे। पुन्य थाट बंधावेरे ॥ भा० ॥१९॥ बहु कर्म निर्जर्यां। थोड़ा भव माह्योरे ॥ शिव पद संचरे। आवागमन मिटायोरे ॥ भा० ॥ २० ॥ सुर सुखनी वांछा। मन मे नही कीजेरे ॥ सुख सुरलोक नां। दुःख हेतु

कहीजैरे ॥ भा० ॥ २१ ॥ सुख आतमीक नी। वांछा मन करतोरे ॥ इह विधि वेदनां। सहै समचित धरतोरे ॥ भा० ॥ २२ ॥ पुद्गल सुख पामला। तिण मे गृद्ध थावैरे ॥ तो अघ संचो हुवे। अधिको दुःख पावैरे ॥ भा० ॥ २३ ॥ नर इन्द्र सुरिन्द्र ना। काम भोग कंटालारे ॥ तसु वांछा कियां। दुःख परम पयालारे ॥ भा० ॥ २४ ॥ तिणसुं मुनि वेदन सहै। शिवसुख कामीरे ॥ धर्म शुकल भलो। ध्यावे चित्त धामीरे ॥ भा० २५ ॥ बहु कर्म निर्जरा। तिण ऊपर दृष्टीरे ॥ राखै महामुनि। समता अति श्रेष्टीरे ॥ भा० २६ ॥ स्वजनादिक ऊपर। छांडे स्नेह पाशारे ॥ अति निर्मल चित्तै। शिवपुर नी आशारे ॥ भा० २७॥ संग स्त्रियादिक ना। जाणे भुयंग समाणारे ॥ समभावे रहै। मुनिवर महा स्याणारे ॥ भा० ॥ २८ ॥ क्रोधादिक टाली। सम भावन सारीरे ॥ दृढ़ चित्त करि धरै। ए अष्टम द्वारीरे ॥ भा० ॥ ॥ २९ ॥

॥ इति अष्टम द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

अष्टम द्वारे भावना, आखी अधिक उदार।
नवमा द्वार विषे हिवे, अणसण नो अधिकार ॥ १ ॥

* ढाल ६ *

(वैरागे मन वालियो हिवराणी पद्मावती परेशी)

अनंत मेरु मिश्री भखी। पिण तृप्ति न हुवो लिगार। इम जाणी मुनि आदरै। अणसण अधिक उदार॥ इह विधि अणसण आदरै ॥ १ ॥ ते अणसण द्वि विधि जिन कह्यो। पंचम अंगे पिछाण॥ पाउवगमन ते प्रथमही। दूजो भत्त पचखाण ॥ २ इ० ॥ प्रथम नमोत्थु णं गुणें। सिद्ध भणी सुखकार॥ द्वितीय नमोत्थु णं वली। अरिहंत नें धर प्यार॥ धन्य २ धन्य महा मुनि ॥ ३ ॥ धर्माचार्य नें करै। निर्मल चित्त नमस्कार॥ त्याग करै तिहुं आहार ना। जाव जीव लगै सार ॥ ध० ॥ ४ ॥ अवसर देखी नें करै। उदक तणो परिहार॥ तृषा परीसहै जपनां। अडिग रहै अणगार ॥ ध० ॥ ५ ॥ धन्नो काकंदी तणो। पाउवगमन पिछाण॥ मास संथारै सुर थयो। सर्वार्थ सिद्ध महा विमाण ॥ ध० ॥ ६ ॥ पाउवगमन

खंधक कियो। मास संथारे सार ॥ अच्युत कल्पे उपनो। चव लेसी भव पार ॥ ध० ॥ ७ ॥ इमहिज मेघ मुनि भणी। आयो मास संथार ॥ विजय विमाणे ऊपनो। मनु.थई शिव सुखसार ॥ ध० ॥ ८ ॥ पांचुं पांडव परवडा। मास पारणो न कीध ॥ पचख्यो पाउ-वगमनही। मास संथारे सिद्ध ॥ ध० ॥ ९ ॥ तीसक मुनिवर नें भलो। मास संथारो म्हाल ॥ सामानिक थयो शक्र नो। अष्ट वर्ष चरण पाल ॥ ध० ॥ १० ॥ कुरुदत्त चरण छमास हो। अठम २ तप जाण ॥ संथारो अर्द्धमास नो। पाम्यो कल्प ईशान ॥ ध० ॥ ११ ॥ मदन संब महिमा निलो। वली अनिरुद्ध कुमार ॥ अधिक हर्ष अणसण करी। पोंहता मोक्ष मझार ॥ ध० ॥ १२ ॥ आठुं अग्रमहेषियां। कृष्ण तणी चरण धार ॥ अति तप करी अणसण ग्रही। पहुंती मोक्ष मझार ॥ ध० ॥ १३ ॥ नंदादिक तेरे वली। नृप श्रेणिक नी नार ॥ चरण ग्रही अणसण करी। पामी शिव सुख सार ॥ ध० ॥ १४ ॥ इत्या-दिक मुनि महा सती। याद करै मन मांय ॥ भूख तृषादिक पीड़िया। दृढ चित्त अधिक सवाय ॥ ध० ॥ १५ ॥ सूर चढे संग्राम में। तिम मुनि अणसण मांय ॥ कर्म रिपु हणवा भणी। सुरवीर अधिकाय ॥

ध० ॥ १६ ॥ जन्म मरण दुःख थी डर्या । शिव सुख बांछा सार ॥ ते अणसण में सैंठा रहै । ए कह्यु नवमु द्वार ॥ ध० ॥ १७ ॥

॥ इति नवम द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

नवम द्वार अणसण कह्यु, छिव कहु दशमो द्वार ।
नमुंक्कार परमेष्टी पंच, जपतां जय जय कार ॥१॥

॥ ढाल १० ॥

(प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी एदेशी)

नाना विधि पाप तणो कामी । जिको मरण तणो अवसर पामी ॥ सुर पणो तेह लहै सार । इम जाण जपो श्री नवकार ॥ १ ॥ जेहनें सखाय पणें जकरी । पामे परभव में सम्पति सखरी ॥ लहै मन वांछित फल सुखकार ॥ इ० ॥ २ ॥ सुलभ रमणी राज्य लहै । बलि सुलभ देव पणो जग है ॥ पिण समकित सहित एह दुलभ सार ॥ इ० ॥ ३ ॥ जे समकित चरण सहित नवकार धरै । तिको भव दधि गोपद जेम तिरे ॥ वांछै शिव सुख जे ए संचकार ॥ इ० ॥

४ ॥ पंच परमेष्टी प्रते समरी । तिको भील तणो भव दूर करी ॥ ओ तो पञ्चम कल्पे अवतार ॥ ढू० ॥ ५ ॥ ते भील नी रत्नवती नारी । पञ्च परमेष्टी तिमज हिये धारी ॥ आमिण पञ्चम कल्पे अवतार ॥ ढू० ॥ ६ ॥ पन्नग पुष्प नी माल थई । नवकार प्रभावे कीर्त्ति लही ॥ सुख श्रीमति उभय भवे सार ॥ ढू० ॥ ७ ॥ अग्नि ठंडी कीधी देवा । कियो कनक सिंघासण ततखेवा ॥ ऊपर अमर कुमर प्रति वैसार ॥ ढू० ॥ ८ ॥ नवकार मंत्र सेठ संभलायो । सुण जाप जप्यो तिण सुखदायो ॥ लह्यो मावल सुर नो अवतार ॥ ढू० ॥ ९ ॥ बाल बछड़ा चरावतो जिह वार । नदी पूर आयां गुण्यो नवकार ॥ थई तत-क्षिण सरिता दोयडार ॥ ढू० ॥ १० ॥ सेठ समुद्र मे डूबंतो । नवकार गुण्यो धर चित शांतो ॥ सुर जिहाज उठाय म्हेलो पार ॥ ढू० ॥ ११ ॥ तो चारित्र सहित जिको नाणी । पञ्च परमेष्टी ओलख जपे जाणी ॥ तो स्युं कहिये तसु फल सार ॥ ढू० ॥ १२ ॥ शुद्ध एकाग्र चित्त तन मन सेती । पार पुगावे निपजाई खेती ॥ ध्यान सुधारस दिल धार ॥ ढू० ॥ १३ ॥ ओ तो चरण अमोलक कर आयो । पद आराधक जे मुनि पायो ॥ करै सर्व दुखांरो छुट-

कार ॥ इ० ॥ १४ ॥ मरणांत आराधना इह रीतं । करै दश विधि तन मन धर प्रीतं ॥ ते संसार समुद्र तिरै पार ॥ इ० ॥ १५ ॥ संवत उगणीसै वर्ष पणतीसं । रची जोड़ श्रावण विद छट्ठ दिवसं ॥ पायो शहर बीदासर सुखसार ॥ इ० ॥ १६ ॥ भिक्षु भारी माल गणि ऋषिरायो । शुद्ध तास प्रसादे सुख पायो ॥ बारु जय जश सम्पति जयकार ॥ इम ॥ ७ ॥

॥ इति आराधनां री १० ढाल सम्पूर्णम् ॥

शुद्धाशुद्ध पत्र.

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
४	३	मुरख	मुरख
१०	१	लब्धिध	लब्धि
१२	१	माहाभाग्य	महाभाग्य
१६	१२	द्रव्यध	द्रव्य
२०	१५	प्रात	प्रति
२७	१०	नववाड़	नवबाड़
३०	५	पंनरा	पन्दराह
३०	६	कार्सं	कार्मं
३१	१	छ	छै
३१	१२	पीहर	पीयर
३२	८	चोरेन्द्री	चौइन्द्री
४०	१	दशण	दर्शण
४१	१२	पुदलग	पुद्गल
५२	१	छ	छै
५६	१२	बदोनुंहर	बाहर दोनुं
५७	१	निवंद्य	निर्वंद्य
६०	१८	नजमें	नवमें
६१	४	छवम	छवमें

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
६२	१८	का	की
६३	६	ह्र:स्व	ह्रस्व
६४	१	अधम	अधर्म
७४	२	छट्ठी	छट्ठो
७४	६	चोदा	चौदा
७४	७	चोदभूं	चौदभूं
७६	८	पर्याव	पर्याय
७७	१३	कितना	कितनी
७७	१४	कितनी	कितना
८०	६	थट	घट
८३	१६	बोल्या	बोल्या
८४	१	बोल	बोले
८४	१५	अमादि	अनादि
८६	१२	बंथ	बंध
८८	२०	कर्मं	कर्म
११२	४	खेतकी	चेत्रयकी
१२०	१६	अवगाहनना	अवगाहना
१२०	१८	अद्धनाराच	अर्द्ध नाराच
१२५	७	मारणांत	मरणांत
१४७	१०	मोक्ष	मोच

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
१४९	१०	कमेनो	कर्मनो
१५०	२१	निजंरा	निर्जरा
१५१	१२	उनय	उदय
१६९	१९	१२५	११५
१७१	२०	देवलाक	देवलोक
१७२	७	गुणां	गुणों
१८०	१८	लागस्स	लोगस्स
१८१	७	दूसरो ना	दूसरो नाम
१८१	११	शंतिं	संतिं
१८२	१०	प्रकाश करी	प्रकाश कारी
१८५	१	उस्सुता	उस्सुलो
१८५	१	कीर्गो	कीलो
१८५	१०	ब्र॥	ब्रत
१८५	१६	धर्मको	धर्मको
१८७	८	बिखि	विषि
१९३	५	मानसा	मनसा
१९८	२१	पच्चखाम	पच्चखामि
२००	२०	पच्चखासा	पच्चखाण
२०२	५	भोलाव	भोलावै
२०६	१९	पाठी	पाटी

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
२३२	१३	ढाम	ठाम
२३४	१०	भाष्या	भाख्यो
२३७	३	लिगाथी	तिगारी
२५७	१७	इद्रादिक	इन्द्रादिक
२५८	२०	लियी	लियो
२६५	६	वाला	बोहला
२७१	३	पंखीनो	पंखीनी
२७१	४	मृषापुत्र	मृघापुच
२७७	१४	तड़फाड़	तड़फड़ै
२८०	२०	जित	चित
२८३	३	द्व षी	द्वेषी
२८३	५	तीर्थं	तीरथ
२८३	१७	आसन्तर	अभिन्तर
२८५	१	कुल	कुण
२८६	१७	त्योरी	त्यांरी
३०१	२६	हिवसें	हिव म्हें
३०३	७	पायारा	पायोरा
३०६	४	धारारा	धारोरा
३१२	१८	मता	समता
३१२	१८	रागए कादशमो	राग एकादशमो